

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182464

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82/552P Accession No. H2844

Author- ~~बोक्सोपय~~

Title ~~चरित्र~~ 1958

This book should be returned on or before the date
last marked below.



हिन्दी शेक्सपियर

पारंपर्य

शेक्सपियर

अनुवादक: डा० रंगेश शर्मा

राजपाल ग्रन्थ मर्म, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६



मू ल्य	:	दो रु प ये
प्रथम संस्करण	:	जु ला ई, १ ९ ५ ८
आ व र ण	:	न रे न्द्र श्री वा स्त व
प्र का श क	:	राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली
मु द्र क	:	हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली



शेक्सपियर

विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेजी भाषा के अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म २६ अप्रैल, १५६४ ई० में स्ट्रैटफोर्ड-आन्-ऐवोन नामक स्थान में हुआ। उसकी बाल्यावस्था के विषय में बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता एक किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध भी नहीं किया। १५८२ ई० में शेक्सपियर का विवाह अपने से आठ वर्ष बड़ी ऐनहैथवे से हुआ और सम्भवतः उसका पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक नहीं था। महारानी एलिजाबेथ के शासनकाल में १५८७ ई० में शेक्सपियर लन्दन जाकर नाटक कम्पनियों में काम करने लगा। हमारे जायसी, सूर और तुलसी का प्रायः समकालीन यह कवि यहीं आकर यशस्वी हुआ और उसने अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनों कमाये। १६१२ ई० में उसने लिखना छोड़ दिया और अपने जन्मस्थान को लौट गया और शेष जीवन उसने समृद्धि तथा सम्मान से बिताया। १६१६ ई० में उसका स्वर्गवास हुआ।

इस महान् नाटककार ने जीवन के इतने पहलुओं को इतनी गहराई से चित्रित किया है कि वह विश्व-साहित्य में अपना सानी सहज ही नहीं पाता। मारलो तथा बेन जानसन जैसे उसके समकालीन कवि उसका उपहास करते रहे, किन्तु वे तो लुप्तप्रायः हो गये, और यह कविकुल-दिवाकर आज भी देदीप्यमान है।

शेक्सपियर ने लगभग ३६ नाटक लिखे हैं, कविताएं अलग।

उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक हैं—जूलियस सीज़र, आँथेलो, मैकबैथ, हैमलेट, लियर, रोमियो जूलियट (दुःखान्त), ग्रीष्म-मध्यरात्रि का स्वप्न, वेंनिस का सौदागर, बारहवीं रात, तिल का ताड़ (मच एंड् अवाउट नर्थिंग), शीतकाल की कथा, तूफ़ान (सुखान्त)। इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक हैं तथा प्रहसन भी हैं। प्रायः उसके सभी नाटक प्रसिद्ध हैं।

शेक्सपियर ने मानव-जीवन की शाश्वत भावनाओं को बड़े ही कुशल कलाकार की भाँति चित्रित किया है। उसके पात्र आज भी जीवित दिखाई देते हैं। जिस भाषा में शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद नहीं है वह भाषाओं में कभी नहीं गिनी जा सकती।

भूमिका

‘परिवर्तन’ शेक्सपियर का एक प्रारंभकालीन नाटक है। कुछ आलोचकों का मत है कि ऐसा एक नाटक पहले से था, और कुछ का मत है कि शेक्सपियर ने ही पहले इसे छोटा लिखा था। दोनों हालतों में बाद में शेक्सपियर ने ही इसे बड़ा किया, यद्यपि इस विषय में अभी कुछ निश्चय से नहीं कहा जा सकता। अभी तक के प्रमाणों से यही लगता है कि उसने इसे १५६४ से पहले ही लिखा होगा। पुरानी पुस्तक में आपकी पुस्तक से न केवल पात्रों के नामों का परिवर्तन मिलता है, अपितु घटनाओं का भी उसमें भेद प्राप्त होता है। फिर समानता भी मिलती है। सोलहवीं और सत्रहवीं शती के कई ग्रंथों में शराबी ठठेरा आता है, जिसे इसी तरह बेवकूफ बनाया जाता है। आज के दृष्टिकोण से यह बहुत कठोर हृदयहीनता दिखाई देती है कि एक भिखारी से इस तरह का मजाक किया जाये, लेकिन उन दिनों इसको बड़ी फैशन की चीज माना जाता था। भिखारी को पहले बहुत वैभव में रखकर सो जाने पर फिर बाहर छोड़ आया जाता था और तब उसके आश्चर्य को देखकर धनी लोग हँसा करते थे। शेक्सपियर की अंतरात्मा संभवतः इसे स्वीकार नहीं करती थी, इसलिये फैशन के नाते, उसने प्रारम्भिक भाग तो स्वीकार कर लिया, परंतु आगे भिखारी का मजाक उड़ाया जाना उसकी पुस्तक में नहीं मिलता। इसलिये देखा जाये तो भिखारी की कथा व्यर्थ आती है। उसका आगे कोई संबंध ही नहीं दिखाई

देता । इसीलिये मेरा विचार है कि शेक्सपियर को संभवतः यह मजाक ज्यादा पसंद नहीं था ।

यहाँ कथा में से कथा का सृजन होता है और उस कथा में भी उसके पुराने तरीके से अंतर्कथाएं हैं । विधवा की कथा का वर्णन भी ऐसा ही वर्णन है । विधवा केवल एक तुलनात्मक रूप प्रस्तुत करती है जब कर्कशा की परीक्षा होती है, परंतु वैसे उसकी कोई विशेषता नहीं है ।

यद्यपि यह नाटक बहुत श्रेष्ठ नहीं है, मगर इसमें यह विशेषता है कि शेक्सपियर ने इसमें पैट्रूशियो का पात्र खड़ा किया है, और यह बड़ा ही मजेदार पात्र है । वह खूब हँसाता है पाठक को, और कर्कशा की परेशानी भी देखने लायक बनती है । इस एक विशेषता के कारण ही यह नाटक टिक सका है, क्योंकि बहुदर्शी नाटककार का एक और रूप हमें यहाँ दिखाई देता है ।

प्रारम्भिक नाटकों में जो शेक्सपियर में दोष है कि वह भाषा-चातुर्य को बहुत प्रयोग में लाता है, सो इसमें भी है । दो अर्थ के शब्द देकर नाट्यगृह में जनता को हँसाना ही ऐसे चातुर्य का उद्देश्य था । अनुवाद में यह चातुर्य निस्संदेह दुखदायी रहा है, फिर भी हमने जहाँ तक हो सका है, उसे निवाहने की चेष्टा की है ।

इस नाटक को भी शेक्सपियर ने व्यर्थ नहीं लिखा । उसके सामने एक उद्देश्य अवश्य था । नाटक के अंत में कर्कशा जब स्त्री-पुरुष के संबंधों के बारे में बोलती है, तब शेक्सपियर स्वयं बोलता हुआ लगता है । शेक्सपियर का यह दृष्टिकोण हिंदुओं का-सा था । पातिव्रत, पतिसेवा पर उसने बहुत जोर दिया है,

और आधुनिक स्त्रियाँ अवश्य इसे मध्यकालीन विचारधारा कहेंगी। इस पर ध्यान नहीं देंगी। परंतु शेक्सपियर का युग आज का नहीं था, पुराना समय था। फिर भी शेक्सपियर ने अपनी ओर से नहीं कहा, पात्री द्वारा कहलाया है, यह पात्री विशेष पहले बहुत कर्कशा थी, फिर परेशान होगई, और ठीक होगई तो उसने अपने विचार प्रकट किये और बदली हुई परिस्थिति में उसका इस प्रकार बोलना भी आश्चर्यजनक नहीं लगता।

बाकी पात्रों में कोई खास बात नहीं मिलती, न कवि ने इस नाटक में कोई विशेषता ला सकने में सफलता ही पाई है। लेटिन आदि का प्रयोग भी भाषा के चमत्कार के अन्तर्गत ही रखा जा सकता है। विद्वान् का मखौल खूब उड़ाया गया है। शेक्सपियर ने धनी वर्ग का चित्रण करते हुए यद्यपि मानवीय मूल्यों की ही ओर ध्यान दिया, किंतु यथार्थ के चित्रण में वह बहुत निष्पक्ष रहा है, जैसे कि हर महान् कलाकार में हमें दिखाई देता है। कार्ल मार्क्स ने यही उसकी विशेषता स्वीकार की थी। यह तो गलत है, लेकिन यह भी उसका एक पक्ष है, वैसे शेक्सपियर की मूल महानता उसके मानव मन की गहराइयों में उतरने वाली शक्ति है। वह शक्ति इस नाटक में कहीं मुखर तो नहीं हुई है, लेकिन उसका आभास हमें यहाँ भी मिल ही जाता है।

यद्यपि यह नाटक बहुत उच्चकोटि का नहीं है फिर भी इसका एक महत्त्व तो यह भी है कि इसे भी उस महान् कलाकार ने लिखा था, और उसकी परिपक्व रचनाओं को समझने के लिए इसको भी पढ़ना आवश्यक ही है।



पात्र-परिचय

एक लॉर्ड	:
क्रिस्टोफर स्लाइड, एक ठठेरा	}
यजमान-दारा, अनुचर, अभिनेता,	
शिकारो तथा सेवक	
बैण्टिस्टा	: पैडुआ के एक धनी पुरुष
विन्सेशियो	: पीरा के एक वृद्ध पुरुष
ल्यूसेशियो	: बियांका से प्रेम करने वाला विन्मेशियो का पुत्र
पैट्रू शियो	: वेरोना के एक सज्जन जो कैथरिना के प्रेमी है ।
ग्रेमियो	}
हौटेशियो	
ट्रेनियो	}
बाइंडेलो	
ग्रूमियो	}
कटिस	

विद्वत्ता का ढोंग करने वाला एक ढोंगी जो विन्सेशियो का प्रतिरूप धारण करना है।

कैथरिना } बैण्टिस्टा की पुत्रियाँ।
बियांका }

[विधवा, दर्जी, एक बिसाती तथा बैण्टिस्टा और पैट्रू शियो के सेवक]



प्रस्तावना

[भिखारी (क्रिस्टोफर स्लाइ) तथा यजमान-दारा का प्रवेश]

भिखारी : मार डालूंगा मैं तुम्हें, सच कहता हूँ ।

यजमान-दारा : तुझे तो मैं कठघरे में डलवाऊँगी, बदमाश !

भिखारी : बड़ी बदतमीज़ और गुस्ताख औरत हो तुम, स्लाइ बदमाश नहीं होते । इतिहास उठाकर देख लो, हम वही हैं जो विजेता रिचार्ड के साथ यहाँ आये थे । इसलिये वस थोड़ी बात, मरने दो इस दुनिया को, क्या आफ़त है ।

यजमान-दारा : तो फिर क्या तुम उन गिलासों की कीमत नहीं दोगे जिन्हें तुमने तोड़ डाला है ?

भिखारी : नहीं, एक दीनार भी नहीं । चली जाओ एस० ज़िरोनिमी !^१ अपने ठण्डे बिस्तरे पर जाकर गर्म कर लो अपने आपको ।

यजमान-दारा : इसका इलाज मैं जानती हूँ । मुझे नगर-पालक को बुलाकर लाना पड़ेगा ।

[प्रस्थान]

भिखारी : तीसरे, चौथे, पाँचवें किसी भी नगर-पालक को बुला लाओ । मैं कानून के द्वारा उसको जवाब दूँगा । मैं एक इंच भी इधर-उधर नहीं हिलूँगा । आने दो उसे बड़े शौक से ।

१. S. Jeronimy : ऐलिज़ाबेथ-युग के एक नाटककार 'किड' की रचना 'दी स्पेनिश ट्रेजेडी' में Hieronimy, beware; Go by, Go by आता है, उसी का विकृत रूप S. Jeronimy Go by है । इसका प्रयोग केवल हास्य के लिये किया गया है ।

[सो जाता है ।]

[शृंगी बजती है । एक लॉर्ड अपने कुत्तों के साथ शिकार से लौटता है ।]

लॉर्ड : शिकारी ! मेरी आज्ञा है कि मेरे इन कुत्तों की देख-भाल अच्छी तरह किया करो । यह 'मेरी मैन' तो इतना कमजोर है कि मुँह से भाग डालने लगता है और इस गहरे मुँह वाले कुत्ते के साथ 'क्लाउडर' जोड़ा भी । क्या तुमने नहीं देखा कि 'सिल्वर' ने उस भुरमुट के कोने पर किस तरह अति क्षीण सुगन्धि को भी जान लिया था । इस कुत्ते को तो मैं बीस पाउन्ड के बदले भी अपने से अलग नहीं होने दूँगा ।

पहला शिकारी : लेकिन स्वामी ! बैलमैन भी तो उतना ही अच्छा है । वह तो पूरी तरह मिटी हुई सुगन्धि को जानकर ही पुकार उठा था और आज दो बार उसने अति क्षीण सुगन्धि की ओर संकेत किया था । सच मानिये, मैं तो उसे ही अच्छा कुत्ता समझता हूँ ।

लॉर्ड : मूर्ख हो तुम तो । अगर 'ईको' इतना ही तेज होता तो मैं उसको ऐसे एक दर्जन कुत्तों के बराबर मानता लेकिन देखना, उनको अच्छी तरह खाना खिलाओ और सभी की अच्छी देख-भाल करो । कल फिर मैं शिकार खेलने जाऊँगा ।

पहला शिकारी : जो आज्ञा, स्वामी ।

लॉर्ड : यह क्या है यहाँ ? यह मर गया है या नशे में पड़ा है ? देखना, क्या इसकी साँस चल रही है ?

दूसरा शिकारी : जीवित है मेरे स्वामी ! अगर इसमें शराब की गरमी नहीं होती, तो इतनी ठंडी जगह पर यह इस गहरी नींद में नहीं सो सकता था ।

लॉर्ड : डरावना जानवर है, कैसे सूअर की तरह पड़ा हुआ है ! भयानक मृत्यु ! तेरी भी आकृति कितनी बुरी और घृणित

होती है ! शिकारियो ! नशे में पड़े इस आदमी से एक खेल खेलना चाहता हूँ मैं । क्या विचार है तुम्हारा, अगर इसको बिस्तरे पर सुला दिया जाये । अच्छे-अच्छे कपड़ों से इसके शरीर को ढक दिया जाये और इसकी उँगलियों में अँगूठियाँ पहना दी जायें । बिस्तरे की बगल में ही अच्छे स्वादिष्ट भोजन का प्रबन्ध कर दिया जाये और जब वह जागे तो सेवक उसके पास खड़े हों तो क्या यह सब कुछ देखकर यह भिखमंगा अपने आपको भूल नहीं जायेगा ?

पहला शिकारी : सच मानिये स्वामी ! वस यही होगा इसके साथ ।

दूसरा शिकारी : जब वह जागेगा तो उसको सब कुछ बड़ा विचित्र-सा लगेगा ।

लॉर्ड : या तो उसे यह कोई मधुर स्वप्न-सा लगेगा या व्यर्थ कल्पना-मात्र ही दिखाई देगी । अच्छा, तो ले जाओ इसको और ठीक-तरह से इस मजाक को जमाओ । मेरे सबसे सुन्दर कमरे में ले जाओ इसको, धीरे-धीरे सावधानी से ले जाना । उस कमरे को चारों तरफ से सुन्दर वासनामय चित्रों से सजा देना । फिर उसके गन्दे गिर को साफ गरम पानी से धो देना और कमरे की वायु को सुगन्धित करने के लिये सुगन्धित लकड़ी जला देना । जैसे ही वह जागे, उसी समय अत्यंत मधुर संगीत की तरंगें चारों ओर बिखर जानी चाहिएँ और वह कुछ कहना चाहे तो अपना सिर झुकाकर अत्यंत विनीत स्वर में पूछना—श्रीमान् की क्या आज्ञा है ? एक आदमी तो चाँदी के 'वेसिन' को उठाना ; उसमें गुलाबजल होना चाहिये जिसमें फूल भी पड़े हुए हों । दूसरा आदमी लोटा (Jug) और तीसरा अपने हाथ में तौलिया ले ले, फिर उससे कहना—'क्या श्रीमान् अपने हाथ ठंडे करेंगे ?' एक

आदमी बेशकीमती पोशाक लेकर तैयार रहना और उससे पूछना—‘श्रीमान् कौन-सी पोशाक पहनेंगे ।’ एक दूसरा आदमी उसको उसके कुत्तों और घोड़े की याद दिलाये और साथ में कहे—‘श्रीमान् ! आपकी रुग्णावस्था पर आपकी श्रीमती अत्यंत शोकग्रस्त रहती हैं ।’ उसको किसी तरह यह विश्वास दिला देना कि वह अभी तक पागल था और जब वह इस चीज को मान ले तो कहना कि यह तो उसका स्वप्न है । वह तो एक गौरवशाली लॉर्ड है । बस, शिकारियो, इस काम को बड़ी होशियारी से कर डालो । अगर यह काम अच्छी तरह हो गया तो देखना इससे बड़ा मजाक दूसरा नहीं होगा ।

पहला शिकारी : स्वामी ! हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हम ठीक तरह अपना काम करेंगे और अपनी चतुराई से उसको यहाँ तक अपने वश में कर लेंगे कि वह अपने वारे में वही सोचेगा और विश्वास करेगा जो कुछ हम उससे कहेंगे ।

लॉर्ड : तो इसे सावधानी से उठाकर बिस्तरे पर ले चलो और जब इसकी नींद खुले तो हरएक अपने-अपने काम को पूरा करे ।

[स्लाइ को उठाकर लाया जाता है । शहनाई बजती है ।]

देखना, यह शहनाई की कैसी आवाज़ है, लगता है, कोई सम्मानित व्यक्ति जो किसी यात्रा पर जा रहे हैं, यहाँ विश्राम के लिये ठहरेंगे ।

[एक सेवक का प्रवेश]

क्यों ? कौन है यह ?

सेवक : स्वामी ! कुछ अभिनेता आपकी सेवा में उपस्थित हुए हैं ।

[अभिनेताओं का प्रवेश]

लॉर्ड : उनको यहाँ बुलाओ ।

अभिनेताओ ! तुम्हारा स्वागत है ।

अभिनेता : हम श्रीमान् को धन्यवाद देते हैं ।

लॉर्ड : क्या आज रात तुम्हारा मेरे यहाँ ठहरने का विचार है ?

अभिनेता : श्रीमान् हमारी सेवा स्वीकार करें ।

लॉर्ड : अपने पूरे हृदय से । इस अभिनेता की तो अभी तक मुझे याद है, क्योंकि एक बार इसी ने किसान के सबसे बड़े पुत्र का अभिनय किया था । याद है, जब तुमने उस स्त्री के साथ प्रेम किया था ? तुम्हारा नाम मैं भूल गया हूँ लेकिन सच, वह अभिनय तो तुमने अत्यंत स्वाभाविक रूप से किया था, फिर वह था भी तुम्हारे योग्य ।

अभिनेता : शायद, श्रीमान् का तात्पर्य 'सोटो' से है ।

लॉर्ड : हाँ, हाँ, वही तो । बड़ा ही अच्छा अभिनय किया था तुमने । बड़े अच्छे समय पर तुम लोग मेरे पास आये हो । मेरे पास तुम्हारे लिये एक योजना है जिसमें तुम्हारे कौशल से मेरा बड़ा काम बनेगा । एक लॉर्ड आज रात को तुम्हारा खेल देखेंगे लेकिन मुझे तुम्हारे संयम और शिष्टाचार के विषय में संदेह है, क्योंकि उन लॉर्ड ने कभी भी इस तरह के खेल नहीं देखे हैं इसलिये कहीं ऐसा न हो कि उनका विचित्र व्यवहार देखकर तुम हँसने लग जाओ और इस तरह उनको अप्रसन्न कर दो । मैं पहले ही तुम्हें बताये देता हूँ कि अगर तुम थोड़ा भी मुस्करा दिये तो वे एक साथ क्रुद्ध हो जायेंगे ।

अभिनेता : आप किसी तरह की चिन्ता न करिये श्रीमान् ! अगर वे दुनिया के बड़े से बड़े विद्वपक भी होते तो भी हम अपने आपको संयम में रख सकते थे ।

लॉर्ड : सेवक ! जाओ, इनको मद्यगृह में ले जाओ और मैत्रीभाव से

प्रत्येक का स्वागत करो । देखना, हमारे यहाँ इनको किसी प्रकार का अभाव नहीं रहना चाहिये ।

[अभिनेताओं के साथ एक सेवक का प्रस्थान]

सेवक ! तुम मेरे अनुचर वारथोलम्यू के पास जाओ और उससे कहो कि वह एक औरत की-सी वेशभूषा बना ले । यह सब कुछ होने के बाद उसको उस नशेवाज़ के कमरे में ले आना और उसको श्रीमती कहकर उसकी आज्ञा का पालन करना । मेरी ओर से उससे कह देना कि जैसे उच्च परिवार की स्त्रियाँ अपने पतियों के प्रति व्यवहार करती हैं, उसी प्रकार इस नशेवाज़ के प्रति उसे करना चाहिये । यदि यह सारा कार्य उसने अच्छी तरह से सम्पन्न कर दिया तो अवश्य मेरे प्रेम का पात्र बनेगा । उसे अत्यंत नम्र और धीमे स्वर में विनीत भाव से कहना चाहिये—
प्राणनाथ की क्या आज्ञा है जिससे आपकी प्रिया अपना कर्तव्य-पालन करती हुई अपने प्रेम का प्रदर्शन कर सके ? फिर वह उसके सीने से लिपट जाये, उसको उत्तेजित करने के लिये चुम्बन ले और उसके सीने पर अपना सिर रख दे । उससे यह भी कह देना कि वह यह दिखाता हुआ आँसू बहाने लग जाय कि पिछले सात सालों से जो स्वामी एक घृणित और गरीब भिखमंगे की तरह फिरते रहे, उनको पूरी तरह स्वस्थ देखकर उसके हृदय में हर्ष समा नहीं पा रहा है । और अगर उस लड़के को जी चाहे कभी भी आँसू बहाने की स्त्रियोचित देन नहीं है तो फिर इस काम के लिये प्याज़ अच्छा रहेगा जिसको रुमाल में बन्द करके यदि आँख के पास ले जाया गया तो आँख से पानी निकलने लगेगा । जितनी जल्दी हो सके उतनी ही जल्दी इस काम को कर डालो, फिर

अभी मैं तुम्हें और कुछ आदेश दूंगा ।

[सेवक का प्रस्थान]

मैं जानता हूँ, लड़का पूरी तरह स्त्री का अभिनय कर जायेगा । स्वर, वेशभूषा और व्यवहार सभी कुछ वह एक श्रेष्ठ स्त्री जैसा ही बदल लेगा । वह उस नशेबाज़ को प्राणनाथ कहकर पुकारेगा, इसको सुनने की मुझे बड़ी उत्सुकता है । पता नहीं, जब मेरे आदमी इस मूर्ख के प्रति उचित सम्मान दिखाने आयेँगे, तो वे अपनी हँसी को कैसे रोक पायेंगे । मैं अन्दर जाकर उनको आगाह कर देता हूँ । हो सकता है मेरी उपस्थिति के कारण उनकी हँसी कम हो जाये, जो कि बिना इसके काफ़ी बढ़ती ।

[प्रस्थान]

२

[नशेबाज़ का सेवकों के साथ ऊपर प्रवेश । कुछ के हाथ में वस्त्र हैं, कुछ 'बेसिन' तथा लोटा तथा कुछ अन्य सामग्रियाँ लिये हुए हैं । लॉर्ड भी उनके साथ है ।]

भिखारी : भगवान् के लिये थोड़ी शराब दे दो ।

पहला सेवक : क्या श्रीमान् एक प्याला 'सैक' पियेंगे ?

दूसरा सेवक : क्या श्रीमान् इन स्वादिष्ट पदार्थों का सेवन करेंगे ?

तीसरा सेवक : आज श्रीमान् कैसे वस्त्र पहनेंगे ?

भिखारी : मैं तो क्रिस्टोफर स्लाइ हूँ, मुझे श्रीमान् मत कहो । मैंने तो अपने पूरे जीवन भर कभी सैक नहीं पी । अगर तुम किसी प्रकार के स्वादिष्ट पदार्थ देना ही चाहते हो तो बछड़े का गोشت ला दो मुझको और यह मत पूछो कि मैं कैसे वस्त्र पहनूँगा ।

१. Sack : एक प्रकार की ऊँची शराब ।

मेरी पीठ ही कपड़े हैं, टांगें ही मोजे हैं और पैर ही जूते हैं।
यहाँ तक कि कभी-कभी तो पैर दो हैं तो जूता एक ही रह जाता
है और फिर जूते होते भी हैं तो ऐसे जिनमें होकर मेरी उँग-
लियाँ और अँगूठे बाहर निकले रहते हैं।

लॉर्ड : परमात्मा श्रीमान् के पागलपन को दूर करे ! ओह ! खेद है
कि उच्च कुल में पैदा हुए, ऐसे श्रेष्ठ पुरुष जिनके पास समृद्धि
और सम्मान दोनों हैं, ऐसे दूषित प्रभाव में रहें।

भिल्लारी : क्या, क्या तुम मुझे सचमुच पागल करना चाहते हो ? क्या
मैं बर्टनहीथ के वृद्ध स्लाइ का पुत्र क्रिस्टोफर स्लाइ नहीं हूँ जो
जन्म से एक फेरी वाला, अपनी शिक्षा से कार्ड बनाने वाला,
और बाद में एक रीछ पालने वाला, लेकिन अब मेरा
व्यवसाय एक ठठरे का है। विकट की मोटी पत्नी मरियन
हेकिट से पूछ लो कि वह मुझे जानती है या नहीं। अगर वह
कहे कि मैं वह नहीं हूँ जिसके ऊपर उसका शराब के सिलसिले
में चौदह पैसे का कर्जा चढ़ा हुआ है तो फिर पूरे ईसाई जगत् में
मुझसे बढ़कर झूठा धूर्त किसीको मत समझना। मैं पागल नहीं
हूँ। यहाँ—

तीसरा सेवक : ओह ! इसी कारण तो श्रीमती शोकग्रस्त हैं।

दूसरा सेवक : ओह ! इसी कारण तो आपके सभी सेवक चिन्ता के
कारण शिथिल हो गये हैं।

लॉर्ड : इसका परिणाम यह होता है कि आपके साथी और सम्बन्धी
आपका यह विचित्र पागलपन देखकर आपके घर नहीं आते।
ओह श्रीमान् ! कम से कम अपने जन्म और कुल के बारे में तो
विचार करिये। पागलपन के इन दूषित विचारों को हटाकर

अपने आपको स्वाभाविक स्थिति में लाइये और खोये हुए अपने पुराने गौरव को जगाइये। देखिये तो, किस तरह आपके सेवक आपकी कोई भी इच्छा पूर्ण करने के लिये अपने-अपने कार्य में सन्नद्ध होकर खड़े हैं। क्या आप गाना सुनेंगे ? सुनिये, काव्य और संगीत का देवता ऐपोलो ही गा रहा है।

[संगीत]

सुनिये, पिंजड़े में बन्द बीस कोयलों ने अपनी मधुर तान छेड़ दी है। क्या आप सोना चाहते हैं ? चलिये हम आपको उस मुलायम और खुशबू से भरे बिस्तरे पर ले चलते हैं जो ऐसीरिया की महारानी सैमीरेमिस के लिये बनाए गए स्वतः ही कामोत्तेजना जगाने वाले बिस्तरे से कहीं अच्छा है। अगर आप घूमना चाहें तो हम ज़मीन पर कालीन बिछा दें, या अगर आपकी घुड़सवारी करने की इच्छा है तो आज्ञा दीजिये, अभी आपके घोड़ों की पीठ पर स्वर्ण और मोतियों से सुसज्जित जोन कस दी जायेंगी और उनको हर प्रकार से सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित कर दिया जायेगा। यदि आप बाज़ उड़ाना चाहें तो आपके पास इस तरह के बाज़ भी हैं जो प्रभात के पपीहे (Lark) से भी कहीं ऊँचे आकाश में उड़ जायेंगे। फिर यदि आप शिकार खेलने की इच्छा करें, तो आपके पास ऐसे अच्छे-अच्छे कुत्ते हैं जो एक बार तो चिल्लाकर आकाश और इस खोखली पृथ्वी को प्रतिध्वनित कर सकते हैं।

पहला सेवक : श्रीमान्, आज्ञा दीजिये कि आप शिकार पर जायेंगे। आपके भूरे शिकारी कुत्ते हिरन से भी कहीं अधिक तेज़ भागने वाले हैं। तेज़ भागने वाले बारहसिंगे से इनकी चाल किसी तरह कम नहीं है।

दूसरा सेवक : क्या आप चित्र पसन्द करते हैं ? हम आपके पाम

‘ऐडोनिस्’ का ऐसा चित्र ला सकते हैं कि वह बहते सोते के पास है, इसके अलावा पूरी तरह घास के बीच छिपी हुई साइथीरिया का चित्र ला सकते हैं जिसमें आप देखेंगे कि उसकी साँस से वह घास हिलती हुई दिखाई देती है, यहाँ तक कि चित्र में आप हवा के साथ घास को हिलता हुआ देख सकते हैं ।

लॉर्ड : हम आपको इओ का उसकी कौमार्य अवस्था का चित्र दिखायेंगे । देव जूपीटर ने किस तरह उससे प्रेम और छल किया, यह सभी कुछ आप अति सजीवता के साथ उसमें चित्रित पायेंगे ।

तोसरा सेवक : या आपके सामने ऐसा चित्र उपस्थित करें जिसमें आप डैप्ने को भाड़ियों से भरे जंगल में फिरते हुए देखें । काँटों से छिलते उसके पैरों का तो ऐसा सजीव चित्रण हुआ है कि उन्हें देखकर कोई भी निश्चयपूर्वक कह सकता है कि उनमें से खून बह रहा है । उसके आँसू और खून दोनों को इस कौशल के साथ चित्रित किया गया है कि उस दृश्य को देखकर तो दुःखी ऐपोलो भी रोने लगेगा ।

लॉर्ड : आप एक लॉर्ड हैं, इसके विषय में किसी प्रकार की शंका मत करिये । आपकी एक पत्नी भी हैं जो इस ढलती उम्र की किसी भी स्त्री से कहीं अधिक सुन्दर हैं ।

पहला सेवक : जब तक आपके विरह में बहाये आँसुओं ने उनके सुन्दर मुख की कान्ति को मिटाया नहीं था तब तक तो संसार में उनके समान सुन्दर कोई दूसरा प्राणी था ही नहीं, लेकिन फिर भी वे किसीसे सौन्दर्य में कम नहीं हैं ।

भिखारी : क्या मैं एक लॉर्ड हूँ और क्या सचमुच मेरी एक पत्नी है ? या यह सब कुछ स्वप्न है ? या यह कहूँ कि इस स्थिति से पहले की स्थिति स्वप्नवत् थी ? मैं सोया तो नहीं हूँ : सभी कुछ देख

रहा हूँ, सुन रहा हूँ और बोल भी रहा हूँ। यहाँ बिखरी हुई सुगन्धि का मुझे अनुभव हो रहा है, छूकर देखता हूँ तो मुलायम चीजों का अनुभव होता है। सच, मैं निस्संदेह एक लॉर्ड हूँ। कौन कहता है कि मैं क्रिस्टोफर स्लाइ नाम का ठठेरा हूँ। अच्छा तो अब हमारी पत्नी को हमारे पास लाओ, और फिर थोड़ी शराब हमें दे दो।

दूसरा सेवक : क्या श्रीमान् अपने हाथ धोयेंगे ? ओह ! आपको अपनी स्वाभाविक स्थिति में पाकर हमें कितनी प्रसन्नता हो रही है ! इन पन्द्रह सालों तक आप एक स्वप्न-से में डूबे रहे थे, उससे जब कभी भी आप जागे थे तो वह भी इस तरह जागे थे मानो सो ही रहे हों। आज आपने अपने आपको पहचान लिया है, सच इससे बढ़कर और प्रसन्नता की बात क्या होगी ?

भिखारी : सच, इन पन्द्रह सालों तक मैं किसी गहरी नींद में था लेकिन क्या मैं उस पूरे समय के भीतर कभी भी कुछ नहीं बोला था ?

पहला सेवक : अवश्य बोले थे स्वामी ! लेकिन कुछ बड़े निरर्थक-से शब्द ही आपके मुँह से निकले थे क्योंकि यद्यपि आप इस शानदार कमरे में विश्राम कर रहे थे लेकिन कहते थे कि आपको पीटकर दरवाजे से बाहर निकाल दिया गया था, और इसी बात पर आप गृहस्वामिनी से क्रोधावेश में आकर कहते थे कि आप उनको न्यायालय के सामने उपस्थित करेंगे क्योंकि वे सीलबन्द बर्तन न लाकर कुछ पत्थर के लोटे ले आई थीं। कभी-कभी आप सिसली हैकेट को पुकारने लगते थे।

भिखारी : हाँ, हाँ, वही जो इस घर की परिचारिका है।

तीसरा सेवक : लेकिन श्रीमान् ! आप न तो किसी घर को जानते हैं और न किसी ऐसी परिचारिका को और न ऐसे आदमियों को

जिनका नाम आपने लिया है जैसे स्टिकन स्लाइ, ग्रीस के वृद्ध जोन नैप्स, पीटर टर्फ, हेनरी पिम्परनैल आदि इसी तरह के बीसों नाम और हैं। श्रीमान् ! आज तक कभी न तो किसीने इन आदमियों को देखा और न कभी इन लोगों ने इस पृथ्वी पर जन्म लिया ।

भिखारी : परमात्मा को धन्यवाद है कि उसकी कृपा से मैं अपनी पूर्व स्वाभाविक स्थिति में आ गया ।

सभी : आमीन !

भिखारी : मैं इसके लिये तुम्हें धन्यवाद देता हूँ । इससे तुम्हारा लाभ ही होगा ।

[गृह-स्वामिनी का परिचारिकाओं के साथ प्रवेश]

गृह-स्वामिनी : कैसे हैं आप, मेरे श्रेष्ठ स्वामी ?

भिखारी : अच्छा हूँ क्योंकि यहाँ चारों ओर प्रसन्नता की पर्याप्त सामग्री है । मेरी पत्नी कहाँ है ?

गृह-स्वामिनी : यही तो है स्वामी ! कहिये उसके लिये आपकी क्या आज्ञा है ?

भिखारी : क्या तुम मेरी पत्नी हो ? तो फिर मुझे पति कह कर क्यों नहीं पुकारतीं । स्वामी कहकर तो मेरे सेवक मुझे पुकारते हैं । मैं तो तुम्हारा पति हूँ ।

गृह-स्वामिनी : मेरे प्राणनाथ और मेरे स्वामी, मेरे स्वामी और पति, मैं सदा आपकी आज्ञा में रहने वाली आपकी पत्नी हूँ ।

भिखारी : मैं अच्छी तरह जानता हूँ । इन्हें क्या कहकर पुकारना चाहिये मुझे ?

लॉर्ड : श्रीमती ।

भिखारी : ऐल्सी श्रीमती या जोन श्रीमती ।

लॉर्ड : श्रीमती के सिवाय और कुछ भी नहीं। इसी तरह लॉर्ड अपनी पत्नियों को सम्बोधित करते हैं।

भिखारी : श्रीमती पत्नी ! सभी लोग कहते हैं कि मैं पन्द्रह साल या इससे भी अधिक समय के बीच सोता हुआ स्वप्न देखता रहा था।

गृह-स्वामिनी : ठीक है प्राणनाथ ! इस बीच आपके विरह में ये पन्द्रह साल मुझे तीस साल के बराबर लगे थे।

भिखारी : बस काफ़ी है, सेवको ! हमें अकेला छोड़कर यहाँ से चले जाओ।

श्रीमती ! कपड़े उतार कर आइये, मेरे बिस्तरे पर आराम कर लीजिये।

गृह-स्वामिनी : श्रेष्ठ स्वामी ! एक या दो रात के लिये अभी मुझे क्षमा कर दें, मैं आपसे तीन बार प्रार्थना करती हूँ। यदि आपको यह स्वीकार न हो तो सूर्यास्त तक तो मुझसे इस प्रकार का आग्रह मत करिये क्योंकि आपके चिकित्सकों ने इस डर से कि आपको फिर यह बीमारी न लग जाय, मुझे विशेष रूप से यह आज्ञा दी है कि मैं अभी आपके साथ सहवास न करूँ। मैं आशा करती हूँ, मेरे मना करने के पीछे यह पर्याप्त कारण है।

भिखारी : हाँ, हाँ, यह तो ठीक है, पर मैं इतनी देर तक तो मुश्किल से ही ठहर पाऊँगा, लेकिन अवश्य ठहरूँगा मैं, चाहे कितने भी वेग से कामोत्तेजना मेरे अन्दर जाग रही है, क्योंकि मैं फिर अपने उस पागलपन में गिरना नहीं चाहता।

[एक सन्देशवाहक का प्रवेश]

सन्देशवाहक : श्रीमान् ! आपके अभिनेता आपकी स्वस्थ अवस्था के बारे में सुनकर एक बड़ा ही अच्छा दिलचस्प सुखान्त नाटक खेलने के लिये आये हैं, क्योंकि आपके चिकित्सकों ने इसे आपके

लिये लाभदायक बताया है ।

अपार दुःख ने आपके रक्त तक को जमा दिया है, फिर दुःख तो पागलपन का और पोषण करता है इसीलिये उनका विचार है कि आपके लिये कोई नाटक देखना और उससे अपने हृदय को प्रसन्न करना इस परिस्थिति में बड़ा ही अच्छा रहेगा । इससे हजारों तरह की व्याधियाँ दूर हो जाती हैं और आयु बढ़ती है ।

भिखारी : तो ठीक है, मैं उनका नाटक देखूँगा । लेकिन, यह कोई चौबोलेबाजी या किसी तरह का चक्करदार खेल या कोई वैसे ही किसमस का मज़ाक तो नहीं है ?

गृह-स्वामिनी : जी नहीं, मेरे स्वामी ! यह तो बड़ी ही दिलचस्प चीज़ है ।

भिखारी : क्या, घर-गिरस्ती की चीज़ ?^१

गृह-स्वामिनी : एक तरह का इतिहास है यह ।

भिखारी : अच्छा, हम अवश्य देखेंगे उसे ।

श्रीमती पत्नी ! मेरे पास आकर बैठो न । मरने दो दुनिया को । आये मौके को कभी नहीं छोड़ना चाहिये ।

१. Stuff : चीज़; इस शब्द पर पन का प्रयोग किया गया है । गृह-स्वामिनी तो Pleasing stuff कहती हैं, लेकिन भिखारी उसे ही Household stuff कहकर हास्य का वातावरण पैदा करता है ।

पहला अंक

दृश्य १

[तुरही बजती है । ल्यूसेंसियो का अपने सेवक ट्रेनियो के साथ प्रवेश]

ल्यूसेंसियो : ट्रेनियो ! विभिन्न कलाओं के पोषण करने वाले इस भव्य पैडुआ को देखने की मेरी उत्कट इच्छा थी, अब मैं इस महान् देश इटली की फलों से आच्छादित सुन्दर वाटिका लोम्बार्डी को देखने के लिये आ पहुँचा हूँ । इसके लिये मुझे पिता की आज्ञा प्राप्त है इसलिये उनकी सदिच्छा और स्नेह तथा तुम जैसे मेरे श्रेष्ठ और विश्वासपात्र सेवक का साथ भी मुझे प्राप्त है । आओ, यहाँ ठहरकर हम कुछ सीखें और उस ज्ञान का संचय करें जो मानवीय कलाओं में निहित होता है । वह पीसा जहाँ अधिकतर गम्भीर प्रवृत्ति के लोग रहते हैं, मेरी जन्मभूमि है । वहीं मेरे पिता ने संसार के एक समृद्ध व्यापारी की ख्याति प्राप्त की थी । मेरे पिता विसेंसियो की जन्मभूमि वैटीवोलिआई थी लेकिन मेरा पालन-पोषण फ्लोरेंस में हुआ, अब मेरी सारी आशाएँ तभी पूरी हो सकती हैं जब मैं पुण्य-कार्यों से अपने भाग्य को समृद्ध करूँ । इसीलिये ट्रेनियो ! जितने समय तक मैं अध्ययन करूँगा, पुण्य और पवित्रता के उस दर्शन का प्रयोग करूँगा, जो मनुष्य के सुख से सम्बन्धित है, और विशेष रूप से जिसकी प्राप्ति पुण्य से ही हो सकती है । बताओ, तुम्हारा क्या विचार है क्योंकि मैं पीसा को छोड़कर पैडुआ इस तरह आ गया हूँ जैसे एक व्यक्ति उथले दलदल से निकलकर गहरे पानी में कूदने के

लिये आ जाय और तृप्ति से अपनी प्यास बुझाने की चेष्टा करे।

ट्रेनियो : मेरे श्रेष्ठ स्वामी ! आपका जैसा विचार है वैसा ही मेरा है।

मुझे प्रसन्नता है कि आप इस श्रेष्ठ दर्शन की श्रेष्ठताओं को आत्मसात करना चाहते हैं; लेकिन स्वामी, इतना अवश्य कहता हूँ कि जब हम किसी विशेष नैतिकता या गुण की प्रशंसा करें तो हमको न तो बिल्कुल वीतरागी हो जाना चाहिये और न अपनी विचारशक्ति पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिये। ऐरिस्टौटिल के नैतिक प्रतिबन्धों के प्रति इस प्रकार का अन्ध विश्वास नहीं कर लेना चाहिये कि फिर प्रेम के गीत लिखने वाले ओविड को हम उपेक्षा की दृष्टि से देखने लगे। अपने प्रसन्नचित्त मित्रों पर अपने तर्क का प्रयोग करिये और साधारण बातचीतों में अपनी वाक्पटुता दिखाइये। स्वयं को प्रेरणा और स्फूर्ति देने के लिए संगीत और काव्य का प्रयोग करिये। गणित और अध्यात्म-विद्या की ओर तभी उन्मुख होइये जब आपका स्वास्थ्य आपका साथ दे। जिस वस्तु से कोई आनन्द प्राप्त नहीं होता, उससे किसी प्रकार का लाभ भी नहीं मिलता है। एक ही शब्द में कह देता हूँ श्रीमान् ! अध्ययन उस विषय का करिये जिसके प्रति आपकी सबसे अधिक रुचि हो।

ल्यूसेंसियो : परमात्मा बचाये, ट्रेनियो ! तुम ठीक सम्मति देते हो।

अगर बाँइडैलो यहाँ आ जाता तो हमारे ठहरने के लिए किसी ऐसे अच्छे स्थान का प्रबन्ध हो जाता जहाँ हम अपने उन मित्रों का स्वागत करेंगे जो पैंडुआ के हमारे निवास-काल में पैदा होंगे। ठहरो थोड़ा, ये कौन आ रहे हैं ?

ट्रेनियो : स्वामी ! इस नगर में हमारा स्वागत करने का ही यह कोई आयोजन दीख पड़ता है।

[बैण्टिस्टा का अपनी दोनों पुत्रियों कैथरिना तथा बियांका के साथ प्रवेश । विदूषक ग्रेनियो तथा हौटेंशियो भी साथ है । ल्यूसेंसियो और ट्रेनियो हटकर खड़े हो जाते हैं ।]

बैण्टिस्टा : श्रीमान् ! आप लोग अब मुझे अधिक दवायें नहीं क्योंकि जो दृढ़ निश्चय मैंने कर लिया है उससे आप सभी परिचित हैं । मेरा निश्चय है कि जब तक मेरी बड़ी लड़की के लिये कोई वर नहीं मिल जायेगा तब तक मैं अपनी छोटी लड़की का हाथ किसी के हाथ में नहीं दूँगा । मैं आप दोनों को अच्छी तरह जानता हूँ और आपके प्रति मेरा स्नेह भी है, इसलिये कहता हूँ कि जो कोई आपमें से कैथरिना को प्यार करते हों, मैं सहर्ष उसका विवाह आपके साथ करके आपकी इच्छा को पूर्ण करूँगा ।

ग्रेमियो : अरे उस चुड़ैल की तो पिटाई होनी चाहिये । मेरे लिये तो वह बहुत ही बुरी है ।

हौटेंशियो ! सुनो, क्या तुम्हें किसी पत्नी की चाह है ?

केटे : श्रीमान् ! क्या इन बेवकूफों को फँसाने के लिये मुझे एक जाल के रूप में प्रयुक्त करने की आपकी इच्छा है ?

हौटेंशियो : तुम्हारे लिये वर श्रीमती ! यह मतलब कैसे लगा लिया आपने ? जब तक आप इसी तरह कर्कशा बनी रहेंगी तब तक कोई भी वर आपको नहीं मिल सकता ।

केटे : ठीक कहते हैं आप श्रीमान् ! आपको इससे कभी भी भयभीत होने की आवश्यकता नहीं होगी । काश, ऐसा विचार कभी मेरे

१. Mates : इस शब्द के दो अर्थ हैं । बेवकूफ यानी निम्न कोटि का व्यक्ति और दूसरा अर्थ है, वर । हौटेंशियो इसी शब्द पर पन का प्रयोग करता है और सफलतापूर्वक केटे की कठोर बात का उत्तर दे देता है । हमने भावार्थ की ओर ही विशेष ध्यान रखा है ।

हृदय के पास तक न आये और कहीं अगर ऐसा हो गया तो इसमें किसी प्रकार का सन्देह मत करिये श्रीमान्, कि मैं तिपाई से आपके सिर के बाल सँवारूँगी और आपके चेहरे को रंगकर आपसे एक गधे की तरह काम लूँगी ।

हौटेंशियो : परमात्मा ! ऐसी चुड़ैलों से मुझे बचाना ।

ग्रेमियो : और मुझे भी मेरे अच्छे परमात्मा ।

ट्रेनियो : यहाँ तो बड़े मनोरंजन की सामग्री उपस्थित है स्वामी ! वह देखिये, वह स्त्री पूरी तरह पागल मालूम देती है । बहुत अधिक चिड़चिड़े स्वभाव की लगती है ।

ल्यूसेंशियो : लेकिन दूसरी को शान्त देखकर मुझे लगता है कि वह अत्यंत ही नम्र और गम्भीर प्रकृति की है । ठहरो ट्रेनियो !

ट्रेनियो : ठीक कहा आपने स्वामी ! अब शान्त रहकर, एक बार निगाह भरकर देख लीजिये आप उसे ।

बैण्टिस्टा : श्रीमान् ! जो निश्चय मैंने किया है उसको पूरा करने के लिये मैं बियाँका को आज्ञा देता हूँ कि वह अन्दर चली जाये ।

मेरी बेटी बियाँका ! इसका बुरा न मानना क्योंकि मेरा स्नेह तुम्हारे प्रति कभी कम थोड़े ही हो सकता है ।

केटे : खूब बहलाया । यह तो अच्छी तरह से आँख में उँगली करना हुआ और उस समय जबकि वह इसके कारण से परिचित थी ।

बियाँका : बहिन, मेरा विक्षोभ देखकर स्वयं संतोष कर लो । पिता ! मैं आपकी आज्ञा का सहर्ष पालन करती हूँ । अब मेरी पुस्तकें मेरी सहयोगिनी होंगी जिन्हें मैं एकान्त में पढ़ा करूँगी और अपने वाद्ययन्त्रों को वजाकर अपना मन बहलाया करूँगी ।

ल्यूसेंशियो : सुनो ट्रेनियो ! काव्य और संगीत की देवी मिनर्वा के शब्दों को सुनो ।

हौटेंशियो : श्रीमान् बैण्टिस्टा ! क्या आप ऐसा विचित्र व्यवहार भी कर सकते हैं ? मुझे बड़ा दुःख है कि हमारी सद्विच्छा के रहते हुए बियांका को इतना दुःख सहना पड़ रहा है ।

ग्रेमियो : श्रीमान् बैण्टिस्टा ! क्या आप नरक की इस पिशाचिनी के पीछे उसको अन्दर बन्द करके इसकी कर्कश वाणी के लिये पश्चात्ताप करने को बाध्य करेंगे ?

बैण्टिस्टा : श्रीमान्, आप शान्त रहिये । मेरा ऐसा ही निश्चय है ।

[बियांका का प्रस्थान]

बियांका ! अन्दर चली जाओ । मैं यह जानता हूँ कि मेरी बेटी संगीत तथा काव्य आदि में विशेष रुचि रखती है इसलिये मैं अपने घर पर ही उसके लिये ऐसे अध्यापकों की व्यवस्था कर दूँगा जो उसकी यौवनावस्था में उसको पढ़ाने के योग्य होंगे ।

हौटेंशियो या आप ग्रेमियो, किसी ऐसे आदमी को जानते हों तो उसको यहाँ भेज दीजिये । चतुर आदमियों के प्रति मैं स्नेहपूर्ण व्यवहार रखूँगा और अपनी वच्चियों के प्रति उदार रहूँगा जिस से उनका अच्छा विकास हो ।

अच्छा, विदा ! कैथरिना ! तुम यहाँ ठहर सकती हो क्योंकि मुझे अभी बियांका से कुछ और कहना है ।

[प्रस्थान]

केटे : क्यों, मेरा विश्वास है, मैं भी जा सकती हूँ । क्या नहीं जा सकती ? क्या मेरे साथ भी इसी तरह समय निश्चित किया जायेगा जैसे कि मानो मैं यह जानती न होऊँ कि क्या ले जाना है और क्या छोड़ जाना है ? हा—

[प्रस्थान]

ग्रेमियो : शैतान की माँ के पास जाओ तुम तो । तुम्हारे अन्दर इतने

गुण हैं कि यहाँ तो कोई भी तुम्हारे योग्य है नहीं ।

हौटेशियो ! जहाँ तक उसके प्रेम का प्रश्न है, उसको तो हमारी तनिक भी परवाह नहीं है लेकिन हम ही अपनी ओर से प्रयत्न करके अपने हृदय में उत्साह और प्रेरणा भरते हैं । इस तरह हमारी रोटी तो दोनों ही तरफ से कच्ची है । अच्छा, विदा । फिर भी जो प्रेम मेरे हृदय में मेरी प्यारी बियाँका के लिए है, उसी के नाते यदि किसी तरह मुझे कोई ऐसा योग्य व्यक्ति मिल गया जो उसको उन कलाओं को सिखा सका जिनके प्रति उसकी रुचि है, तो मैं अवश्य उसे उसके पिता के पास पहुँचाऊँगा ।

हौटेशियो : ऐसा ही मैं करूँगा श्रीमान् प्रेमियो ! लेकिन एक बात सुनिये । यद्यपि हमने अपनी पारस्परिक स्पर्धा के सम्बन्ध में कभी भी आपस में बातें नहीं की हैं फिर भी आप यह समझ लीजिये कि यह भगड़ा हम दोनों से सम्बन्ध रखता है । हो सकता है फिर हमें अपनी प्यारी बियाँका के पास आने का अवसर प्राप्त हो, उस समय हम एक दूसरे के प्रतिरोधी होकर बियाँका के प्रेम को जीतने की चेष्टा करेंगे, लेकिन उसके साथ एक बात का ध्यान पहले रखना चाहिये ।

प्रेमियो : वह क्या ?

हौटेशियो : यही कि उसकी बहिन के लिये हमें कोई वर ढूँढना चाहिये ।

प्रेमियो : कोई वर यानी कोई शैतान ।

हौटेशियो : मैं कहता हूँ, कोई वर ।

प्रेमियो : लेकिन मैं कहता हूँ, शैतान ।

हौटेशियो ! यद्यपि उसका पिता धनी है लेकिन फिर भी क्या आप किसीको इतना मूर्ख समझते हैं कि वह इस नारकीय पिशाचिनी से विवाह करने को तैयार होगा ?

हौटेंशियो : रहने दीजिये । यह ठीक है कि उसकी कर्कश वाणी और कटु वानों को हम अपना धैर्य रखकर नहीं सुन सकते लेकिन इस संसार में ऐसे भी लोग हैं जो इसकी तरफ विशेष ध्यान न देकर उसके सभी दुर्गुणों के होते हुए भी पर्याप्त धन लेकर उसके साथ विवाह कर लेंगे ।

ग्रेमियो : मैं तो नहीं कह सकता लेकिन इसके साथ दिये जाने वाले मारे दहेज को मैं तो एक ही शर्त पर ले सकता हूँ कि हरएक सुबह बड़े चौराहे पर इसके कोड़े लगाये जायें ।

हौटेंशियो : ठीक है जैसा आप कहते हैं, लेकिन सड़े हुए सेबों में पसन्द करने की कम गुंजायश होती है । आओ, बियांका के पिता के दृढ़ निश्चय के रूप में जो बाधा हमारे बीच में आ गई है, उसने हमें आपस में मित्र बना दिया है । आगे भी यह मित्रता इसी प्रकार चलती रहेगी । हम किसी भी तरह बैप्टिस्टा की बड़ी लड़की के लिये कोई पति ढूँढेंगे और इस तरह बियांका के विवाह के मार्ग में जो बाधा है, उसे दूर करके अपना प्रेम-व्यापार फिर प्रारम्भ करेंगे ।

प्यारी बियांका ! सौभाग्यशाली व्यक्ति इस पुरस्कार को प्राप्त करे, वह व्यक्ति जो इस दौड़ में सबसे तेज भागकर विवाह की अँगूठी को प्राप्त कर ले । आपका क्या विचार है श्रीमान् ग्रेमियो ?

ग्रेमियो : मुझे यह स्वीकार है । मैं तो सच यह चाहता हूँ कि मैं उस व्यक्ति को जो उसके साथ प्रेमालाप प्रारम्भ करके पूरी तरह उससे शादी कर ले और उसके साथ सहवास करके किसी तरह इस घर को उससे मुक्त कर दे, पैडुआ का अच्छे से अच्छा घोड़ा इनाम में दूँ ।

[ग्रेमियो तथा हौटेंशियो का प्रस्थान]

[ट्रेनियो और ल्यूसेंशियो वहीं रह जाते हैं।]

ट्रेनियो : मुझे बताइये श्रीमान्, क्या यह सम्भव है कि प्रेम एकाएक ही किसी पर अपना इतना अधिकार जमा ले ?

ल्यूसेंशियो : हाँ, अब जब मैंने इसको सच होता देख लिया है। इससे पहले तो मैंने भी कभी इसको सम्भव नहीं समझा ट्रेनियो ! लेकिन देखो, मैं उसकी ओर देखता हुआ पूरी तरह निष्क्रिय बना खड़ा रहा, तभी इस निष्क्रियता में मैंने प्रेम का प्रभाव देखा और अब मैं तुम्हारे सामने यह स्पष्ट रूप से स्वीकार करता हूँ ट्रेनियो, कि मैं उसके विरह में जल रहा हूँ, मेरी आत्मा तड़प रही है। यदि मैं इस सुन्दरी और सुशील युवती को नहीं प्राप्त कर सका तो मेरा जीवन नष्ट हो जायेगा। ट्रेनियो ! मुझे कुछ सलाह दो इस सम्बन्ध में क्योंकि मैं जानता हूँ, तुम दे सकते हो। मेरी सहायता करो ट्रेनियो, मुझे तुम्हारा भरोसा है। तुम मेरे उतने ही प्यारे और विश्वसनीय मित्र हो जितनी कार्थेज की रानी की ऐना^१ थी।

ट्रेनियो : स्वामी ! अब आपका विरोध करने का यह समय नहीं है, फिर विरोध करने या बुरा कहने से आप किसी के हृदय से इस प्रेम के प्रभाव को नहीं हटा सकते। अगर प्रेम ने आपको अपने वश में कर लिया है तो यह समझ लीजिये कि कोई भी चीज सदा एक-सी स्थिति में कभी नहीं रहती, इसलिए जितनी आसानी से हो सके अपने आपको इस बन्धन से मुक्त कर लीजिये।

ल्यूसेंशियो : परमात्मा बचाये ट्रेनियो ! आगे कहो, इससे मुझे संतोष

१. Anna : कार्थेज की रानी डीडो की बहिन जो उसके जीवन के गुप्त रहस्यों में भाग लेती थी।

मिलता है, इसी तरह आगे की बात से भी मिलेगा क्योंकि तुम्हारी सलाह पूरी तरह ठोस है ।

ट्रेनियो : स्वामी ! आप काफी देर तक उस युवती की तरफ देखते रहे थे, शायद आपने सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात को नहीं देखा ।

ल्यूसेशियो : क्यों नहीं, मैंने उसके चेहरे पर उस एजिनर की पुत्री का-सा अपूर्व सौन्दर्य देखा जिसके कारण स्वयं देव जूपीटर को वृषभ का रूप धारण करके क्रीट की भूमि पर घुटनों के बल खड़े होकर उस सुन्दरी की विनती करनी पड़ी थी ।

ट्रेनियो : इसके अलावा आपने और कुछ नहीं देखा ? क्या आपने नहीं देखा कि किस तरह उसकी बहिन ने चिल्लाकर एक तूफान-सा मचा डाला था, जिसको साधारण मनुष्य के कान तो मुश्किल से ही बरदाश्त कर सकते हैं ?

ल्यूसेशियो : ट्रेनियो ! मैंने तो मूंगे जैसे उसके लाल ओठों को हिलते हुए देखा था । उसने अपनी श्वास से वायु को मधुर और सुगन्धित कर दिया था, यही सब कुछ मैंने देखा था ।

ट्रेनियो : तब तो इस बेहोशी से आपको जगाने का यह उचित समय है । जागिये श्रीमान् ! अगर आप उस युवती से प्रेम करते हैं तो फिर अपने विचार और बुद्धि को संतुलित करके उसको प्राप्त करने का निश्चय कर लीजिये । मूल बात यह है कि उसकी बड़ी बहिन बड़ी ही कुटिल और दुष्टा है, इसलिये जब तक उसके पिता को उसके लिये वर नहीं मिल जायेगा तब तक श्रीमान् आपका प्रेम कँवारी कन्या की तरह अपने घर ही रहेगा । यही कारण है कि उसके पिता ने उसको अन्दर बन्द कर दिया है क्योंकि इस तरह नित आते प्रेमियों से उसका चित्त परेशान तो नहीं होगा ।

ल्यूसेशियो : आह ट्रेनियो ! कैसा क्रूर है वह पिता ! लेकिन क्या तुमने यह नहीं सुना है कि उसका पिता उस युवती को कलाओं की शिक्षा देने के लिये किन्हीं अध्यापकों की खोज में है ?

ट्रेनियो : अवश्य श्रीमान् ! और इसके लिये मैंने एक योजना तैयार की है ।

ल्यूसेशियो : मैंने भी की है ट्रेनियो !

ट्रेनियो : स्वामी ! मेरे विचार से आपकी और मेरी दोनों की योजनाएँ एक में ही मिल जायेंगी ।

ल्यूसेशियो : अच्छा, तो पहले तुम अपनी योजना बताओ ।

ट्रेनियो : आप एक अध्यापक बनकर उस युवती को पढ़ाने का काम अपने हाथ में लेंगे । यही आपकी योजना है न ?

ल्यूसेशियो : यही है ट्रेनियो ! लेकिन काश, ऐसा हो !

ट्रेनियो : यह सम्भव नहीं है क्योंकि यहाँ पैंडुआ में आपके स्थान पर विसेशियो का पुत्र कौन बनेगा ? कौन उसी तरह घर रखकर आपकी तरह मित्रों का स्वागत करना, देशवासियों से मिलना, उनको दावत देना, यह सब कुछ कुशलतापूर्वक करेगा ?

ल्यूसेशियो : बस, अब तुम धैर्य रखो क्योंकि सारी योजना मेरे दिमाग में बैठ गई है । अभी तक हम न तो किसीके घर गए हैं और न हमारी शक्ल-सूरत से कोई हमें पहचानता है कि कौन तो स्वामी है और कौन सेवक है । इसलिये अब योजना इस तरह बनी है— तुम तो मेरे स्थान पर स्वामी बन जाओगे और जिस प्रकार मैं घर का स्वामी हूँ, अब तुम हो जाओगे, इसी तरह मेरे सेवकों पर तुम्हारा अधिकार होगा और तुम मेरी-सी ही वेशभूषा अपनी कर लोगे, मैं अपना रूप बदल लूंगा । या तो मैं कोई प्लोरेंस निवासी हो जाऊँगा या नेपिल्स-निवासी या पीसा का निम्न वर्ग

का व्यक्ति बन जाऊंगा। बस इतने विचार के बाद यह योजना निकली, और अब यही होगा। ट्रेनियो ! तुरन्त अपनी वेशभूषा बदल डालो। मेरा यह रंगीन टोप और चोगा ले लो। जब बाँइंडैलो आयेगा तो वह तुम्हारा परिचारक होगा लेकिन इससे पहले मुझे उसकी जवान थामनी पड़ेगी।

ट्रेनियो : इसकी तो आवश्यकता होगी। संक्षेप में बात यह है श्रीमान् ! कि जब आपकी यही इच्छा है तो मैं तो सदा आपकी आज्ञा पालन करने की शपथ ले चुका हूँ। बिछुड़ते समय आपके पिता ने मुझे यही आज्ञा दी कि मैं आपकी सेवा करूँ, यद्यपि उनका तात्पर्य कुछ दूसरा ही था। ठीक है। मैं ल्यूसेंसियो बनने के लिये तैयार हूँ क्योंकि ल्यूसेंसियो के प्रति मेरे हृदय में श्रद्धा और प्रेम है।

ल्यूसेंसियो : ऐसा ही करो ट्रेनियो ! क्योंकि ल्यूसेंसियो भी प्रेम करता है। उस सुन्दरी को प्राप्त करने के लिये जिसकी अकस्मात् दृष्टि ने मेरी दृष्टि को घायल करके अपना दास बना लिया है, मुझे एक निम्न दास बन जाने दो।

[बाँइंडैलो का प्रवेश]

वह बदमाश तो यहाँ आ पहुँचा। क्यों, अब तक कहाँ थे तुम ?

बाँइंडैलो : कहाँ था मैं ? यह क्या, आप कहाँ हैं ? स्वामी ! क्या इस ट्रेनियो ने आपके कपड़े चुरा लिये हैं या आपने इसके चुरा लिये हैं, या दोनों ने ही एक-दूसरे के कपड़े चुरा लिये हैं ? बताइये, बात क्या है ?

ल्यूसेंसियो : मुनो मूर्ख ! यह समय हँसी-मजाक करने का नहीं है, इसलिये समय के अनुसार अपना व्यवहार बदल लो। मेरी जीवन-रक्षा के लिये ही ट्रेनियो ने मेरी वेशभूषा धारण कर ली

है और किसी तरह बचकर निकल जाने के लिये मैंने उसके वेश में अपने आपको छिपा लिया है। यहाँ आने पर मेरा किसीसे झगड़ा हो गया था, उसमें मैंने एक आदमी को मार दिया था। पकड़े जाने के डर से ही मैंने यह सब कुछ किया है। इसीलिए मेरी आज्ञा मानकर तुम ट्रेनियो को ही अपना स्वामी समझकर उसकी आज्ञा का पालन करो और मैं अपनी जान बचाने के लिये यहाँ से भागता हूँ। समझ गये न ?

बाँइडैलो : रत्ती भर भी इधर से उधर नहीं होगा श्रीमान् !

ल्यूसैशियो : जबान पर ट्रेनियो का नाम या जिक्र तक भी नहीं आना चाहिये क्योंकि ट्रेनियो तो अब ल्यूसैशियो बन गया है।

बाँइडैलो : और भी अच्छा है उसके लिए। काश ! मेरा भी ऐसा ही भाग्य होता !

ट्रेनियो : बाँइडैलो ! काश ! इसके बाद की भी इच्छा पूर्ण हो जाये कि ल्यूसैशियो को वास्तव में वैप्टिस्टा की छोटी पुत्री प्राप्त हो जाये। लेकिन तुम सुन लो, अपने लिए नहीं बल्कि अपने स्वामी के हित के लिये कहता हूँ कि परिस्थिति देखकर जैसा उचित हो उसी प्रकार का कुशल व्यवहार किया करो। जब मैं अकेला हूँ तब तो मैं ट्रेनियो ही हूँ, लेकिन दूसरों के सामने अन्य स्थानों पर तुम्हारा स्वामी ल्यूसैशियो हूँ।

ल्यूसैशियो : ट्रेनियो ! आओ चलें। एक बात का और ध्यान रखना कि तुम्हें इन प्रेमियों के बीच एक प्रेमी बनना है। तुम पूछोगे क्यों ? तो इसके लिये इतना ही पर्याप्त है कि मैं किसी ठोस और बड़े कारण से ही तुमसे यह बात कह रहा हूँ।

[प्रस्थान]

[नाटक प्रस्तुतकर्ता ऊपर से बोलते हैं।]

पहला सेवक : स्वामी ! आप सिर हिला रहे हैं । आपको यह नाटक अच्छा लगा न ?

भिखारी : सेन्ट एने की शपथ खाकर कहता हूँ, बड़ा अच्छा खेल है । क्या अभी और होगा ?

गृह-स्वामिनी : मेरे स्वामी ! अभी तो इसका प्रारम्भ हुआ है ।

भिखारी : श्रीमती पत्नी ! यह तो बड़ा ही अच्छा नाटक है । काश ! यह पूरा हो जाये !

[वे बैठकर देखते हैं ।]

दृश्य २

[पैट्रू शियो तथा उसके सेवक ग्रूमियो का प्रवेश]

पैट्रू शियो : वेरोना ! मैं तुझे छोड़कर अपने मित्रों से मिलने पैडुआ को जाता हूँ । मेरा सबसे अधिक अभिन्न और प्रिय मित्र हौर्टेशियो है, सम्भवतया यही उसका घर है । ग्रूमियो ! जाकर खटखटाना ।

ग्रूमियो : खटखटाना श्रीमान् ? किसको खटखटाऊँ ? क्या किसी आदमी ने श्रीमान् को गाली दी है ?

पैट्रू शियो : धूर्त, मैं कहता हूँ कि यहाँ जोर से खटखटा ।

ग्रूमियो : क्या आपको खटखटाऊँ श्रीमान् ? क्यों ? मैं कौन हूँ श्रीमान् जो आपको यहाँ खटखटाऊँ ?

पैट्रू शियो : बदमाश, कमीने मैं कहता हूँ मुझको इस दरवाजे पर खटखटाओ और जोर से शोर मचाते हुए खटखटाओ नहीं तो मैं फिर तुम्हारे सिर को खटखटाऊँगा धूर्त !

ग्रूमियो : मेरे स्वामी तो भगड़ा करने पर उतारू हो गए हैं । मैं पहले आपको खटखटाऊँ, फिर बाद में मैं जानता हूँ कि सबसे बुरी हालत किसकी बनेगी ।

पैट्रूशियो : क्या तुम नहीं खटखटाओगे ? तो फिर मैं अब तुम्हें बजाता हूँ । अब मैं तुम्हें गवाऊँगा । गाओ ।

[वह उसके दोनों कान पकड़ कर मरोड़ने लगता है ।]

ग्रूमियो : बचाइये स्वामिनी ! बचाइये । स्वामी पागल हो गए हैं ।

पैट्रूशियो : अब खटखटाओ, मैं आज्ञा देता हूँ । धूर्त, कमीने !

[हौर्टेशियो का प्रवेश]

हौर्टेशियो : कैसे, क्या बात है ? मेरा पुराना दोस्त ग्रूमियो और मेरे अच्छे दोस्त पैट्रूशियो ? आप दोनों वेरोना में कैसे ?

पैट्रूशियो : श्रीमान् हौर्टेशियो ! क्या आप बीच-बिचाव करने आये है ? सच, आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हो रही है ।

हौर्टेशियो : सम्माननीय श्रेष्ठ पैट्रूशियो ! मैं अपने घर पर आपका स्वागत करता हूँ ।^१

उठो ग्रूमियो ! उठो ! हम इस भगड़े को तय कर देंगे ।

ग्रूमियो : जो कुछ आपने लैटिन में कहा है, वह कोई बात नहीं है श्रीमान् ! अब आप ही देखिये कि क्या इनकी नौकरी छोड़ देने के मेरे पास पर्याप्त कारण नहीं हैं ? पहले इन्होंने मुझे आज्ञा दी कि मैं इनको खटखटाऊँ, इतना ही नहीं जोर से पूरा शोर मचाकर खटखटाने की आज्ञा थी श्रीमान् ! अब आप ही तो देखिये कि क्या एक सेवक के लिए अपने स्वामी के प्रति इस प्रकार का व्यवहार करना उचित था ? क्या यह बहुत अधिक नहीं हो जाता ? अगर मैं इनको पहले खटखटा देता तो भगवान् की सौगन्ध क्या इस ग्रूमियो की और भी अधिक दुर्गति नहीं हो जाती ?

पैट्रूशियो : निरा मूर्ख है धूर्त !

१. हौर्टेशियो इस वाक्य को लैटिन भाषा में बोलता है ।

श्रेष्ठ हौटेंशियो ! मैंने इस बदमाश से आपका दरवाजा खटखटाने के लिये कहा था और सच, कितना भी कहने पर इस धूर्त ने वह काम नहीं किया ।

ग्रूमियो : दरवाजा खटखटाने के लिए कहा था ? ओ परमात्मा ! क्या आपने केवल यही नहीं कहा था कि ग्रूमियो, मुझको यहाँ खट-खटा दो । जोर से खटखटाना । अच्छी तरह शोर मचाकर खट-खटाना और अब दरवाजा खटखटाने की बात कह रहे हैं ?

पैट्रूशियो : बस बातें मत बना बदमाश ! चला जा यहाँ से ।

हौटेंशियो : शान्त रहिये पैट्रूशियो ! मैं ग्रूमियो का दोस्त हूँ । यह तो आपके तथा आपके पुराने विश्वासपात्र और अच्छे सेवक ग्रूमियो के बीच बड़ी दुखद घटना घट गई । खैर, प्रिय साथी ! अब यह बताइये कि किस सुख की कल्पना करके आप बेरोना छोड़कर पैडुआ जा रहे हैं ?

पैट्रूशियो : उस सुख की कल्पना जो नवयुवकों को अपने घर से दूर संसार में अपने भाग्य की परीक्षा करने के लिये भटका देती है । घर पर रहकर तो कुछ ही लोग थोड़ा-सा अनुभव प्राप्त कर पाते हैं । श्रीमान् हौटेंशियो ! मेरे पिता एन्टोनियो का स्वर्गवास हो चुका है और अब मैंने अपने आपको इस परेशानी में डाल लिया है कि विवाह करके जितना अधिक मुझसे हो सके अपने को समृद्ध बनाऊँ । मेरी जेब में यहाँ मुद्राएँ हैं और घर पर मेरा माल है, इसीलिए अब मैं घर से बाहर दुनिया को देखने के लिए आया हूँ ।

हौटेंशियो : पैट्रूशियो ! तो फिर क्या आपसे खुलकर कह दूँ ? क्या आप एक कुटिल कर्कशा से विवाह करना पसंद करेंगे ? मेरी इस सम्मति के लिये आप मुझे बहुत थोड़ा ही धन्यवाद देंगे

लेकिन फिर भी मैं यह आपसे पक्के तौर से कहता हूँ कि वह स्त्री बहुत धनवान है। लेकिन मित्र ! आप भी तो किसी तरह कम नहीं हैं इसलिए छोड़िये, मैं नहीं चाहता कि आप उसके साथ विवाह करें।

पैट्रूशियो : श्रीमान् हौटेंशियो ! हम जैसे मित्रों के बीच तो कुछ ही शब्द पर्याप्त हैं, इसीलिये अगर आप किसी ऐसी धनी स्त्री को जानते हैं जो पैट्रूशियो की पत्नी होने योग्य है, तो फिर यह शंका क्यों ? (धन तो मेरे विवाह के नृत्य का गीत है) वह चाहे फ्लोरेंटियस की प्रेमिका की तरह कुरूप क्यों न हो, सिबील की तरह बुढ़ी या सुकरात की पत्नी जैथीपे की तरह कुलटा और कर्कशा क्यों न हो, या इनसे भी बुरी हो, मेरे हृदय पर इस सबका कोई प्रभाव नहीं पड़ता और न इन सभी दोषों के कारण उसके प्रति मेरे हृदय का प्रेम कम हो सकता है, चाहे वह ज्वार में उठते हुए ऐड्रियाटिक सागर की तरह उबड़-खाबड़ और भद्दी क्यों न हो। मैं तो पैंडुआ में किसी धनी स्त्री से विवाह करने आया हूँ, यदि ऐसा हो गया तो मैं हर्ष के साथ पैंडुआ में रहूँगा।

प्रमियो : श्रीमान् सुन रहे हैं ? ये खुले रूप से आपके सामने अपने दिल की बात कह रहे हैं। इन्हें तो ढेर सारा सोना दे दीजिये, फिर चाहे किसी कठपुतली से या 'डबलैट' बाँधने के फ़ीतों के सिरे पर लटकी हुई उस पीतल की मुनिया से इनका विवाह कर दीजिये, इतना ही नहीं, एक बार तो ये उस बुढ़िया से भी विवाह करने को तैयार हो जाएँगे जिसके मुँह में एक भी दाँत नहीं होगा और बावन घोड़ों के शरीर में जितनी बीमारियाँ होंगी, वे चाहे सभी उसके शरीर में हों। अगर धन मिल जाय तो फिर किसी

तरह का दोष रहता ही नहीं है ।

हौटेंशियो : पैट्रूशियो ! चूँकि हम इस बात को लेकर काफी आगे तक बढ़ आये हैं, इसलिये मैं कहूँगा कि मैं तो यह सब मजाक कर रहा था । मैं एक ऐसी स्त्री से अवश्य आपका विवाह करा सकता हूँ जो धनवान सुन्दरी और एक कुलीन युवती है लेकिन दोष उसमें सिर्फ इतना ही है, और वह काफी बड़ा दोष है कि वह कुटिल, कर्कशा और बड़े ही उत्तेजित स्वभाव की है । क्रुद्ध होती है तो कोई सीमा नहीं रहती । ऐसी स्त्री के साथ मैं तो चाहे मेरी स्थिति इससे कहीं बहुत बुरी होती, सोने की एक पूरी खान के बदले भी विवाह करने को तैयार नहीं होता ।

पैट्रूशियो : शान्त रहिये हौटेंशियो ! आप सोने का मूल्य नहीं जानते । आप उस स्त्री के पिता का नाम बता दीजिये, बस इतना ही काफी है । चाहे वह हेमन्त ऋतु में गरजते बादलों की तरह क्यों न गरजने लगे लेकिन मैं अवश्य उसके साथ विवाह करूँगा ।

हौटेंशियो : उसके पिता का नाम बैप्टिस्टा मिनोला है । बड़ी ही सरल और उदार प्रकृति के मनुष्य हैं । उस लड़की का नाम कैथरिना मिनोला है । अपने कर्कश स्वर के लिए सारे पैडुआ में प्रसिद्ध है ।

पैट्रूशियो : मैं उसको तो नहीं जानता हूँ लेकिन उसके पिता से मेरी जानकारी है । वे मेरे पिता को अच्छी तरह जानते थे । हौटेंशियो ! अब तो जब तक उस स्त्री को देख न लूँगा तब तक नहीं सोऊँगा । इसलिए निस्संकोच होकर मैं आपसे कहता हूँ कि अगर आप मेरे साथ उधर चलने के लिये तैयार नहीं हैं तो फिर मुझे विवश होकर आपसे इस पहली मुलाकात के समय विदा लेनी पड़ेगी ।

ग्रामियो : जब तक इनकी यह सनक चलकर खत्म न हो जाय, श्रीमान्,

आप कृपा करके इन्हें जाने भी दीजिये । सच मानिये, जिस अच्छी तरह से मैं इनको जानता हूँ, वह भी पूरी तरह इनको पहचान गई तो यही सोचने लगेगी कि इनको भिड़कने से उसको बहुत कम लाभ होगा । वह चाहे इनको बीस तरह का धूर्त कहकर क्यों न पुकारे, उससे कुछ भी नहीं होगा । अगर एक बार इन्होंने शुरुआत कर दी तो ये ऐसे बदमाश हैं कि अगर इन्होंने भिड़कना शुरू किया तो मैं सच कहता हूँ श्रीमान्, टिकना मुश्किल हो जायेगा उसके लिए । मालूम है ये क्या करेंगे, मुँह पर एक हाथ मारेंगे तो सारी शक्ल बिगाड़ देंगे । एक बिल्ली को छोड़कर कुछ भी देखने के लिये आँखें नहीं बचेंगी । आप नहीं जानते हैं इन्हें श्रीमान् !

हौटेंशियो : पैट्रू शियो ! ठहरिये, मैं आपके साथ चलूँगा क्योंकि मेरी निधि भी तो बैप्टिस्टा के पास है । उसके पास मेरे जीवन का रत्न है, वही उसकी छोटी पुत्री बियांका जिसको उसने मुझसे दूर रख रखा है । मेरे प्रतिद्वन्द्वी उसके अन्य भी प्रेमी हैं जो कैथरिना के उन दोषों के कारण जो मैंने आपको बताये हैं, किसी के साथ उसका विवाह होना असम्भव मान चुके हैं, इसीलिए बैप्टिस्टा ने यह निश्चय कर लिया है कि जब तक उस कर्कशा और कुटिला कैथरिना को कोई वर नहीं मिल जायेगा तब तक कोई भी बियांका के पास तक नहीं पहुँच सकेगा ।

ग्रूमियो : कैथरिना कर्कशा और कुटिला ! सच, एक स्त्री के लिए इससे भी बुरे विशेषण और क्या हो सकते हैं ?

हौटेंशियो : तो क्या मेरे मित्र पैट्रू शियो मेरा इतना उपकार करेंगे कि अपनी वेशभूषा बदलकर संगीत में पारंगत एक अध्यापक बनकर बियांका को पढ़ाने के लिए उसके पिता वृद्ध बैप्टिस्टा के पास

जायें जिससे कम से कम मैं इस तरकीब से बियांका से मिलकर उससे अपना प्रेम तो प्रकट कर सकूँ और फिर छिपे ही छिपे उसकी इच्छा को अपने वश में करके उसके साथ विवाह कर सकूँ ।

[प्रेमियो तथा ल्यूसैशियो का वेश बदले हुए प्रवेश]

ग्रूमियो : यहाँ तो कोई धूर्तता नहीं है । बुढ़ों को चक्कर में डालने के लिये जवान लोग कैसे एक साथ मिलकर योजना बनाते हैं, देखा !

ओ, स्वामी ! देखिये आपके पास । कौन जा रहा है वहाँ ? हा ।

हौटैशियो : शान्त रहो ग्रूमियो । यह तो इस प्रेम में मेरा प्रतिद्वन्द्वी है । पैट्रूशियो ! थोड़ा ठहरिये ।

ग्रूमियो : यह तो प्रेम में उलझा कोई नवयुवक है ।

प्रेमियो : बहुत अच्छा, मैंने पुस्तकों की सूची को देख लिया है और सुनिये श्रीमान् ! प्रेम की उन सारी पुस्तकों को बँधवा भी अच्छी तरह दूंगा । कभी भी आप उनको देख सकते हैं, और सुनिये इनको छोड़कर और कोई भाषण उसको पढ़कर मत सुनाइये । समझ रहे हैं न आप मेरी बात ? जहाँ तक श्रीमान् बैप्टिस्टा की उदारता है वहाँ तक तो ठीक है, इसके अलावा मैं रकम देकर भी यह काम बना सकता हूँ । अपना कागज भी ले लीजिये, लाइये मैं इसे सुगन्धित कर दूँ क्योंकि जिसके पास यह जा रहा है वह इत्र से भी अधिक सुगन्धि से पूर्ण है । आप उसके सामने पढ़ेंगे क्या ?

ल्यूसैशियो : मैं कुछ भी उसके सामने पढ़ूँ लेकिन आप विश्वास रखिये कि अपने संरक्षक की तरह आपके पक्ष को वहाँ दृढ़ करूँगा ।

सम्भवतया आपसे अधिक कुशलता पूर्ण ढंग से मैं उससे इस तरह बातें करूँगा जैसे जब तक आप विद्वान् नहीं होते, कभी नहीं कर पाते। विश्वास रखिये, आपका सारा कार्य पूरी सफलता के साथ कर लूँगा।

ग्रेमियो : ओह यह विद्वत्ता ! यह भी कैसी चीज़ है !

ग्रूमियो : ओह यह बटेर, कैसा मूर्ख है यह !

पैट्रूशियो : चुप रहो।

हौटेंशियो : ग्रूमियो ! चुप रहो ! परमात्मा आपको बचाये ग्रेमियो।

ग्रेमियो : अरे, श्रीमान् हौटेंशियो ! आप अच्छे मिले ! क्या आप जानते हैं कि मैं किधर जा रहा हूँ ? मैं बैप्टिस्टा मिनोला के पास जा रहा हूँ। मैंने सुन्दरी बियाँका के लिए एक अध्यापक खोजने का वायदा किया था, सौभाग्य से मुझे यह नवयुवक मिल गया है। अपनी विद्वत्ता और व्यवहार के कारण यह उस सुन्दरी को पढ़ाने के लिये सर्वथा उपयुक्त है। काव्य सम्बन्धी तथा अन्य अच्छे-अच्छे ग्रन्थ इसने पढ़े हैं।

हौटेंशियो : यह ठीक रहा। मुझे भी एक सज्जन ऐसे मिल गए हैं जिन्होंने मुझसे मेरी मदद करने का वायदा कर लिया है। हमारी प्रिया को वे संगीत सिखायेंगे, इस तरह मैं भी अपनी प्यारी उस सुन्दरी बियाँका के प्रति अपना कर्त्तव्य पालन करने में तनिक भी पीछे नहीं रहूँगा।

ग्रेमियो : प्यारी तो वह मेरी है। इसको मेरे कार्य सिद्ध कर देंगे।

ग्रूमियो : इनका धन सिद्ध करेगा उसे तो।

हौटेंशियो : ग्रेमियो ! अपने प्रेम का प्रदर्शन करने का यह समय नहीं है। सुनिये, अगर आप मुझे निष्पक्ष और सच्चा मानें तो मैं आपसे ऐसी बात कहूँ जिसमें हम दोनों का भला है। अकस्मात्

ही मुझे एक ऐसे सज्जन मिल गए हैं जो उस कर्कशा कैथरिना से इस शर्त पर विवाह करने को तैयार हैं कि इनका मनपसंद दहेज उन्हें मिलना चाहिये। यह वायदा मैंने इनसे कर दिया था।

ग्रेमियो : इधर कह दिया और उसी तरह काम हो गया, यह तो ठीक है लेकिन हौटेंशियो ! क्या आपने इनको उस कर्कशा के सारे दोषों को भी बता दिया है ?

पैट्रू शियो : मैं जानता हूँ कि वह कुछ चिड़-चिड़ी, भगड़ालू किस्म की बकबक करने वाली स्त्री है। ठीक है श्रीमान् ! अगर यही दुर्गुण उसमें है तो मुझे उससे विवाह करने में किसी प्रकार की हानि नहीं है।

ग्रेमियो : क्या कह रहे हैं, कोई हानि नहीं है ? किस देश के निवासी हैं मेरे मित्र ?

पैट्रू शियो : बेरोना में मेरा जन्म हुआ था। वृद्ध ऐन्टोनियो का पुत्र हूँ। मेरे पिता का स्वर्गवास हो चुका है लेकिन फिर भी मेरा भाग्य मेरे साथ है। मेरा विश्वास है कि अच्छे दिन आयेंगे और बहुत दिनों तक रहेंगे।

ग्रेमियो : ओह श्रीमान्, ऐसी पत्नी के साथ तो जीवन बड़ा विचित्र होगा लेकिन परमात्मा के नाम पर अगर आपने इसका इरादा ही कर लिया है तो अवश्य मैं आपकी हर तरह से सहायता करूँगा। लेकिन, क्या आप इस जंगली बिल्ली से शादी करेंगे ?

पैट्रू शियो : क्या मैं जीवित रहूँगा ?

ग्रेमियो : क्या ये उस कर्कशा से शादी करेंगे ? अवश्य, नहीं तो मैं इसे फाँसी पर लटका दूँगा।

पैट्रू शियो : मैं इधर उसी इरादे से ही तो आया हूँ। क्या आप सोचते हैं कि थोड़ा शोरगुल मेरे कानों को डरा देगा ? क्या मैंने अपने समय

में शेरों को गरजते हुए नहीं सुना है ? मैंने तो तूफानी हवाओं के बीच क्रोध से भरे हुए जंगली सुअर की तरह समुद्र को भयानक आवाज़ करते हुए सुना है। युद्ध-भूमि में मैंने तोपों की भीषण गर्जना सुनी है और यह तो क्या, कौंधती बिजली और फटते हुए बादलों का भीषण भयावह नाद मैंने सुना है। आप मुझसे एक औरत की आवाज़ की बात कह रहे हैं, श्रीमान् ! मैंने युद्ध के बीच भेरी और नक्कारों के तुमुल नाद के साथ अश्वों को भीषण वेग से हिनहिनाते सुना है, और ऐसा तीव्र और भीषण स्वर मेरे कानों से आकर टकराया है कि इस औरत की आवाज़ तो उसके आधे से भी कम ऐसी होगी जैसे किसान की आग में अखरोट चटकता है।

छोड़िये यह सब कुछ, भूतों की कहानी सुनाकर तो बच्चों को डराइये।

ग्रूमियो : क्योंकि इनको किसी से डर नहीं लगता है।

ग्रेमियो : होटेंशियो ! सुनिये, इन सज्जन का यहाँ आना बड़ा अच्छा रहा। इसमें इनका और हमारा दोनों का भला है।

होटेंशियो : मैंने इनसे यह वायदा कर लिया है कि हम सब मिलकर जो कुछ भी इनके विवाह में खर्च होगा, उसको जुटा देंगे।

ग्रेमियो : हमें स्वीकार है बशर्ते ये उसके साथ शादी कर पायें।

ग्रूमियो : कैसा अच्छा हो कि एक शानदार दावत की बात पक्की हो जाये !

[स्वामी क रूप में ट्रेनियो और उसके साथ बॉइंडेलो का प्रवेश]

ट्रेनियो : श्रीमान्, परमात्मा आपकी रक्षा करे। क्या मैं यह पूछने का साहस कर सकता हूँ कि श्रीमान् बैप्टिस्टा मिनोला के घर को सीधा रास्ता कौन-सा है ?

बाँइंडेलो : वे ही सज्जन जिनकी दो पुत्रियाँ हैं, उन्हीं से मतलब है न आपका ?

ट्रेनियो : हाँ, वे ही बाँइंडेलो !

ग्रेमियो : सुनिये श्रीमान् ! आपका मतलब उस लड़की से—

ट्रेनियो : जी हाँ, मेरा मतलब उस लड़की और उसके पिता दोनों से है। आपको क्या मतलब इस सबसे ?

पैट्रू शियो : कृपा करके यह तो बताइये कि आपका मतलब उस लड़की से तो नहीं है जो सदा दूसरों को डाँटती फटकारती है ?

ट्रेनियो : भगड़ालू मनुष्यों के प्रति मेरा कोई आकर्षण नहीं है श्रीमान् ! बाँइंडेलो ! चलो यहाँ से।

ल्यूसैंशियो : अच्छी शुरुआत की ट्रेनियो।

हार्टैशियो : श्रीमान् ! जाने से पहले मेरी एक बात सुन जाइये। क्या आप जिस लड़की के बारे में बातें कर रहे हैं, उसके प्रेमी हैं ? बताइये हैं या नहीं ?

ट्रेनियो : और अगर मैं होऊँ तो श्रीमान् ! क्या यह किसी तरह का अपराध है ?

ग्रेमियो : जी नहीं। अब आप बिना कुछ आगे बोले यहाँ से चले जाइये।

ट्रेनियो : क्यों श्रीमान् ? क्या इन रास्तों पर आपका और मेरा समान अधिकार नहीं है ?

ग्रेमियो : लेकिन उस लड़की पर तो समान अधिकार नहीं है।

ट्रेनियो : किस कारण से ? कृपा करके बताइये तो।

ग्रेमियो : अगर आप जानना ही चाहते हैं तो इस कारण से कि वह ग्रेमियो की प्रिया है।

हौटेंशियो : इस कारण से कि वह हौटेंशियो की प्रिया है ।

ट्रेनियो : ज़रा ठहरिये श्रीमान् ! कुछ मुझे भी कहने की आज्ञा दीजिये और धैर्य से मेरी बात सुनिये । बैण्टिस्टा एक श्रेष्ठ और उदार वृत्ति के मनुष्य हैं । मेरे पिता से उनका परिचय था । अगर उनकी पुत्री इससे भी अधिक जैसी वह है, सुन्दरी होती तो चाहे उसके कितने भी प्रेमी होते लेकिन मैं भी उसका एक प्रेमी होता । लोडा की उस सुन्दरी पुत्री हैलिन के एक सहस्र प्रेमी थे, तो फिर बियाँका का एक प्रेमी और बढ़ जाय तो इसमें हानि क्या है । वह इसको स्वीकार कर लेगी । अब चाहे पैरिस अकेले अपनी ही सफलता की आशा में क्यों न आये, लेकिन ल्यूसेंशियो उस सुन्दरी का एक प्रेमी बनकर रहेगा ।

ग्रेमियो : अरे, इस तरह बातों में तो ये सज्जन हम सबको चुप करा देंगे ।

ल्यूसेंशियो : श्रीमान्, इनकी बात सुन लीजिये । मैं जानता हूँ, थोड़ी ही देर में ये अपने आपको उस घोड़े जैसा साबित करेंगे जो बहुत जल्दी थक जाता है ।

पेट्रू शियो : श्रीमान्, क्या मे यह पूछने का साहस कर सकता हूँ कि आपने कभी बैण्टिस्टा की पुत्री को देखा है ?

ट्रेनियो : जी नहीं, लेकिन सुना है कि उनके दो पुत्रियाँ हैं । एक तो कर्कशा के नाम से चारों तरफ प्रसिद्ध है और दूसरी अपने शील और सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है ।

पेट्रू शियो : श्रीमान्, वह पहली तो मेरे लिए है, उसे तो मेरे लिए छोड़ दीजिये ।

ग्रेमियो : श्रीमान् ! इस काम को तो महान् हरक्यूलीज़ के लिए छोड़

दीजिये और ऐलिसडीज़ की बारहों से भी अधिक रखिये इसे ।

पैट्रूशियो : श्रीमान् ! मेरी इस बात का पूरा विश्वास करिये कि बैप्टिस्टा की छोटी लड़की के पास, जिससे आप प्रेम करते हैं, आप कभी नहीं पहुँच सकते क्योंकि उसके पिता ने उसको अन्दर बन्द करके रखा है और तब तक वह किसी प्रेमी को उसके पास नहीं जाने देगा जब तक उसकी बड़ी लड़की का पहले विवाह न हो जाय । इसके बाद फिर छोटी मुक्त हो जायेगी ।

ट्रेनियो : श्रीमान्, फिर तो अगर आप ही वे व्यक्ति हैं जो अन्य प्रेमियों के साथ मुझको भी लाभ पहुँचाने आये हैं तो फिर इस कठिनाई को समाप्त करिये और बड़ी लड़की से विवाह कर लीजिये । इस तरह आपके कारण ही छोटी लड़की हमारे लिए मुक्त हो जायेगी, फिर जो भी इतना सौभाग्यशाली होगा कि उसे प्राप्त करे, वह कभी भी आपके प्रति कृतघ्न नहीं होगा ।

हौटेंशियो : श्रीमान् ! आप ठीक कहते हैं और मन में कल्पना भी अच्छी करते हैं । जब आप स्वयं ही एक प्रेमी बनते हैं तो फिर अवश्य आप भी एक रहेंगे लेकिन पहले हमारी तरह इन महाशय को संतुष्ट कर दीजिये जिनके ऊपर हम सबका दारोमदार है ।

ट्रेनियो : ठीक है श्रीमान् ! मैं इसमें किसी भी तरह पीछे नहीं रहूँगा । आज दुपहर के बाद बैठकर अगर आप चाहें, तो यह सारा कार्य सम्पन्न करा दें और फिर अपनी प्रिया के स्वास्थ्य के लिए खुलकर पियें और जैसे वैध रूप से प्रतिद्वन्द्वी करते हैं, अपनी पूरी शक्ति लगाकर अपने लिए प्रयत्न करें लेकिन फिर भी परस्पर मित्रों की तरह खायें-पियें और मस्त रहें ।

ग्रूमियो } : वाह ! क्या ही अच्छी बात है ! अच्छा तो अब चलना
 बाँइंडेलो }
 चाहिए ।

हौटेंशियो : बात तो वाकई अच्छी है, और काश ! यह पूरी भी हो जाये ।

पैट्रू शियो ! मैं तो आपका स्वागत करने के लिए रहूँगा ।

[प्रस्थान]

दूसरा अंक

दृश्य १

[कंथरिना तथा बियांका का प्रवेश]

बियांका : मेरी अच्छी बहिन ! अपने और मेरे प्रति ऐसा अन्याय मत करो कि तुम मुझे एक दासी बनाकर यहाँ रखो । मुझे इससे घृणा है । मेरे इन चमकीले दिखावटी कपड़ों को छोड़ दो, मैं स्वयं ही इन्हें उतारकर फेंक दूंगी । पेटीकोट तक सब कुछ उतार दूंगी और जैसा भी तुम कहोगी वैसा ही मैं करूँगी क्योंकि मैं बड़ों के प्रति अपने कर्तव्य को भली-भाँति जानती हूँ लेकिन मेरे हाथ खोल दो बहिन !

केटे : जितने भी तुम्हारे प्रेमी हैं, उनमें से किसको तुम सबसे अधिक चाहती हो, यह तो बताओ । धोखा मत देना, समझे ।

बियांका : विश्वास करो मेरी बहिन ! इन प्राणियों में से कोई भी ऐसा नहीं है जिससे मैं प्रेम कर सकूँ ।

केटे : बहिन ! झूठ बोलती हो तुम । क्या हौटेंशियो के प्रति तुम आकर्षित नहीं हो ?

बियांका : अगर तुम उसके प्रति आकर्षित हो बहिन, तो सच मानो मैं तुम्हारे लिए उससे जाकर वकालत करूँगी और इससे अवश्य ही वह तुम्हें मिल जायेगा ।

केटे : अच्छा, तो तुम्हारा आकर्षण धन के प्रति अधिक है । तुम तो अपने इस सौन्दर्य को बनाये रखने के लिए ग्रेमियो से विवाह करोगी ।

बियांका : तो क्या उसी के लिए तुम मुझसे ईर्ष्या करती हो ? तो फिर अब मुझे मालूम हुआ कि इतनी देर तक तुम सिर्फ मज़ाक कर रही थी मुझसे ।

बहिन मैं प्रार्थना करती हूँ, मेरे हाथ खोल दो ।

केटे : अगर यही मज़ाक है तो वह सब कुछ भी मज़ाक था ।

[उसको पीटती है ।]

[बैप्टिस्टा का प्रवेश]

बैप्टिस्टा : क्यों, क्यों केटे ! यह क्या धृष्टता है ? बियांका ! अलग खड़ी हो जाओ ! मेरी सीधी बच्ची रो रही है । जाओ अपना काम करो, इससे कुछ मत कहो । जो तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ती है उसको तुम क्यों तंग करती हो । शरम आनी चाहिये तुम्हें शैतान की बच्ची ! इसने तुमसे कब कोई बुरी बात कही ?

केटे : इसकी चुप्पी मेरी हँसी-सी उड़ा रही है । मैं इसका बदला लेकर रहूँगी ?

[बियांका के पीछे भागती है ।]

बैप्टिस्टा : क्या ! मेरी आँखों के सामने ? बियांका ! अन्दर चली जाओ ।

[प्रस्थान]

केटे : आप मेरे साथ क्या कसर छोड़ रहे हैं । ठीक है, अब मैं अच्छी तरह जान गई हूँ कि बियांका ही आपकी एकमात्र निधि है, और उसी के लिए आप पति खोजेंगे और मैं उसकी शादी के उत्सव

में नंगे पैरों नाचूंगी'। और चूँकि आप उससे प्रेम करते हैं इसलिये मरने के बाद नरक में जाकर बन्दर नचाऊँगी।' मुझसे अब मत बोलिये, जब तक मुझे बदला चुकाने का मौका नहीं मिल जायेगा तब तक मैं बैठकर रोऊँगी।

[प्रस्थान]

बैप्टिस्टा : क्या कभी भी किसी आदमी का हृदय इतना दुखी हुआ होगा जितना मेरा हो रहा है ?

अरे, यह कौन आ रहा है यहाँ ?

[ग्रेमियो और उसके साथ निम्न वर्ग के मनुष्य का-सा वेश बनाये ल्यूसेशियो, तथा पैट्रूशियो के साथ एक संगीतज्ञ बनकर हॉर्टेशियो का प्रवेश। ट्रेनियो के साथ बॉइडेलो आता है जिसके पास पुस्तकें और एक ल्यूट है।]

ग्रेमियो : श्रीमान्, बैप्टिस्टा को हमारा अभिवादन है।

बैप्टिस्टा : श्रीमान् ग्रेमियो ! मेरा भी अभिवादन स्वीकार करिये। परमात्मा आपको प्रसन्न रखे श्रीमान् !

पैट्रूशियो : आपको भी हमारी यही शुभ-कामना है श्रीमान् ! कृपा करके यह बताइये कि क्या कैथरिना नाम की आपकी कोई सुन्दर और गुणशील पुत्री है ?

बैप्टिस्टा : जी श्रीमान् ! कैथरिना नाम की मेरी ही पुत्री है।

ग्रेमियो : बड़े असभ्य हैं आप ! ठीक तरह से बातें करिये।

१. जब बड़ी बहिन कँवारी रहती थी और उससे पहले छोटी की शादी हो जाती थी तो उसकी शादी के समय बड़ी को नंगे पैरों नाचना पड़ता था। पश्चिम की यह एक बहुत पुरानी रीति थी।

२. पश्चिम का यह भी विश्वास था कि अविवाहित स्त्रियों को मरने के बाद नरक में ही स्थान मिलता है।

पैट्रू शियो : श्रीमान् ग्रेमियो ! आप मेरे साथ अन्याय करते हैं। चले जाइये यहाँ से।

मैं वैरोना का श्रेष्ठ पुरुष हूँ श्रीमान्, जो उसके सौन्दर्य, वाक्-कौशल, सरलता, शील-स्वभाव, नम्र व्यवहार आदि उसके अद्भुत गुणों की प्रशंसा सुनकर निस्संकोच रूप से एक अतिथि बनकर आपके यहाँ आया हूँ। जिस स्त्री के विषय में मैंने इतनी प्रशंसा सुनी है, उसे मैं स्वयं देखकर इसका निश्चय कर लेना चाहता हूँ। अपने उसके पास आसानी से पहुँचने के लिए मैं अपना आदमी आपको देता हूँ जो संगीत और गणित में पारंगत है और इन विषयों की उनको पूरी शिक्षा दे सकेगा। मेरे अनुमान से वह इन विषयों से पूरी तरह अनभिज्ञ हैं। आप उसको स्वीकार कर लीजिये श्रीमान्, नहीं तो आप मेरे प्रति अन्याय करेंगे। उसका नाम लीसियो है, मेंटुआ में उसका जन्म हुआ है।

बैटिस्टा : स्वागत है आपका श्रीमान्, और आपके लिए उनका भी लेकिन यह मैं जानता हूँ कि मेरी पुत्री कैथरिना से आप विवाह नहीं कर सकेंगे, यह और भी मेरे हृदय को दुःखी कर रहा है।

पैट्रू शियो : तो क्या आप अपनी पुत्री को अपने से अलग करना नहीं चाहते या आपको मेरा-उसका साथ पसन्द नहीं है ?

बैटिस्टा : मुझे गलत मत समझिये। जो कुछ मैं देखता हूँ वही मैं कहता हूँ। यह बताइये, आप कहाँ से आये हैं ? किस नाम से मैं आपको पुकारूँ ?

पैट्रू शियो : पैट्रू शियो कहते हैं मुझको। सारी इटली जानती है मेरा नाम। मेरे पिता का नाम एन्टोनियो है।

बैटिस्टा : मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ। उनके लिये आपका स्वागत है श्रीमान् यहाँ।

प्रेमियो : अपनी बात रोककर पैट्रू शियो ! अब हमें भी कुछ बोलने दो जो अत्यंत दीन प्रार्थी हैं । बस अब । आप तो, सच, बहुत ही निस्संकोच हैं ।

पैट्रू शियो : ओह, क्षमा करिये श्रीमान् प्रेमियो ! आपकी बात बड़ी खुशी से मानूंगा मैं ।

प्रेमियो : मुझे इसमें संदेह नहीं है श्रीमान् । लेकिन इस विवाह के लिए आप स्वयं को अभिशप्त कहेंगे ।

श्रीमान् ! मुझे विश्वास है कि जो चीज मैं आपको दे रहा हूँ उसके लिये आप मेरा अहसान मानेंगे । जितने भी और हैं उनकी अपेक्षा मैंने ही आपकी अधिक सहायता की है । मैं आपके पास इन विद्वान् युवक को लाया हूँ जो रहीम्स में बहुत समय तक अध्ययन कर चुके हैं और जो ग्रीक, लैटिन तथा अन्य भाषाओं में उतने ही पारंगत हैं जितने दूसरे संगीत और गणित में हैं । इनका शुभ नाम केम्बियो है । कृपा करके इनको अपने यहाँ रख लीजिये ।

बैण्टिस्टा : हजार बार आपको धन्यवाद है श्रीमान् प्रेमियो, श्रेष्ठ केम्बियो ! आपका भी मैं स्वागत करता हूँ । मेरे विचार से आप परदेसी हैं । क्या मैं आपके यहाँ आने का कारण आपसे पूछने का साहस कर सकता हूँ ?

ट्रेनियो : क्षमा करिये श्रीमान् ! साहस करके तो मैं एक परदेसी होते हुए भी इस शहर में आया हूँ । मेरे आने का कारण उस सुन्दरी और गुणवती बियांका का प्रेमी बनना है । इस सम्बन्ध में मैं आपके दृढ़ निश्चय की बात भी जानता हूँ कि आप पहले बड़ी लड़की की शादी करना चाहते हैं । मैं तो आपसे केवल इतना ही चाहता हूँ कि मेरे वंश और कुल के बारे में जानकर आप

मुझे भी बियांका से विवाह करने के लिये लालायित प्रेमियों के बीच सम्मिलित कर लीजिये । जिस तरह अन्य बियांका से प्रेम करने के लिए उसके पास आ-जा सकते हैं, वही स्वतन्त्रता मुझे भी प्रदान कर दीजिये । आपकी लड़कियों की पढ़ाई के लिये मैं आपको यह छोटा-सा एक वाद्य-यन्त्र और ग्रीक तथा लैटिन की पुस्तकों का यह एक पैकिट देता हूँ । अगर आप इन्हें स्वीकार कर लें तो इनका मूल्य बहुत है ।

बैटिस्टा : आपका नाम ल्यूसेशियो है । अच्छा, तो कृपया बताइये तो कहाँ से आये हैं आप ?

ट्रेनियो : मैं विसेशियो का पुत्र हूँ और पीसा का निवासी हूँ ।

बैटिस्टा : वे तो पीसा के बड़े जबरदस्त आदमी हैं, मैंने उनके बारे में यही सुना है और मैं उनको अच्छी तरह जानता भी हूँ । आपका बहुत स्वागत है श्रीमान् । आप यह 'ल्यूट' ले लीजिये और आप इन पुस्तकों को । चलिये अभी अपनी शिष्याओं को चलकर देख लीजिये ।

कोई है अन्दर ?

[एक सेवक का प्रवेश]

देखो, इन सज्जनों को मेरी पुत्रियों के पास ले जाओ और कहना उनसे कि ये उनके शिक्षक हैं । इनके साथ अच्छा व्यवहार करें वे, कह देना उनसे ।

[हौटेशियो, ल्यूसेशियो और बॉइंडेलो के साथ सेवक का प्रस्थान]

चलिये हम थोड़ा बाग की तरफ चलें, इसके बाद खाना खायेंगे । आपका यहाँ पूरा स्वागत है, लेकिन मैं यह प्रार्थना आप सभी से अवश्य करता हूँ कि अपने बारे में आप स्वयं अच्छी तरह सोच लें ।

पैट्रू शियो : श्रीमान् बैण्टिस्टा ! मुझे किसी कार्यवश जल्दी है और इसीलिए मैं हर एक दिन आपके पास इस सम्बन्ध में नहीं आ सकता । आप मेरे पिता को अच्छी तरह जानते थे और उनके द्वारा आप मुझे भी जान गए । अब उनकी उस सारी सम्पत्ति का एकमात्र उत्तराधिकारी मैं ही रह गया हूँ जिसको मैंने बढ़ाया अवश्य है, किसी तरह कम नहीं किया है । अब आप मुझे बताइये कि अगर मैं आपकी पुत्री के साथ विवाह करूँ तो आप उसके साथ क्या दहेज देंगे ?

बैण्टिस्टा : मेरी मृत्यु के पश्चात् जितनी भी मेरी भूमि है उसका आधा भाग और साथ में बीस हजार 'क्राउन्स' ।

पैट्रू शियो : उस दहेज के बदले में भी, अगर मैं ही उससे पहले इस संसार से उठ गया, उसकी विधवावस्था के लिए यह विश्वास दिलाता हूँ कि मेरी सारी सम्पत्ति पर उसका अधिकार होगा । इसलिये अब विस्तार से हमारे आपस का समझौता लिख लिया जाय और एक दूसरे के हाथ में वह रहे ।

बैण्टिस्टा : लेकिन यह तो तभी की बात है जब आप खास चीज यानी उसका प्रेम प्राप्त कर लें क्योंकि वही तो सब कुछ है ।

पैट्रू शियो : वह कोई बात नहीं है । पिता ! मैं आपसे सच कहता हूँ, जितना उसका दिमाग चढ़ा हुआ है उतने ही बिगड़े दिमाग का मैं हूँ और जहाँ दो आग की लपटें आकर मिलती हैं वहाँ जो भी उनके बीच आकर उनकी भूख मिटाता है, जलकर खाक हो जाता है । यद्यपि थोड़ी ही हवा से थोड़ी आग काफी भड़क उठती है लेकिन जब तूफान चलेगा तो वह आग और सभी कुछ को उड़ाकर ले जायेगा । आप देखना, जैसे ही मैं उसके पास पहुँचा नहीं कि वह मुझे आत्मसमर्पण कर जायेगी, क्योंकि मैं बड़ा अजीब

बिगड़ा हुआ आदमी हूँ और बच्चे की तरह शादी करना नहीं जानता हूँ ।

बैण्टिस्टा : ईश्वर करे कि आप इस कार्य में सफल हों और किसी तरह की कठिनाई आपके सामने न आये ! लेकिन एक बार कुछ कटु शब्दों के लिए तो तैयार हो ही जाइये ।

पेट्रू शियो : श्रीमान् ! जैसे बड़े से बड़े भ्रंशावात पर्वतों को नहीं हिला सकते उसी तरह कोई भी कटु शब्द मुझे विचलित नहीं कर सकते ।

[**हौटेंशियो** अपना फूटा सिर लिये हुए आता है ।]

बैण्टिस्टा : क्यों मित्र ! आप इतने पीले कैसे दिखाई दे रहे हैं ?

हौटेंशियो : अगर मैं पीला दिखाई देता हूँ, तो सच उसका कारण डर है ।

बैण्टिस्टा : तो क्या मेरी पुत्री अच्छी संगीतज्ञ बन जायगी ?

हौटेंशियो : मेरे विचार से तो वह इससे पहले एक सैनिक बनेगी ।
लोहे का और उसका साथ हो सकता है लेकिन ल्यूट का कभी नहीं ।

बैण्टिस्टा : तो क्या आप उसको अपनी ल्यूट की तरफ नहीं भुका पाये ?

हौटेंशियो : जी नहीं । उसने ही मेरे ऊपर ल्यूट को भुका दिया है ।
मैंने तो उससे सिर्फ इतना ही कहा था कि गलत तरीके से तारों को उसने पकड़ रखा था और फिर मैंने उसके हाथ को पकड़कर ठीक तरह उँगली रखना बताया था तो वह बिलकुल शैतान की तरह बिगड़ कर कहने लगी—तुम इनको तैश' कहते हो ? आग

१. Frets : यहाँ पन का प्रयोग हुआ है । इस शब्द के दो अर्थ हैं—वाद्ययन्त्र के तार और तैश यानी क्रोधावेश । अंग्रेजी में एक ही शब्द द्वारा संवाद के सौन्दर्य को निभा लिया गया है, हमें तार की जगह तैश लाकर निभाना पड़ा है, इसमें कारण हमारी भाषा की सीमा है ।

लगा दूंगी मैं इनमें और बस उसी के साथ उसने ल्यूट को मेरे सिर पर दे मारा जिससे ल्यूट टूटकर मेरे सिर में फँस गया। कुछ समय के लिए तो मैं बिलकुल आश्चर्य में ऐसे खड़ा रहा जैसे किसी लकड़ी के ढाँचे में कोई आदमी फँसा हुआ खड़ा रहता है और ल्यूट के आरपार देखता रहा जबकि यह मुझे बदमाश, बाजे वाला, अनाड़ी और इसी तरह की बीसों गालियाँ देने लगी। मेरे साथ दुर्व्यवहार करने के लिए जितनी भी बुरी सेबुरी गालियाँ उसे याद थीं, सब उसने दे डालीं।

पैट्रू शियो : सच, यह तो बड़ी मजेदार औरत है। अब तो पहले की अपेक्षा उसके प्रति मेरा आकर्षण दस गुना और बढ़ गया है। ओह ! अब तो उससे बातें करने की लालसा हो रही है मेरे मन में।

बैप्टिस्टा : चलिये मेरे साथ और इतने निराश मत होइये। मेरी छोटी बच्ची को सिखाते रहिये। वह तो बड़े ही कृतज्ञ स्वभाव की है और सीखने में भी तत्पर है।

श्रीमान् पैट्रू शियो ! क्या आप भी हमारे साथ चलेंगे या मैं केटे को ही आपके पास भेज दूँ ?

[प्रस्थान। पैट्रू शियो रुक जाता है।]

पैट्रू शियो : अवश्य, कृपया यही करिये। मैं यहीं उससे मिलूंगा और जब वह आयेंगी तो पूरे जोश के साथ अपना प्रेम उनको प्रदर्शित करूँगा। कहते हैं कि वह आकर ही मुझपर गालियों की बौछार लगाना शुरू कर देगी, उस समय मैं उससे कहूँगा कि वह तो कोयल की तरह मधुर स्वर से गाती है। यह भी कहते हैं कि वह अपनी आँखें क्रोध से लाल-पीली कर लेती है, उस समय मैं

कहूँगा कि वह तो ऐसी सुन्दर लग रही है जैसे गुलाब के फूल ओस से धुलकर प्रातःकाल लगते हैं ।

अगर वह आकर चुप रहेगी और एक भी शब्द नहीं बोलेगी तो मैं यह कहकर कि उसका स्वर तो बड़ा प्रभावशाली है, उसको बोलने के लिए प्रेरित करूँगा । अगर उसने मुझसे भाग जाने के लिए कहा तो इसके लिये मैं उसको धन्यवाद दूँगा जैसे कि मानो उसने मुझे अपने साथ एक हफ्ते रहने का निमंत्रण दिया है । अगर वह शादी करने को मना करेगी तो मैं उस दिन तक प्रतीक्षा करूँगा जबकि इसकी मुनादी कराकर मैं उसके साथ शादी न कर सकूँ । लेकिन वह तो यहीं आ रही है और पैट्रू शियो ! अब बोलो ।

[कैथरिना का प्रवेश]

नमस्ते केटे ! आपका शायद यही नाम है ? मैंने यही सुना है ।

केटे : ठीक सुना है आपने लेकिन आप कुछ बहरे मालूम देते हैं । जो मेरे बारे में बातें करते हैं, वे मुझे कैथरिना कहते हैं ।

पैट्रू शियो : यह तो आप भूठ बोलती हैं । सच, आपको तो सिर्फ केटे कहकर ही पुकारा जाता है । कभी तो सुन्दरी केटे और कभी कर्कशा और कुटिला केटे, लेकिन ईसाई-जगत् की सबसे अधिक सुन्दरी केटे ! मेरी सबसे मजेदार केटे ! क्योंकि सभी मजेदार चीजें केटे होती हैं, केटे-हाँल की केटे ! मेरे सुख की रानी केटे ! यह मेरी ओर से स्वीकार करिये । प्रत्येक शहर में मैंने आपके नम्र व्यवहार की प्रशंसा सुनी है । आपके गुणों की और सौन्दर्य की

१. Cates : यहाँ पन (द्वयर्थक शब्द) का प्रयोग हुआ है । केटे एक बार तो कैथरिना के लिए आया है दूसरी बार मजेदार चीजों के लिए आता है । 'स्पेलिंग' में अन्तर है लेकिन ध्वनि एक है । इसी आधार पर पैट्रू शियो यह मजाक कर लेता है ।

जो प्रशंसा मैंने सुनी है, उससे तो कहीं अधिक ही आप में मैंने पाया है, इसीलिए आपके साथ विवाह करना चाहता हूँ । मेरा दिल आपकी ओर खिंचा हुआ है ।

केटे : अच्छे वक्त में खिंचकर आ गए । जो आपको खींचकर यहाँ तक लाया है, वही आपको यहाँ से हटा ले जायेगा । मैं पहली बार ही आपके बारे में यह जान पाई कि आप इस तरह खींचकर इधर-उधर हटाये जाने लायक हैं ।

पेट्रू शियो : खींचकर हटाई जाने वाली क्या चीज़ होती है ?

केटे : एक वह स्टूल जिस पर मिस्त्री काम करता है ।

पेट्रू शियो : यह बाजी तो आपने मार ली । आइये मेरे ऊपर बैठ जाइये ।

केटे : गधे लादते हैं बोभा, वही तुम हो ।

पेट्रू शियो : बोभा तो औरतों को लादना पड़ता है जिसको बच्चे को जन्म देकर ही वे उतार पाती हैं, और वही तो आप हैं ।

केटे : अगर मुझसे तुम्हारा मतलब है, तो मैं तुम्हारी जैसी तो बुढ़ी नहीं हूँ ।

पेट्रू शियो : खेद है अच्छी केटे ! मैं आपके ऊपर यह जानकर बोभा नहीं डालूंगा कि आप बड़ी हलकी-फुलकी युवती हैं ।

केटे : तुम जैसे गँवार प्रेमी की पकड़ में आने के लिए तो बहुत हलकी हूँ और भारी उतनी हूँ जितना मेरा वजन होना चाहिये ।

पेट्रू शियो : होगा, होगा ! बजाती रहो अपना राग ।

केटे : बहुत अच्छे, और एक बेवकूफ की तरह ।

पेट्रू शियो : ओ धीमे उड़ने वाली कबूतरी ! क्या एक बाज़ तुझे भपटकर ले जायेगा ?

केटे : कबूतरी जो कि भुनगे' को पकड़ लेती है ?

पैट्रू शियो : आओ बैठो, तुम तो वाकई भनभनाने लगी । बहुत नाराज़ मालूम देती हो ।

केटे : अगर मैं भनभनाती हूँ तो फिर मेरे डंक से बचते रहना ।

पैट्रू शियो : मेरे पास तो उसका इलाज है । तोड़ डालूंगा इस डंक को ।

केटे : तभी न जब कि तुम जैसे बेवकूफ को उसका पता लग जायेगा कि वह कहाँ है ।

पैट्रू शियो : बरं का डंक कहाँ होता है, यह कौन नहीं जानता है । उसके पीछे होता है ।

केटे : उसकी ज़बान मैं है वह ।

पैट्रू शियो : किसकी ज़बान ?

केटे : तुम्हारी, अगर तुम पीछे की बातें करते हो तो । अच्छा, विदा ।

पैट्रू शियो : क्या ! तुम्हारी पूँछ में मेरी ज़बान । न, न, फिर समझो केटे ! मैं एक शरीफ़ आदमी हूँ ।

केटे : जाँच करूँगी मैं इसकी ।

[वह उसको पीटन लगती है ।]

पैट्रू शियो : मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ, अगर तुमने फिर हाथ उठाया तो फिर मेरी मार भेलना ?

केटे : इस तरह तो तुम्हें अपनी शराफ़त से हाथ धोना पड़ेगा और

१. Buzzard : इस शब्द को लेकर पन (द्व्यर्थक शब्द) का प्रयोग किया गया है । इसके तीन अर्थ हैं—(१) बेवकूफ (२) बाज (३) भुनगे । हमने भावार्थ देकर हो संवाद को बढ़ाया है । इसी प्रकार आगे tail, tale आदि को लेकर पन चलता है, उसका भी भावार्थ देकर अपनी सीमाओं के भीतर हमने संवाद की गति को सुस्थिर रखन का प्रयत्न किया है ।

शराफत के सबूत में तुम जो यह कोट पहनते हो, वह भी तुम्हें उतारना पड़ेगा क्योंकि अगर तुमने मुझपर हाथ उठाया तो तुम एक शरीफ आदमी नहीं कहलाओगे और इस हालत में वह कोट भी तुम्हारे हाथ नहीं रहेगा।

पैट्रू शियो : तुम तो केटे ! एक मुनादी पीटने वाली हो । मेरा भी नाम अपनी किताबों में दर्ज कर लो।

केटे : तुम्हारे सिर का ताज कौन-सा है, अवारा औरत के पति का ?

पैट्रू शियो : बिना ताज का मुर्गा हूँ, इसीलिये केटे मेरी मुर्गी बनेगी।

केटे : मेरा कोई मुर्गा नहीं है। तुम तो एक डरपोक मुर्गे की तरह बोलते हो।

पैट्रू शियो : आओ केटे ! इतना आवेश और कटुता तुम्हारे चेहरे पर नहीं होना चाहिये।

केटे : जब मैं किसी बिगड़े स्वभाव के आदमी को देखती हूँ तो ऐसा हो जाना तो मेरे लिए स्वाभाविक है।

पैट्रू शियो : यहाँ तो कोई ऐसा आदमी नहीं है, फिर तुम ऐसी कठोर मुद्रा में क्यों हो ?

केटे : क्यों नहीं है ? ऐसा आदमी यहाँ है।

पैट्रू शियो : फिर दिखाओ उसको।

केटे : अगर मेरे पास शीशा होता तो दिखाती।

पैट्रू शियो : क्या, क्या तुम्हारा मतलब मेरे चेहरे से है ?

केटे : खूब निशाना मारा ऐसे नवयुवक के।

पैट्रू शियो : सेन्ट जॉर्ज की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैं तुम्हारे लिए तो बहुत छोटा हूँ।

केटे : लेकिन फिर भी अभी से तुम्हारे शरीर पर झुर्रियाँ पड़ने लगीं।

पेट्रूशियो : ये तो चिन्ताओं के कारण हैं ।

केटे : मैं तो चिन्ता नहीं करती ।

पेट्रूशियो : सुन लो केटे ! सच कहता हूँ, तुम इस तरह बचकर मुझसे नहीं निकल सकतीं ।

केटे : अगर मुझे यहाँ ठहरना पड़ा, तो फिर तुम मेरा गुस्सा देखोगे । जाने दो मुझे ।

पेट्रूशियो : नहीं, बिलकुल नहीं, मैं देखता हूँ कि तुम तो बहुत ही अधिक नम्र स्वभाव की हो । मुझसे लोगों ने कहा था कि तुम बड़ी ही चिड़चिड़ी, अजीब ऊबड़खाबड़ स्वभाव की घृणित स्त्री हो, लेकिन अब मुझे वह सब कुछ निरा भूठ लगता है । तुम तो बड़ी विनीत और अच्छे खुले स्वभाव की हो लेकिन बोलती कम हो । वैसे वसंत ऋतु के फूलों की तरह तुम मधुर हो । तुम तो कभी न किसी पर क्रुद्ध हो सकती हो और न किसी की ओर संदेह-भरी दृष्टि से देख सकती हो और न कभी इस तरह अपना ओठ काट सकती हो जैसे क्रोधावेश में आकर औरतें करती हैं । बातचीत में भी तुम कभी बीच में टोककर विरोध नहीं करतीं बल्कि तुम इतनी सुशील और नम्र हृदय की हो कि अपने प्रेमियों का स्वागत करती हो, उनके प्रति प्रेम और सहृदयता का व्यवहार करती हो । ऐसे सरल और सीधे स्वभाव की केटे के लिए दुनिया वाले क्यों कहते हैं कि वह लँगड़ाती है ? ओह, भूठी अफवाह उड़ाने वाली यह कमीनी दुनिया । केटे तो ताड़ की टहनी की तरह सीधी और पतली है और सुपारी का-सा भूरा रंग है और फलों से भी अधिक मधुर है । ओह, एक बार मुझे चलकर तो दिखा दो, तुम तो बीच में रुकती नहीं हो ।

केटे : चला जा बेवकूफ ! किस पर हुक्म चला रहा है तू ?

पैट्रू शियो : क्या पवित्रता की देवी डायना से एक कुंज कभी भी इतना सुशोभित हुआ जितना केटे की शानदार वेशभूषा के कारण यह घर शोभा दे रहा है। तुम डायना वन जाओ और उसे केटे बन जाने दो, तब केटे तो बिल्कुल पवित्र बनकर रहे और डायना खेलने कूदने वाली।

केटे : इतनी अच्छी बोलचाल तुमने कहाँ से सीखी है ?

पैट्रू शियो : इस धारा-प्रवाह की जननी तो मेरी बुद्धि है।

केटे : बुद्धिमान् जननी है, नहीं तो पुत्र पूरा बेवकूफ निकलता।

पैट्रू शियो : क्या मैं बुद्धिमान् नहीं हूँ ?

केटे : जरूर, गरमाये रखो अपने आपको इससे।

पैट्रू शियो : मेरी प्यारी कैथरिना ! गरमाना तो मैं तुम्हारे बिस्तर में चाहता हूँ इसलिए इस सारी बातचीत को अलग हटाकर मैं अब स्पष्ट रूप से कहता हूँ, सुनो, तुम्हारे पिता ने यह स्वीकार कर लिया है कि तुम मेरी पत्नी बनकर रहोगी। तुम्हारा दहेज भी तय हो गया है, इसलिए अब तुम हाँ करो या ना, मैं तो तुम्हारे साथ शादी करके रहूँगा। तुम्हारे लिए मैं ही पति निश्चित हुआ हूँ क्योंकि इस प्रकाश में जब मैं तुम्हारे सौन्दर्य को देखता हूँ तो मेरा चित्त तुम्हारी ओर आकर्षित होता है। इसीलिए मुझे छोड़कर तुम्हारी और किसीसे शादी नहीं हो सकती।

[बैटिस्टा, प्रेमियो तथा ट्रेनियो का प्रवेश]

केटे ! मैं तो तुम्हें पालकर सीधा करने के लिए पैदा ही हुआ हूँ। जैसे अन्य स्त्रियाँ होती हैं उन्हीं की तरह मैं तुम्हें कर्कशा से सुशील और नम्र बनाना चाहता हूँ। वह देखो, तुम्हारे पिता आ रहे हैं, अब शादी के लिये मना मत करना क्योंकि मैं तो कैथरिना को अपनी पत्नी बनाकर ही रहूँगा, यही मेरा दृढ़ निश्चय है।

बैण्टिस्टा : श्रीमान् पैट्रू शियो ! कहिये, मेरी पुत्री के साथ आपका कुछ समझौता हुआ ?

पैट्रू शियो : बहुत अच्छी तरह श्रीमान् ! बहुत अच्छी तरह । मेरा समझौता न होता, यह तो असम्भव-सी बात थी ।

बैण्टिस्टा : क्यों बेटी कैथरिना ! तुम कैसी हो ? क्या अभी भी अपने आवेश में हो ?

कटे : तुम मुझे बेटी कहते हो ? सच कहती हूँ, अब तुमने इस सिरफिरे आधे पागल के साथ मेरी शादी की बात तय करके अपना सच्चा पितृ-प्रेम दरसाया है । एक बदमाश, लुच्चा पागल है जो बार-बार सौगन्ध खाकर मामले को साफ करने की कोशिश करता है ।

पैट्रू शियो : पिता ! बात सच यह है कि आपने और पूरी दुनिया ने जो इनके बारे में बुरी-बुरी बातें कही थीं, वे सब निराधार हैं । अगर कभी ये कर्कशा हो जाती है तो वह तो काम निकालने की इनकी सिर्फ एक चाल है । नहीं तो ये कभी भी इतनी चिड़चिड़ी नहीं हैं बल्कि सफेद कबूतर की तरह शान्त और मृदु स्वभाव की हैं । कौन कहता है कि ये उत्तेजित स्वभाव की हैं, ये तो प्रभात काल की तरह शान्त और गम्भीर हैं । जहाँ तक धैर्य का प्रश्न है, ये एक दूसरी ग्रेसल' हैं और चरित्र की पवित्रता की दृष्टि से रोम की ल्यूक्रीसी से किसी तरह कम नहीं हैं । अन्त में इस सख्खा निष्कर्ष यह है कि हमारे बीच पूरी तरह समझौता हो चुका है

१. Grissel : 'पेशेन्ट ग्रेसिला' की कहानी 'केन्टावरी टेल्स' में आती है जिसे ब्राक्सफोर्ड का क्लर्क कहता है । वह स्त्री बड़ी ही धैर्यवती थी । पति से अपमानित होती थी और हर समय उसकी उपेक्षा, तिरस्कार और क्रोधावेश को सहती रहती थी लेकिन कभी धैर्य नहीं खोती थी ।

और रविवार को हमारी शादी का दिन है ।

केटे : इस रविवार को तो मैं तुम्हें फाँसी के तख्ते पर लटका हुआ देखूंगी ।

प्रेमियो : सुनिये पैट्रू शियो ! ये तो पहले आपको फाँसी के तख्ते पर लटकायेंगी ।

ट्रेनियो : क्या यही आपका समझौता और आपकी सफलता है ? अच्छा तो फिर विदा ।

पैट्रू शियो : धैर्य रखिये श्रीमान् ! शादी तो इससे मुझे करनी है और अगर हम दोनों राजी हैं तो फिर आपको इससे क्या है ? अकेले में हम दोनों के बीच यह तय हो चुका है कि यह समुदाय के बीच तो अपना वही कर्कशा का रूप रखेंगी । आप लोग विश्वास करें तो सच कहता हूँ, यह मुझसे बहुत प्यार करती है । ओह, मेरी केटे तो सबसे अधिक शीलवती है । मेरी गरदन से लिपट गई और एक पर एक चुम्बनों की लड़ी-सी लगाती हुई बारबार सौगन्ध खाने लगी । सच कहता हूँ एक क्षण में ही इसने मुझे अपने वश में कर लिया । आप सभी तो अभी इस मामले में अबोध हैं । यह एक देखने की बात है कि अकेले में किस तरह स्त्री-पुरुष एक दूसरे से हिलमिल जाते हैं । एक डरपोक बेवकूफ ही किसी औरत को कर्कशा और कुटिला बनाता है ।

मुझे अपना हाथ दो केटे । शादी के लिए कपड़े खरीदने वेनिस जा रहा हूँ मैं ।

पिता ! आप दावत का इन्तजाम कर लें और सभी सज्जनों को निमन्त्रित कर दें । मुझे पूरा विश्वास है कि मेरी कैथरिना बहुत अच्छी हो जायगी ।

बैन्टिस्टा : मैं नहीं जानता कि मैं क्या कहूँ इस समय । अपने हाथ मुझे

दो । परमात्मा तुम्हें प्रसन्न रखे पैट्रूशियो ! अच्छा जोड़ा है ।

प्रेमियो } : हम भी अपनी शुभ कामनाएँ देते हैं । शादी के वक्त हम
ट्रेनियो }

जरूर आयेंगे ।

पैट्रूशियो : पिता, मेरी प्रिया और सभी सज्जनों से विदा लेता हूँ मैं ।

मैं बेनिस जाता हूँ । रविवार निकट आ रहा है । अँगूठियाँ, अच्छे कपड़े तथा अन्य सभी वस्तुएँ हमारे पास होंगी ।

केटे ! एक बार मुझे प्यार तो करो । इसी रविवार को तो हमारी शादी हो जायगी ।

[पैट्रूशियो और कैथरिना का प्रस्थान]

प्रेमियो : कभी भी क्या इस तरह अकस्मात् ही कोई शादी तय हुई है ?

बैण्टिस्टा : श्रीमान् ! अब मैं एक व्यापारी की हैसियत से साहस करके इस सौदे को करता हूँ ।

ट्रेनियो : यह चीज तो आपके पास बेकार पड़ी थी, अब इस सौदे में या तो इससे फायदा होगा या यह समुद्र में नष्ट हो जायेगी ।

बैण्टिस्टा : जिस फायदे की मुझे खोज है, वह तो इस जोड़े के मिलने से मुझे मिल गया ।

प्रेमियो : निस्संदेह ! लेकिन उसने भी बड़ी आसानी से काबू में कर लिया उसे । अब बैण्टिस्टा ! अपनी छोटी पुत्री के बारे में सोचिये । इसी दिन की तो आशा लगाये हम बैठे थे । मैं आपका पड़ौसी हूँ और बियांका का सबसे पहला प्रेमी मैं ही था ।

ट्रेनियो : और मैं बियांका से इतना प्रेम करता हूँ कि शब्द उसका वर्णन नहीं कर सकते । उसका अनुमान तो आप ही अपने मस्तिष्क में लगा सकते हैं ।

प्रेमियो : लड़के ! जितना मैं प्यार करता हूँ उतना तुम नहीं कर सकते ।

ट्रेनियो : बुड़ढे ! अब तेरा प्यार तो जम चुका ।

प्रेमियो : लेकिन तेरा अभी उबाल खा रहा है । पीछे हट बेवकूफ लड़के ! उम्र ही तो आदमी को पकाती है ।

ट्रेनियो : लेकिन लड़कियों की आँखों में तो लड़के ही जगह पाते हैं ।

बैप्टिस्टा : शान्त रहिये श्रीमान् ! मैं इस भगड़े को तय किये देता हूँ । कोई काम करने पर ही उसका इनाम मिलना चाहिये ; इसलिए आप दोनों से मेरा कहना है कि जो भी मेरी पुत्री को सबसे अधिक दहेज का आश्वासन दे देगा वही उसके प्रेम का अधिकारी होगा ।

कहिये श्रीमान् प्रेमियो ! आप क्या दे सकते हैं ?

प्रेमियो : पहले तो आप इस शहर के अन्दर मेरे मकान को जानते हैं जो सुवर्ण-पत्रों से सुसज्जित है और जहाँ सुन्दर बर्तनों का प्रबन्ध है जिनमें पानी डालकर वह अपने कोमल हाथों को धो सके । सभी पर्दों पर 'टायरियन' ज़री का काम हो रहा है और मुद्राएं रखने के लिए हाथी दाँत के सन्दूक हैं । साइप्रस के सन्दूकों में भी जड़ावट हो रही है । कीमती कपड़े, तम्बू, बढ़िया लिनन, मोतियों से जड़े तुर्की गद्दे, चारों तरफ की गोठ वेनिस के सोने से सजी हुई, पीतल और काँसे के बर्तन यानी घर के लिए जितनी भी चीजें आवश्यक होती हैं वे सभी कुछ मेरे घर में हैं । इसके बाद खेत पर मेरी सौ गायें हैं जिनका कढ़ाव भर कर दूध होता है, एक सौ बीस मेरे मज़बूत डील-डौल वाले बैल हैं जो खिरक में खड़े रहते हैं, इनके अलावा और सभी आवश्यक वस्तुएँ हैं । मेरी उम्र कुछ अधिक हो गई है, यह मैं

स्वीकार करता हूँ, इसीलिये कहता हूँ कि मान लो अगर कल मैं इस दुनिया में न रहूँ तो मेरा यह सब कुछ उसका होगा और जब तक मैं जीवित हूँ तब तक वह सिर्फ मेरी बनकर रहेगी।

ट्रेनियो : यह अधिक कुछ नहीं, मेरी बात सुनिये श्रीमान् ! मैं अपने पिता का इकलौता पुत्र और उनकी सम्पत्ति का एकमात्र उत्तराधिकारी हूँ। अगर आप अपनी पुत्री का विवाह मेरे साथ कर दें तो मैं पीसा के अन्दर ऐसे तीन या चार मकान उसके अधिकार में दे दूंगा जैसा वृद्ध ग्रेमियो का पैडुआ में एक मकान है, और इनके अलावा उपजाऊ भूमि से दो हजार ड्यूकेट की वार्षिक आय होती है, वह भी मैं इन्हीं को दे दूंगा। मेरी मृत्यु के पश्चात् वे ही सबकी स्वामिनी बनेंगी। कहिये श्रीमान् ग्रेमियो ! क्या मैंने यह कहकर आपका दिल दुखाया है ?

ग्रेमियो : प्रति वर्ष दो हजार ड्यूकेट की आय भूमि से, मेरी भूमि तो पूरी मिलकर इतनी आय नहीं देती। उस पर तो उनका अधिकार होगा ही, इसके अलावा मेरा एक बड़ा जहाज है जो यासिलीज के बन्दरगाह पर ठहरा हुआ है, उस पर भी इनका अधिकार होगा। अब बताइये, क्या इस जहाज से मैंने आपकी बोलती बन्द नहीं कर दी है ?

ट्रेनियो : ग्रेमियो ! यह सभी को पता है कि मेरे पिता के पास तीन बड़े-बड़े जहाज हैं और उनके अलावा दो बहुत तेज चलने वाले जहाज हैं और बारह नावें हैं, इन सब को मैं उन्हें देता हूँ और इसके बाद जो तुम देने का आश्वासन दोगे, उससे दूना मैं दूंगा।

ग्रेमियो : जो कुछ भी मेरे पास था, वह सभी कुछ देने का आश्वासन मैं दे चुका; बस, इसके अलावा मैं और कुछ नहीं दे सकता। अगर आप चाहें तो बियांका का विवाह मेरे साथ कर दीजिये।

मेरी मारी सम्पत्ति की और मेरी स्वामिनी बनकर रहेगी वह ।

ट्रेनियो : तब तो आपके दृढ़ निश्चय के अनुसार बियाँका पर मेरा अधिकार है । प्रेमियो तो बाजी हार गए ।

बैण्टिस्टा : मैं यह स्वीकार करता हूँ कि आपका आश्वासन ही सबसे ऊँचा है और अगर आपके पिता भी इस बात को स्वीकार कर लें तो फिर बियाँका आपकी है नहीं तो मुझे क्षमा करें । अगर आप अपने पिता से पहले इस संसार से उठ गए तो फिर मेरी बेटी का दहेज कहाँ रहेगा ?

ट्रेनियो : यह बेकार की-सी बात है । वे बुढ़े हैं, मैं जवान हूँ ।

प्रेमियो : तो क्या बुढ़ों की तरह जवान नहीं मरते हैं ?

बैण्टिस्टा : अच्छा श्रीमान् ! तो अब मैंने निश्चय कर लिया है । इस रविवार को तो आप जानते हैं मेरी बेटी कैथरिना की शादी होने जा रही है, फिर अगले रविवार को आपकी बियाँका के साथ शादी हो जायेगी, अगर आप यह पूरा विश्वास दिला देंगे, नहीं तो फिर श्रीमान् प्रेमियो ही मेरी बेटी के पति होंगे । अच्छा, धन्यवाद आप दोनों को, विदा ।

[प्रस्थान]

प्रेमियो : विदा श्रीमान् ! अब मुझे तुम्हारा डर नहीं है । लड़के ! अगर तुम्हारा पिता बेवकूफ होगा, तभी तुम्हें इस सारी सम्पत्ति का अधिकार देगा और फिर अपने बुढ़ापे में तुम्हारा मुहताज रहेगा । हटो, हटो, इटली का एक बूढ़ा बाप इतना मेहरबान नहीं होता लड़के !

[प्रस्थान]

ट्रेनियो : बुढ़े ! तुझसे तो बदला मैंने चुका ही लिया लेकिन मैं बातें बहुत बढ़-चढ़कर बना गया हूँ । मैं तो अपने स्वामी का हर तरह

से हित करने का निश्चय कर चुका हूँ, लेकिन जहाँ तक पिता का सवाल है, बनावटी ल्यूसैशियो को कोई बनावटी विसैशियो ही पिता के रूप में मिल सकता है, यही एक ताज्जुब है। प्रायः तो बाप शादी के लिए बेटों को तैयार करते हैं लेकिन यहाँ अगर मैं अपनी चाल में कामयाब हो गया तो एक बेटे को अपने बाप को तैयार करके लाना पड़ेगा।

[प्रस्थान]

तीसरा अंक

दृश्य १

[ल्यूसेशियो, हौटेंशियो तथा बियांका का प्रवेश]

ल्यूसेशियो : कलाकार ! तुम बहुत आगे बढ़ आये हो, वस अब काबू में रखना अपने आपको । क्या तुम इतनी जल्दी भूल गए कि कैथरिना ने तुम्हारा किस तरह से स्वागत किया था ?

हौटेंशियो : लेकिन हल्ला मचाने वाले ज्ञानी महोदय ! हमारी संरक्षिका ने तो दिव्य सौन्दर्य पाया है, इसलिए मुझे यह अधिकार दो कि पहले जब मैं एक घंटे तक इनको गाना-बजाना सिखा लूं, उसके बाद तुम आराम से अपना ज्ञान इनको देना ।

ल्यूसेशियो : तुम तो पूरे गधे हो जो यह तक नहीं जानते हो कि संगीत की आवश्यकता क्या है । क्या अध्ययन के पश्चात् जब मनुष्य का मस्तिष्क थक जाता है, उसको ताजा करके उसमें नव-स्फूर्ति जगाना ही संगीत का लक्ष्य नहीं है ? इसीलिए पहले मुझे दर्शन शास्त्र की शिक्षा दे लेने दो, फिर तुम्हारा अवसर आयेगा, इस बीच तुम अपने तार-वार मिलाकर पूरी तरह तैयार हो जाना ।

हौटेंशियो : मैं तुम्हारी इन बातों को बरदाश्त नहीं कर सकता ।

बियांका : वाह, भले आदमी ! तुम तो मेरे साथ दूना अन्याय करते हो । एक तो उसी चीज के लिए प्रयत्न करते हो जिसकी मैं अपने दिल में इच्छा रखती हूँ । मैं कोई ऐसी वैसी पंडिता नहीं हूँ जैसे स्कूलों में पिटने वाली होती हैं । मैं वक्त के साथ नहीं बाँधी जा सकती और न मेरे पढ़ाने का कोई निश्चित समय हो सकता है

बल्कि मेरे पाठ तो जैसे मैं चाहूँगी वैसे पढ़ाने होंगे। इसलिए सारा भगड़ा यहीं खत्म करते हुए आओ बैठें। तुम अपना बाजा उठाओ और इसके तार मिलाकर इसे तैयार कर लो। बस इतनी ही देर में, मैं पढ़ चुकूँगी।

होटेंशियो : श्रीमती ! जब मैं बाजा मिला चुकूँ तो आप अपनी पढ़ाई खत्म कर दीजिये।

ल्यूसेंशियो : यह कभी नहीं होगा। हाँ हाँ, मिलाओ अपना बाजा।

बियांका : कहाँ पर छोड़ा था हमने पिछली बार ?

ल्यूसेंशियो : यहाँ पर श्रीमती !

हिक इबैट सिमोइज, हिक एस्ट सीजिया टैलस,

हिक स्टेटरैट प्रियामी रेगिया सेल्सा सेनिस ।'

बियांका : इसका मतलब बताइये।

ल्यूसेंशियो : 'हिक इबैट' का मतलब है—जैसा मैंने पहले आपसे कहा था। 'सिमोइज' का मतलब है—मैं ल्यूसेंशियो हूँ। 'हिक एस्ट' का मतलब है—पीसा के विसैशियो का पुत्र हूँ। 'सीजिया टैलस' का मतलब है—आपका प्रेम प्राप्त करने के लिए वेश बदलकर आया हूँ। 'हिक स्टेटरैट' का मतलब है—जो ल्यूसेंशियो आपके पास अपना प्रेम प्रदर्शित करने आता है। 'प्रियामी' का मतलब

१. यह ओविड की ऐप्स्टोले का पद है। इसका अर्थ है : 'यहाँ सिमोइज नदी बहती थी। यह सीजिया का देश है। वृद्ध प्रियाम का ऊँचा प्रासाद यहाँ स्थित था।' हमने मूल लैटिन को देवनागरीलिपि में लिख दिया है, क्योंकि इन शब्दों का सही अर्थ पहले ही बियांका के सामने खुलने से तो घटनास्थल का सारा आनन्द चला जाता है और ल्यूसेंशियो की चालाकी पर भी प्रकाश नहीं पड़ता है। ल्यूसेंशियो बियांका का प्रेम जीतने के लिए उक्त पंक्ति का गलत अर्थ बताता है।

है—वह मेरा ही आदमी ट्रेनियो है। 'रेगिया' का मतलब है—वह मेरी ही वेश-भूषा धारण किये हुए है। 'सेल्सा सेनिस' का मतलब है—जिससे हम इस बेवकूफ बुद्धे को चक्कर में डालकर बहका सकें।

हौटेंशियो : श्रीमती ! मैंने अपना बाजा मिला लिया है।

बियांका : सुनाओ तो। ओह दूर, दूर, तिगुना बेसुरा है।

ल्यूसेंशियो : लानत है, इस संधे में थूको और फिर मिलाओ इसको।

बियांका : अच्छा तो अब मैं देखती हूँ कि मैं इसका मतलब लगा पाती हूँ या नहीं।

'हिक इबेट सियोइज़'—इसका मतलब है—मैं आपको नहीं जानती।

'हिक एस्ट सीजिया टैलस'—इसका मतलब है—मैं आपके ऊपर विश्वास नहीं करती।

'हिक स्टेटरैट प्रियामी'—इसका मतलब है—ध्यान रखना कहीं वह हमारी बातें न सुन ले।

'रेगिया'—इसका मतलब है—पूरा भरोसा मत करिये।

'सेल्सा सेनिस'—इसका मतलब है—निराश मत होइये।

हौटेंशियो : श्रीमती ! अब बाजा अच्छी तरह मिल चुका है।

ल्यूसेंशियो : सब ठीक है, सिर्फ पहला स्वर ठीक नहीं है।

हौटेंशियो : पहला स्वर तो ठीक है, अब तो पहले दर्जे का धूर्त और कमीना' ही बेसुरा है। हमारे ज्ञानी पंडित भी कैसे उतावले और चालाक हैं। सच, यह धूर्त तो मेरी प्रिया को अपने वश में करने का प्रयत्न कर रहा है। पंडित अब मैं और भी अच्छी तरह से

१. Base : इस शब्द को लेकर पन (द्वयर्थक शब्द) का प्रयोग किया गया है। इसके दो अर्थ हैं : पहला स्वर यानी मलाधार का स्वर, दूसरा मतलब है कमीना।

तुम्हारे ऊपर निगरानी रखूंगा ।

बियांका : हो सकता है, समय आने पर मैं इस पर विश्वास कर लूँ लेकिन अब तो मुझे विश्वास नहीं होता ।

ल्यूसेंसियो : अविश्वास मत करिये क्योंकि यह निश्चय मानिये कि एजैक्स ही ईसाइडीज था जिसका नाम उसके पूर्वज के नाम पर पड़ा था ।

बियांका : मेरे अध्यापक की बात को मुझे स्वीकार कर ही लेना चाहिये नहीं तो मैं सच कहती हूँ, अभी भी मैं इस बात पर शंका और तर्क उठा सकती हूँ, लेकिन छोड़िये इसको । हाँ लीसियो ! अब आपकी बारी है । मेरे अच्छे मास्टर ! कृपया इस बात का बुरा न मानिये कि मैंने आप दोनों के प्रति बराबर का सौहार्द दिखाया है ।

हौटेंशियो : अब आप जा सकते हैं क्योंकि मेरा संगीत तीन अलग-अलग तरह की आवाजों के लिये नहीं है ।

ल्यूसेंसियो : अच्छा श्रीमान् ! इतनी तरतीब वाले आदमी हैं तो फिर मुझे यहाँ रुककर सब कुछ देखना चाहिये नहीं तो अवश्य मेरे साथ धोखा हो जायेगा । हमारे संगीतज्ञ महाशय तो पूरे प्रेमी बन रहे हैं ।

हौटेंशियो : श्रीमती ! इससे पहले कि आप इस साज पर उँगली रखना सीखें मैं आपको कला की मूल बातें समझाना चाहता हूँ । पहले तो थोड़े में ही आपको पूरी सरगम बताता हूँ । मुझे अच्छी तरह और कोई संगीतज्ञ आपको नहीं बता सकता । देखिये, बड़ी खूबसूरती से वह लिखी हुई है ।

बियांका : लेकिन मैं तो यह सरगम वगैरह बहुत पहले ही सीख चुकी हूँ ।

हौटेंशियो : लेकिन अब आप हौटेंशियो की सरगम सीखिये ।

बियांका : सरगम तो मैं हूँ । सभी स्वरों का आधार मैं ही हूँ । हाँ, 'ए रे' यानी हौटेंशियो के प्रेम के लिये प्रार्थना करना ।

'बी नी'—बियांका ! उसे अपना पति मान लो ।

'सी घा उट'—जो अपने हृदय का सारा प्रेम तुम्हें देता है ।

'डी सोल रे'—एक तान, दो स्वर है मेरे पास ।

'ई ला मी'—या तो मेरे ऊपर रहम करो नहीं तो मैं मरता हूँ ।

क्या इसे ही आप सरगम कहते हैं ?

हिश ! मुझे यह पसंद नहीं है । मुझे तो पुराने कायदे ही सबसे अच्छे लगते हैं । मैं इतनी अच्छी तो नहीं हूँ कि इन बेहूदी नई इजादों के पीछे सच्चे कायदों को बदल दूँ ।

[एक संदेशवाहक का प्रवेश]

सेवक : श्रीमती ! आपके पिता का संदेश है कि आप अपनी पुस्तकें छोड़कर अपनी बहिन के कमरे को सजाने में मदद करिये, क्योंकि आप तो जानती ही हैं कल शादी का दिन है ।

बियांका : अच्छा, मेरे अच्छे अध्यापको ! मैं आप लोगों से विदा चाहती हूँ ।

[बियांका तथा सेवक का प्रस्थान]

ल्यूसेंशियो : अच्छा तो श्रीमती ! फिर यहाँ ठहरने की मुझे भी क्या आवश्यकता है ।

[प्रस्थान]

हौटेंशियो : लेकिन मुझे तो इस ढोंगी पंडित की अच्छी तरह जाँच करने की आवश्यकता है । मेरे विचार से तो इसको देखने से लगता है कि यह प्यार में डूबा हुआ है । लेकिन फिर भी बियांका यदि तू इतनी विनम्र है कि हर एक मामूली से आदमी पर भी

तेरी दृष्टि ठहर जाती है तो फिर उसकी चिन्ता कर कि अगर मैंने तुझे कहीं इधर-उधर फिरते देखा तो फिर हौटेंशियो तुझे लेकर यहाँ से लापता हो जायेगा ।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[बैण्टिस्टा, प्रेमियो, ट्रेनियो, कैथरिना, बियांका, ल्यूसेंशियो तथा
अन्य सेवकों का प्रवेश]

बैण्टिस्टा : श्रीमान् ल्यूसेंशियो ! कैथरिना और पैट्रू शियो की शादी के लिये आज का ही दिन निश्चित है लेकिन अभी तक हमारे दामाद का कहीं पता नहीं है । अब क्या कहेंगे लोग, क्या-क्या व्यंग्य नहीं कसे जायेंगे ? पादरी तो शादी कराने के लिये तैयार खड़ा है लेकिन वर अभी तक आया ही नहीं है, ओह ! ल्यूसेंशियो ! अब कहो क्या कहते हो ? कितनी बदनामी होगी हमारी ।

कैटे : इसमें बदनामी तो सिर्फ मेरी है । मेरी शादी मेरी मर्जी के खिलाफ़ एक ऐसे आदमी के साथ की जा रही है जो कि सिर-फिरा बदमाश है, जिसने मुझसे प्यार दिखाकर शादी की बात तो जल्दी से तय कर ली और अब शादी अपने आराम से करना चाहता है । बड़े ही गुस्से से भरा हुआ है वह । मैंने पहले ही आपसे कहा था कि वह पक्का धूर्त है जो अपने दिखावटी खुले व्यवहार के नीचे अपनी कुटिलता को छिपाये हुए है और अपने आपको एक बहुत ही खुशदिल आदमी बताना चाहता है । वह हजारों से प्रेम करके शादी का दिन तय कर जायेगा, दोस्तों को निमन्त्रित करेगा और चारों तरफ इसकी खबर फैला देगा, लेकिन

शादी उस औरत से कभी नहीं करेगा जिससे उसने प्रेम किया होगा। अब दुनिया इस अभागी कैथरिना की ओर उँगली उठायेगी और अगर उसने शादी कर ली तो यही कहेगी कि यह देखो उस सिरफिरे पैट्रू शियो की स्त्री।

ट्रेनियो : अच्छी कैथरिना ! धैर्य रखो। बैप्टिस्टा ! आप भी। मैं पूरे विश्वास के साथ कहता हूँ कि पैट्रू शियो का ऐसा खराब इरादा नहीं है चाहे दुर्भाग्यवश वह इस समय अपने वचन को पूरा नहीं कर पाया है। यद्यपि वह कुछ खुले और रूखे व्यवहार का आदमी तो है लेकिन फिर भी यह मैं जानता हूँ कि बड़ा बुद्धिमान है। यद्यपि वह पूरा मजाकिया है लेकिन फिर भी ईमानदार पूरा है।

केटे : जैसे कि कैथरिना ने तो उसे कभी देखा ही नहीं है।

[रोती हुई जाती है, पीछे से बियांका तथा अन्य सभी भी चले जाते हैं।]

बैप्टिस्टा : जा बेटा ! इस रोने के ऊपर मैं तुझपर किसी तरह का दोष नहीं लगा सकता क्योंकि इस तरह के आघात से तो एक साधु की आत्मा भी दुःखी होकर रो उठेगी, फिर तेरी जैसी कर्कशा और उत्तेजित स्वभाव की स्त्री तो और भी अधिक रोयेगी ही।

[बाँइंडेलो का प्रवेश]

बाँइंडेलो : स्वामी ! स्वामी ! समाचार, ऐसा समाचार जैसा आपने कभी नहीं सुना होगा।

बैप्टिस्टा : क्या यह नया और पुराना दोनों तरह का है ? यह कैसे हो सकता है ?

बाँइंडेलो : श्रीमान् ! क्या यह पैट्रू शियो के आने का समाचार नहीं है ?

बैप्टिस्टा : क्या वह आ गया है ?

बाइंडेलो : जी नहीं, श्रीमान् !

बैप्टिस्टा : तो फिर ?

बाइंडेलो : वे आ रहे हैं ।

बैप्टिस्टा : तो कब तक आ जायेंगे वे ?

बाइंडेलो : जबकि वे आकर वहाँ खड़े हो जायेंगे जहाँ मैं हूँ और आपको वहाँ देखने लगेंगे ।

ट्रेनियो : लेकिन यह तो बताओ, तुम्हारे उस पुराने समाचार का क्या हुआ ?

बाइंडेलो : पैट्रूशियो आ रहे हैं। नया तो उनका टोप है और पुरानी जर्किन है, तीन बार उलटी हुई पुरानी बिरजिस है, जूते हैं जोकि बिल्कुल बत्तियों के बचे हुए जले टुकड़े रखने के खोखे लगते हैं जिनमें एक में तो बक्सुआ लगा हुआ है, तो दूसरा फीते से बँधा हुआ है, एक पुरानी जंग लगी तलवार है, जो शायद किसी पुराने शस्त्रागार से निकालकर लाई गई है जहाँ पर वक्त ज़रूरत के लिये ऐसी चीजें रखी रहती हैं। फिर उस तलवार की मूँठ भी टूटी हुई है और नीचे म्यान का फौलादी सिरा भी साफ है, दोनों धारें भी उसकी टूटी हुई हैं। उनके पास एक घोड़ा है जिस पर एक बहुत पुरानी दीमक चटी हुई जीन है और बुरी-सी रकाब है। इसके अलावा उसकी गरदन के नीचे का हिस्सा सूजा हुआ है, मुँह के अन्दर भी जैसे साँस लेते समय नथने उठते हैं वैसी सूजन है, शरीर भी सूजा हुआ है, पूँछ की तरफ भी कुछ बीमारी है, पीछे के पैरों के जोड़ पर भी सूजन है, पीलिया की बीमारी और है, फिर कानों के पीछे जो सूजन है उसका तो कोई इलाज ही नहीं है अब, और इसी कारण वह पूरी तरह परेशान है, पेट

में कीड़े हैं उसके जो पीछे की तरफ जमे हुए हैं, कंधे कुछ ऊबड़-खाबड़ हैं, आगे के पैरों के घुटने एक दूसरे से टकराते हैं, एक कमजोर-सी लगाम है और वह भी भेड़ की खाल की जो जब कभी घोड़े को लड़खड़ाकर गिरने से बचाने के लिये खींची जाती है, फौरन टूट जाती है और फिर गाँठ लगाकर उसको जोड़ा जाता है। जीन कसने का फीता कोई छः टुकड़े जोड़कर बनाया गया है और जीन को पूछ से बांधने के लिये एक फीता है जैसा स्त्रियाँ अपने घोड़ों की जीनों के साथ लगाती हैं जिस पर उनके नाम के दो अक्षर लिखे रहते हैं। उस पर भी, धातु पर वे अक्षर लिखे हुए लगे हैं, फिर वह इतनी पुरानी चीज है कि इधर-उधर से तागों से उसे सीकर ही ठीक रखा गया है।

बैण्टिस्टा : उसके साथ कौन आ रहा है ?

बॉइंडेलो : श्रीमान्, उनका एक नौकर है उनके साथ, बिल्कुल घोड़े की तरह ही उसकी वेशभूषा है। एक पैर में तो लिनन का मोजा है और दूसरे पैर में बहुत ही मोटे और खराब कपड़े का मोजा चढ़ा हुआ है, फिर दोनों को दो अलग-अलग लाल और नीले फीतों से बांध रखा है; एक पुराना टोप है, सच वह तो एक पूरा बहुरूपिया है जिसमें चालीस तरह की अजीब बेहूदगियाँ हैं, बस देखते ही पक्का बदमाश, अवारा लगता है। श्रीमान् ! वह किसी शरीफ आदमी के नौकर जैसा या कोई अच्छे ईसाई किस्म का नौकर जैसा तो लगता ही नहीं है।

ट्रेनियो : ऐसा वेश बनाकर वह आया है, तो अवश्य उसके दिमाग में कोई बड़ा फितूर है लेकिन फिर भी अक्सर वह इस तरह की गन्दी और भद्दी वेशभूषा बनाकर तो आता-जाता है।

बैण्टिस्टा : मुझे तो इसी में खुशी है कि चाहे जैसे भी आया, वह आया तो सही ।

बॉइंडेलो : जी श्रीमान् ! वे तो नहीं आ रहे हैं ।

बैण्टिस्टा : क्या तुमने अभी नहीं कहा था कि वह आ रहा है ?

बॉइंडेलो : किसके लिये कहा था ? क्या पैट्रू शियो के लिये ?

बैण्टिस्टा : हाँ पैट्रू शियो के लिये ।

बॉइंडेलो : जी नहीं श्रीमान् वे नहीं, उनका घोड़ा, उसके साथ उसकी पीठ पर आ रहे हैं ।

बैण्टिस्टा : हाँ, हाँ, वह एक ही है ।

बॉइंडेलो : जी नहीं, मैं सेंट जेमी की सौगन्ध खाकर शर्त बदता हूँ कि एक आदमी और एक घोड़ा मिलकर एक से ज्यादा होते हैं, फिर भी बहुत नहीं कह सकते उन्हें ।

[पैट्रू शियो तथा ग्रूमियो का प्रवेश]

पैट्रू शियो : कहाँ है सब लोग ? कोई है घर पर ?

बैण्टिस्टा : आपका स्वागत है श्रीमान् !

पैट्रू शियो : लेकिन मेरा आगमन फिर भी शुभ नहीं रहा ।

बैण्टिस्टा : फिर भी आप रुके तो नहीं रास्ते में ।

ट्रेनियो : जैसा मैं चाहता था वैसे अच्छे कपड़े आप नहीं पहने हुए हैं ।

पैट्रू शियो : अगर ये इनसे अच्छे होते तो मैं इस तरह भपटता ; लेकिन केटे कहाँ है ? मेरी प्रिया कहाँ है ? मेरे पिता कैसे हैं ? श्रीमान्, मुझे लगता है, आप लोग कुछ क्रुद्ध हैं और हमको आप इस तरह से देख रहे हैं जैसे मानो कोई अजनबी शिला-लेख हो या कोई पुच्छल तारा या कोई असाधारण दैत्य दिखाई दे रहा हो । क्या कारण है इसका ?

बैण्टिस्टा : श्रीमान्, आप तो यह जानते ही हैं कि आज आपकी शादी

का दिन है। पहले तो हमको यही सोचकर दुःख हुआ था कि आप नहीं आयेंगे लेकिन अब इससे भी अधिक दुःख इस बात का है कि आप बिना किसी तरह की तैयारी के आये हैं। अपनी हालत पर आपको शर्म आनी चाहिये। उतार दीजिये इन कपड़ों को। इस खुशी के दिन यह क्या हृदय दुखाने वाला रूप आपने बनाया है ?

ट्रेनियो : यह बताइये कि ऐसा कौन-सा महत्वपूर्ण कार्य आपको लग गया था कि आप अभी तक नहीं आ पाये और फिर आये भी तो इस वेश में जिसमें हमने आपको कभी नहीं देखा था ?

पैट्रू शियो : यह सब कुछ बताना कठिन कार्य है और फिर इतना असह्य है कि आप सुन भी नहीं पायेंगे, बस अब तो इतना कहना ही पर्याप्त है कि मैं अपने वचन का पालन करने के लिये आ पहुँचा हूँ, कुछ देरी मुझे अवश्य लगी लेकिन कभी आराम से बैठकर मैं इसका कारण बताऊँगा जिससे आपको पूरा संतोष हो जायेगा लेकिन केटे कहाँ है ? बहुत देर हो गई, वह अभी तक नहीं आई। सुबह का समय निकला जा रहा है, इस समय तो हमको गिर्जाघर पहुँच जाना चाहिये था।

ट्रेनियो : अपनी इस अजीब भद्दी पोशाक में अपनी बधू से मत मिलिये, जाइये मेरे घर जाकर मेरे कपड़े पहन आइये।

पैट्रू शियो : नहीं, मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा। इसी वेश में मैं उससे मिलूँगा।

बैण्टिस्टा : लेकिन इस तरह से मैं सोचता हूँ आप उसके साथ शादी नहीं कर पायेंगे।

पैट्रू शियो : अच्छा तो आप ऐसी बातें करेंगे, बस अब काफी हो चुका। उसकी शादी मुझसे होनी है न कि मेरे कपड़ों से। जैसे मैं अपने

इन भद्दे कपड़ों को बदल सकता हूँ वैसे ही यदि जो कुछ भी कमी वह मुझे कर देगी उसको मैं पूरा कर सकूँ तो कटे के लिये तो अच्छा है ही, मेरे लिये और भी अच्छा है, लेकिन मैं भी कैसा गधा हूँ कि उस वक्त आपसे बातें कर रहा हूँ जबकि मुझे जाकर अपनी पत्नी को नमस्ते करनी चाहिये और उसका प्यार लेकर इस सबको पक्का करना चाहिये ।

[प्रस्थान]

[पेंडू शियो, ग्रूमियो और बॉइंडलो का प्रस्थान]

ट्रेनियो : इस पागलपन की पोशाक के पीछे भी इसका कोई रहस्य अवश्य है लेकिन फिर भी गिर्जाघर जाने से पहले हम पूरी कोशिश करेंगे कि यह अच्छे कपड़े पहन ले ।

बैण्टिस्टा : मैं इसके पीछे जाकर सारी बात देखता हूँ ।

[प्रस्थान]

[सभी का प्रस्थान । केवल ट्रेनियो और ल्यूसेंशियो रह जाते हैं]

ट्रेनियो : लेकिन श्रीमान् ! इस प्रेम की सफलता के लिये हमें उसके पिता को अवश्य संतुष्ट करना पड़ेगा और उसके लिये जैसा मैंने आपसे पहले कहा था कि चाहे कहीं मिले मुझे एक ऐसा आदमी तलाश करना है जो पीसा का विसेंशियो बनकर यहाँ पेंडुआ में उससे भी अधिक धन और सम्पत्ति का आश्वासन दे दे जितने का मैंने वायदा किया है । इसमें कोई अधिक दिमाग-पच्ची की जरूरत नहीं होगी । हम उस आदमी को पढ़ा-लिखाकर मौके के लिये तैयार कर लेंगे ! इस तरह आप निश्चित होकर अपनी प्रेयसी बियांका से विवाह कर सकेंगे जिसके लिये वह भी सहर्ष तैयार हो जायेगी ।

ल्यूसेंशियो : अगर वह मेरा साथी अध्यापक बियांका के पीछे अपनी

निगाह नहीं लगाये होता तो मैं तो छिपे तौर से उससे शादी कर लेता और एक बार जब शादी हो जाती तो फिर चाहे सारी दुनिया नहीं मानती मैं तो दुनिया की परवाह न करते हुए अपनी बात पर जमा ही रहता ।

ट्रेनियो : उसके लिये हम सीढ़ी दर सीढ़ी चलकर इसमें अपना फायदा देखते हुए बढ़ना चाहते हैं । पहले तो बुड्ढे ग्रेमियो को, फिर उसके बाप मिनोला को जिसको कम दीखता है, और फिर उस प्रेम में डूबे हुए विचित्र मूर्ख संगीतज्ञ को पीछे छोड़कर मेरे स्वामी ल्यूसेंसियो के लिये आगे बढ़ना पड़ेगा ।

[ग्रेमियो का प्रवेश]

श्रीमान ग्रेमियो ! क्या आप गिर्जाघर से वापस आये हैं ?

ग्रेमियो : जी हाँ, वहीं से तो ।

ट्रेनियो : क्या वर और वधू घर की ओर आ रहे हैं ?

ग्रेमियो : वर कहते हैं, आप उसको ? हाँ, हाँ, निस्संदेह, वर तो वह है, बहुत ही बड़बड़ाने वाला वर है, लड़की की उसके साथ शादी हो गई है ।

ट्रेनियो : क्या उससे भी अधिक सिरफिरा और बदमाश है ? नहीं, नहीं, यह तो असम्भव है ।

ग्रेमियो : अरे, पूरा धूर्त है, छटा हुआ बदमाश, बिलकुल पिशाच है ।

ट्रेनियो : लेकिन वह भी तो पूरी धूर्त, बदमाश और एक पिशाच की अम्मा है ।

ग्रेमियो : वह, वह तो उसके सामने एक मेंमने जैसी है, छोटे सफेद कबूतर की तरह शान्त और सीधी है, सच .उसके आगे तो वह बेवकूफ है । मैं आपको बताता हूँ श्रीमान् ल्यूसेंसियो ! जब पादरी ने यह पूछा कि क्या कैथरिना को अपनी पत्नी के रूप में

वह स्वीकार करता है तो वह कहने लगा—सच, ईसामसीह की सौगन्ध । इतनी जोर से पुकारकर सौगन्ध खाई थी उसने कि एक साथ सभी लोग चौंक पड़े, पादरी के हाथ से किताब गिर पड़ी और जब वह उसको उठाने के लिये नीचे झुका तो उस सिरफिरे वर ने उसको ऐसा थप्पड़ दिया कि किताब सहित बेचारा पादरी जमीन पर गिर पड़ा । इसके बाद कहने लगा कि अगर कोई चाहे तो इन्हें उठा ले ।

ट्रेनियो : लेकिन उस लड़की ने उस समय क्या कहा जबकि वह उठकर फिर खड़ा हो गया था ?

ग्रेमियो : काँपने लगी थरथर । उस आदमी ने पहले तो अपना पैर उठाकर धमाके के साथ जमीन पर मारा, फिर उसने इस तरह सौगन्ध खाई जैसे मानो कि 'विकार' उसे किसी तरह धोखा देना चाहता हो लेकिन शादी की जब बहुत-सी रस्में हो चुकीं तो वह शराब माँगने लगा, कहने लगा—मेरी तन्दुरुस्ती की खुराक ! जैसे कि मानो वह बाहर इसी तरह हल्ला और तूफान मचाकर अपने दोस्तों के साथ शराब पीता रहा है । उस कीमती शराब को जो उसके लिये लाई गई थी, वह पी गया और फिर उस प्याले में बचे 'केक' के टुकड़ों को उस पादरी के मुँह पर फेंक दिया । उसका कोई दूसरा कारण नहीं था, सिर्फ यही था कि उसकी दाढ़ी पतली पड़ गई थी, जब वह शराब पी रहा था तो लगता था कि मानो वह भूखी दाढ़ी इन 'केक' के टुकड़ों को माँग रही थी । यह सब कुछ करने के बाद उसने अपनी दुल्हन को गरदन पर से पकड़ा और उसके ओठों को इतनी जोर से चूमा कि उसकी आवाज पूरे गिरजाघर में गूँज गई । यह देखकर मैं तो शरम के मारे वहाँ से चला आया और मेरे विचार से मेरे पीछे

सभी लोग आ रहे हैं। ऐसी अजीब बेहूदी शादी तो पहले कभी नहीं हुई। सुनिये, सुनिये, मुझे बाजों की आवाज़ सुनाई पड़ रही है।

[संगीत की ध्वनि उठती है।]

[पेट्रू शियो, केटे, बियांका, हौटेंशियो, बैप्टिस्टा, ग्रूमियो और

अन्य सभी का प्रवेश]

पेट्रू शियो : मित्रो और सज्जनो ! आपने जो कष्ट उठाया है उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। मैं जानता हूँ, आप लोग आज मेरे साथ दावत खाना चाहते हैं और आप लोगों ने शादी के जल से के लिये भी काफी तैयारी की है लेकिन यह होते हुए भी मुझे किसी कार्यवश यहाँ से शीघ्र जाना है अतः मैं आपसे आज्ञा चाहता हूँ।

बैप्टिस्टा : क्या यह कभी सम्भव हो सकता है कि आप आज रात को ही यहाँ से चले जायें ?

पेट्रू शियो : रात की कहते हैं ? श्रीमान् ! रात आने से पहले ही मुझे यहाँ से चले जाना चाहिये। आश्चर्य मत करिये। अगर आपको उस कार्य के बारे में पता होता जिसके लिये मुझे जाना है, तो यहाँ से रोकने की बजाय मुझसे जाने का आग्रह करते। अच्छा, मेरे अच्छे मित्रो ! आप सभी को धन्यवाद ! जिन्होंने मुझे अनुगृहीत किया है, वे कृपया मेरी गुणवती, सरल और मधुर व्यवहार वाली पत्नी के साथ मुझे जाने की आज्ञा प्रदान करें। मेरे पिता के साथ आप दावत खाइये और मेरी सेहत के लिये शराब का प्याला पीजिये। अब मैं चलता हूँ, विदा।

ट्रेनियो : हमारी प्रार्थना मानकर कृपया दावत तक तो रुक जाइये।

पेट्रू शियो : यह नहीं हो सकेगा।

ग्रेमियो : मेरो प्रार्थना ही स्वीकार करिये ।

पैट्रू शियो : जी नहीं, यह किसी हालत में नहीं हो सकता ।

केटे : मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ ।

पैट्रू शियो : मैं अब राजी हूँ ।

केटे : क्या आप यहाँ ठहरने के लिये राजी हैं ?

पैट्रू शियो : मैं इसलिये राजी हूँ कि तुमने मुझसे ठहरने के लिये प्रार्थना की; लेकिन फिर भी तुम कितनी भी प्रार्थना करो ठहर नहीं सकता ।

केटे : अच्छा, तो अब अगर आप मुझसे प्यार करते हैं तो ठहर जाइये ।

पैट्रू शियो : ग्रेमियो ! मेरा घोड़ा ।

ग्रेमियो : जी श्रीमान् ! सब तैयार है । घास ने घोड़े खा लिये हैं ।

केटे : ठीक है तो, जो आपसे किया जाय वह करिये मैं आज यहाँ से नहीं जाऊँगी, न कल जाऊँगी, यानी अब तो मेरी मर्जी आयेगी तब जाऊँगी । आपके लिये दरवाजा खुला है और वह आपका रास्ता है, जब आपका जी चाहे चले जाइये । मैं तब तक नहीं जाऊँगी जब तक मेरा जी नहीं चाहेगा । आप पहले पहल जिस तरह का बर्ताव कर रहे हैं, उससे लगता है आप खुशदिल और गुस्सैल दोनों तरह के आदमी निकलेंगे ।

पैट्रू शियो : ओ केटे ! इतनी नाराज मत होओ ।

केटे : मैं नाराज होऊँगी, आपको इससे क्या ?

पिता ! आप धैर्य रखिये, मैं जब तक ठहरूँगी तब तक इनको यहाँ ठहरना पड़ेगा ।

ग्रेमियो : हाँ हाँ, श्रीमान् ! अब तो इस नाराजगी ने अपना काम करना शुरू किया ।

केटे : श्रीमान् आप सभी शादी की दावत में भाग लेने के लिये चलें ।
सच है, अगर स्त्री में विरोध करने की सामर्थ्य नहीं होती है तो वह पुरुष के हाथों मूर्ख बन जाती है ।

पेट्रू शियो : केटे ! वे तो तुम्हारे कहते ही चले जायेंगे । हाँ, सज्जनों ! आप लोग दुल्हन की आज्ञा का पालन करिये । दावत में भाग लेने जाइये, खूब खुशी मनाइये और भर-भर प्याले शराब पीजिये, दुल्हन की सेहत के लिये । इतनी खुशी मनाइये कि पी-पीकर पागल हो जाइये और फिर अपने गले में फाँसी का फन्दा लगा लीजिये । लेकिन मेरी दुबली-पतली केटे तो मेरे साथ ही रहेगी ।

हाँ-हाँ, घूरिये मत मुझको, गुस्सा मत होइये, जो मेरी अपनी चीज़ है, उसका तो मालिक मैं ही हूँ । केटे मेरी चीज़ है, मेरी जायदाद है । वह मेरा घर है, मेरे घर का सारा सामान है । मेरे खेत, खलिहान, घोड़ा, बैल, गधा और जो कुछ भी मेरा है, सब वही है । यह खड़ी है, मेरी केटे । किसी की हिम्मत हो तो आगे बढ़कर उसके हाथ लगाये । बहादुर से बहादुर कोई भी आकर पेंडुआ में मेरा रास्ता रोकेगा तो फिर मैं उसको मज़ा चखाऊँगा ।

ग्रूमियो ! खींच ले अपना हथियार । हम चोरों के बीच घिर गये हैं । अगर तू एक मर्द है तो अपनी मालकिन को इनके बीच से छुड़ा ले जा । मेरी केटे ! डरो नहीं, कोई तुम्हें नहीं छू सकता । दस लाख आदमी भी आ जायें उनसे भी मैं तुम्हारी रक्षा कर सकता हूँ ।

[पेट्रू शियो, कंथरिना और ग्रूमियो का प्रस्थान]

बेन्टिस्टा : शान्तिपूर्ण प्राणियों के इस जोड़े को जाने भी दीजिये ।

प्रेमियो : अगर वे यहाँ से जल्दी नहीं गये तो सच में तो हँसते-हँसते मर जाऊँगा ।

ट्रेनियो : बड़े-बड़े सिरफिरों के जोड़े देखे लेकिन ऐसा तो शायद कहीं नहीं मिला ।

बियांका : कि जिस तरह मेरी बहिन का सिर फिरा हुआ है, इसी तरह के सिरफिरे के साथ उसकी शादी हुई ।

प्रेमियो : मैं यह दावे के साथ कहता हूँ कि पैट्रू शियो पर भी केटे का असर पूरी तरह आ गया ।

बैप्टिस्टा : मित्रो ! यद्यपि इस दावत में दुल्हा और दुल्हन अपने स्थान को सुशोभित करने के लिये उपस्थित नहीं हैं, लेकिन फिर भी किसी तरह के पदार्थों की कमी नहीं है ।

ल्यूसैशियो ! आप तो दुल्हा का स्थान ग्रहण करेंगे और बियांका अपनी बहिन का रिक्त स्थान ग्रहण करेगी ।

ट्रेनियो : क्या सुन्दरी बियांका दुल्हन बनने का अभ्यास करेंगी ?

बैप्टिस्टा : अवश्य ल्यूसैशियो ! आइये श्रीमान्, चलें यहाँ से ।

[प्रस्थान]

चौथा अंक

दृश्य १

[ग्रूमियो का प्रवेश]

ग्रूमियो : इन सभी विक्षिप्त प्राणियों पर, सिर-फिरे मालिकों पर और तमाम तरह के गन्दे तरीकों पर तो शैतान की मार पड़े। क्या कभी भी किसी आदमी को इस बुरी तरह पीटा गया है ? क्या कभी भी किसी पर इतनी धूल डाली गई है ? क्या कभी भी आदमी इतना परेशान हुआ है ? मुझे पहले आग जलाने के लिये भेजा गया है और वे पीछे से अपने आपको गरमाने के लिये आ रहे हैं। अब अगर मैं एक छोटा-सा घड़ा नहीं होता जो जल्दी से गरम हो जाता है तो सच, मेरे ओठ मेरे दाँतों तक जम जाते, जीभ तालु से चिपक जाती, दिल पेट में घुस जाता। कहीं आग के पास अपने आपको गरम करने के लिये आता उससे पहले तो यह सब कुछ हो लेता लेकिन अब मैं आग में फूँक देता हुआ अपने आपको गरम करूँगा। मौसम तो इतना खराब है कि अगर मुझसे भी कोई ताकतवर आदमी होता, उसको भी जुकाम हो गया होता। अरे, कर्टिस ! कहो।

[कर्टिस का प्रवेश]

कर्टिस : कौन है जो इतने ठंडे तरीके से बोल रहा है ?

ग्रूमियो : एक बरफ का टुकड़ा है। अगर तुमको सन्देह हो तो मेरे कन्धे से एड़ी तक फिसल सकते हो, भागने की भी अधिक आवश्यकता नहीं है, सिर्फ मेरा सिर और गरदन हैं ?

दोस्त कर्टिस ! आग जलानी है ।

कर्टिस : क्या मेरे स्वामी और स्वामिनी आ रहे हैं ग्रूमियो ?

ग्रूमियो : हाँ हाँ, कर्टिस ! इसीलिये आग की आवश्यकता है । देखो पानी मत डालना ।

कर्टिस : क्या उस कर्कशा का मिजाज़ उतना ही गरम है जैसा उसके बारे में कहा जाता है ?

ग्रूमियो : इस पाले पड़ने से पहले तो वह अच्छी थी लेकिन तुम जानते हो कर्टिस ! जाड़ा तो आदमी, औरत और जानवर सबको अपने काबू में कर लेता है क्योंकि इसने मेरे नये स्वामी, नई स्वामिनी और मुझ स्वयं को अपने वश में कर लिया है ।

कर्टिस : दूर हट, तीन इंची बेवकूफ ! मैं कोई जानवर नहीं हूँ ।

ग्रूमियो : क्या मैं बस तीन इंच का ही हूँ ? अरे तुम्हारा सींग ही एक फुट का होगा । बस उतना ही लम्बा तो कम से कम मैं हूँ । लेकिन क्या तुम आग जला दोगे या स्वामिनी से तुम्हारी शिकायत करूँ जिनके हाथों का करारापन तुम्हें अभी पता चल जायेगा, बस वे पास आ ही गई हैं । अपने इस काम में सुस्ती करने का नतीजा यही मिलेगा कि जाड़े में इन करारे हाथों से थोड़ा आराम मिल जायगा ।

कर्टिस : दोस्त ग्रूमियो ! यह बताओ, दुनिया कैसे चल रही है ?

ग्रूमियो : कर्टिस ! बस सारी दुनिया ठंडी पड़ी हुई है, गरम होने का काम तो तुम्हारा है इसलिये आग जला दो । जो तुम्हारा कर्तव्य है उसका पालन करो क्योंकि स्वामी और स्वामिनी ठंड से बिलकुल मर गये होंगे ।

कर्टिस : आग तैयार है, इसलिये दोस्त ग्रूमियो ! अब समाचार सुनाओ ।

ग्रूमियो : हाँ हाँ लड़के ! तुम चाहोगे उतने समाचार बताऊँगा तुम्हें ।

कर्टिस : पूरे धूर्त हो तुम ।

ग्रूमियो : इमीलिये कहता हूँ, आग जलाओ, मुझे तो बड़ी ठंड लग गई है । वह वावर्ची कहाँ है ? क्या खाना तैयार है ? क्या मकान की सफाई हो चुकी है ? क्या फर्शों पर नई हरियाली छाँट दी गई है ? क्या मकड़ियों के जाले निकाल दिये गये हैं ? सभी नौकर तो अपनी नई पोशाक में हैं न ? क्या सफेद मोजे पहन रखे हैं उन्होंने और क्या हर एक अधिकारी ने अपनी शादी के कपड़े पहन लिये हैं ? और चमड़े का बर्तन^१ अन्दर हो तो फिर पैर बाहर होना चाहिये । इनके अलावा क्या कालीन बिछ गये ? सभी चीजें तरतीब से हैं न ?

कर्टिस : सब ठीक है, इसलिये कृपा करके अब तो कोई समाचार सुना दो ।

ग्रूमियो : पहले तो यह जान लो कि मेरा घोड़ा थक गया है । मेरे स्वामी और स्वामिनी दोनों उस पर से गिर चुके हैं ।

कर्टिस : कैसे ?

ग्रूमियो : अपनी जीनों पर से उछलकर धूल में जा गिरे और उसका एक पूरा किस्सा है ।

कर्टिस : सुनाओ दोस्त ।

ग्रूमियो : अच्छा तो सुनो ।

कर्टिस : यहाँ !

१. Jacks & Jills : इन शब्दों के अर्थ हैं—Jacks—चमड़े का बर्तन, Jills—शराब नापने का पैर । इन पर पन (द्व्यर्थक शब्द) का प्रयोग किया गया है क्योंकि इनसे लड़के और लड़कियों का भी अर्थ लगता है ।

ग्रूमियो : वहाँ ।

कर्टिस : यह तो कोई कहानी सुनना नहीं है, उसका अनुभव करना है ।

ग्रूमियो : इसीलिये इसको अक्लमंदी की कहानी कहा जाता है और यह भटका तो तुम्हारे कानों को हिलाकर तुम्हें सुनने के लिये प्रेरित करने को था । अब मैं शुरू करता हूँ । पहले पहल तो हम एक ऊबड़-खाबड़ बुरी पहाड़ी के नीचे आये, मेरे स्वामी स्वामिनी के पीछे घोड़े पर चढ़े आ रहे थे ।

कर्टिस : दोनों एक ही घोड़े पर ?

ग्रूमियो : तुम्हें क्या इससे ?

कर्टिस : एक घोड़ा क्यों ?

ग्रूमियो : अच्छा तो अब तुम कहो कहानी । अगर तुमने मुझे बीच में टोका नहीं होता तो तुम सुनते कि किस तरह स्वामिनी का घोड़ा गिर पड़ा और वे उस घोड़े के नीचे आ गई । तुमने सुना होता कि वे कैसे दलदल में गिरी थीं जिससे वे पूरी तरह कीचड़ से सन गई और कैसे स्वामी उनको उसी तरह घोड़े के नीचे दबे हुए ही छोड़ आये और फिर कैसे उन्होंने मुझे मारा क्योंकि स्वामिनी का घोड़ा लड़खड़ाकर गिर पड़ा था और यह भी तुम सुनते कि कैसे स्वामिनी स्वयं उस कीचड़ में से उठकर मुझे स्वामी की मार से बचाने के लिये आई थीं । तुम सुनते कि कैसे स्वामी ने सौगन्धें खाई और स्वामिनी ने भगवान् से प्रार्थना की जैसे पहले कभी नहीं की थी, फिर कैसे मैं चिल्लाया, कैसे वे घोड़े भाग गये, कैसे स्वामिनी की लगाम टूट गई, कैसे जीन कसने की पेट्टी मुझ से खो गई, इसी तरह की बहुत-सी याद रखने योग्य बातें तुम

सुनते जो अब बिना किसी के सामने आये वैसे ही शून्य में नष्ट हो जायेंगी और तुम मरोगे तब भी अनुभवहीन ही रहकर अपनी कब्र में जाओगे ।

कर्टिस : इस हिसाब से तो स्वामी स्वामिनी से कहीं अधिक बिगड़े-दिल आदमी हैं ।

ग्रूमियो : बिलकुल, और इसका निश्चय तुम्हें और तुममें से ऊँचे से ऊँचे घमण्डी को उस समय हो जायगा जब वे यहाँ आ जायेंगे । लेकिन मैं इसकी क्या बातें कर रहा हूँ ? नैथेनियल, जोसफ, निकोलस, फिलिप, वॉल्टर, शुगरसौप और अन्य सभी को बुलाओ । उन सभी के बाल अच्छी तरह कढ़े होने चाहिएँ, नीले कोटों पर ब्रुश से सफाई होनी चाहिये और मोजों के फीते अच्छी तरह बँधे होने चाहिएँ और स्वागत में उन्हें अपने बायें पैर ही भुकाने चाहिएँ, और जब तक वे अपने हाथों को चूम न लें तब तक स्वामी के घोड़े का एक बाल भी उन्हें नहीं छूना चाहिये । क्या वे सभी तैयार हैं ?

कर्टिस : हाँ, सभी तैयार हैं ।

ग्रूमियो : अच्छा तो बुलाओ उन्हें ।

कर्टिस : अरे सुनते हो ? स्वामिनी को सिर भुकाने के लिये तुम्हें स्वामी से मिलना चाहिये ।

ग्रूमियो : स्वामिनी का तो अपना ही सिर है ।

कर्टिस : इसे कौन नहीं जानता है ?

ग्रूमियो : सम्भवतया तुम, जो उनके लिये अपने सिर भुकाने के सम्बन्ध में इतने लोगों को बुला रहे हो ।

कर्टिस : मैं तो उनको स्वामिनी का स्वागत करने को बुला रहा हूँ ।

[तीन या चार सेवकों का प्रवेश]

ग्रूमियो : लेकिन वे तो उनसे कुछ माँगने के लिये नहीं आ रही हैं ।

नैथनियल : कहो, ग्रूमियो ?

फिलिप : कहो, कैसे हो ग्रूमियो ?

जोसफ : क्या हालचाल है, ग्रूमियो ?

निकोलस : कहो दोस्त, ग्रूमियो ।

नैथनियल : मेरे पुराने दोस्त ! बताओ अपनी बात ?

ग्रूमियो : तुम्हारा सभी का स्वागत है । कैसे हो सभी ? तुम बताओ, और हाँ तुम कैसे हो ? अच्छा, बस अब स्वागत और हालचाल पूछना सभी हो गया । अच्छा मेरे फुर्तीले और साफ-सुथरे साथियो ! क्या सभी कुछ तैयार है ? सभी चीजें ठीक तरह है न ?

नैथनियल : सभी चीजें ठीक हैं । यह बताओ, स्वामी कितने पास आ-गये हैं अब ?

ग्रूमियो : बिलकुल पास हैं, बस घोड़े से उतर गये हैं । देखो ऐसा नहीं करना—अरे भगवान् की सौगन्ध । चुप, चुप, स्वामी के आने की आवाज सुनाई दे रही है ।

१. Credit और Borrow : कर्टिस और ग्रूमियो के बीच बातों का खेल चल रहा है । पहले Countenance शब्द को लेकर यही वाक्-कौशल चला था । इसका शाब्दिक अर्थ है सम्मान करना लेकिन सिर झुकाने का प्रयोग करके हमने सम्मान का भावार्थ भी दे दिया है और वाक्-कौशल को भी कुछ हद तक निभा दिया है । लेकिन आगे जब Credit और Debit में बातें चलने लगती हैं, यह कठिन हो जाता है । कर्टिस Credit शब्द का प्रयोग 'सम्मान' के लिये करता है लेकिन ग्रूमियो उसका 'कर्जा मतलब लगाकर बाद में Borrow शब्द का प्रयोग करता है, जिसका मतलब है उधार माँगना । इस तरह यह बेटुका मजाक बढ़ता है ।

(पेट्रू शियो और केटे का प्रवेश)

पेट्रू शियो : कहाँ हैं वे बदमाश ? मेरी रकाव थामने के लिये और घोड़ा लेने के लिये कोई भी दरवाजे पर नहीं है ।

सभी सेवक : यहाँ हैं श्रीमान्, हम सभी यहाँ उपस्थित हैं आपकी सेवा में ।

पेट्रू शियो : यहाँ हैं, यहाँ हैं श्रीमान्, सभी सेवा में उपस्थित हैं, बदमाश, जंगली, गधे कहीं के, यह क्या है ? दरवाजे पर कोई नहीं ! हमारा कोई सम्मान नहीं ! क्या तुम्हारा किसी तरह का फ़र्ज नहीं है ? कहाँ है वह बदमाश गधा जिसे मैंने पहले ही यहाँ भेजा था ?

ग्रूमियो : जी श्रीमान् ! जैसा गधा पहले था, वैसा ही अब हूँ ।

पेट्रू शियो : बदमाश ! धूर्त ! आटे की चक्की के घोड़े ! क्या मैंने तुझसे यह नहीं कहा था कि मुझसे बाग में मिलना और अपने साथ उन सभी बदमाशों को भी ले आना ?

ग्रूमियो : श्रीमान् ! उस समय तक नैथनियल का कोट पूरी तरह बनकर तैयार नहीं हुआ था और गैब्रियल के जूतों की एड़ियाँ अधूरी थीं । पीटर के टोप पर रंग करने के लिये मशाल^१ ही नहीं जली थी । वाल्टर की कटार पर धार नहीं रखी गई थी । कोई भी तो पूरी तरह तैयार नहीं था, सिर्फ़ ऐडम, रैल्फ़ और ग्रैगरी तैयार थे । बाकी के लोग बुरी भद्दी हालत में थे लेकिन फिर भी जैसे भी वे हैं, यहाँ आपके पास आये हैं ।

१. Melt horse : वह घोड़ा जो आटे पीसने की चक्की को चलाने के काम में लिया जाता है ।

२. Link : मशाल जलाकर उसके धुँए से उस टोप को और भी काला किया जाता है जिसका रंग फीका हो जाता था ।

पैट्रू शियो : जाओ बदमाशो ! मेरा खाना अन्दर ले आओ ।

[सेवकों का प्रस्थान]

कहाँ है वह आराम की ज़िन्दगी जो पहले मैंने गुजारी थी ?
कहाँ हैं वे ? बैठ जाओ केटे ! स्वागत है तुम्हारा । साउड,
साउड, साउड, साउड ।

[सेवक खाना लेकर आते हैं]

कब कहा था मैंने ? प्यारी केटे ! अपने चित्त को प्रसन्न कर
लो । मेरे जूते उतारो बदमाश कमीनो ! धूर्त कहीं के ! हाँ,
कब ?

था पादरी पुराने मठ का

ज्यों ही चला पंथ पर सहसा—

भाग जाओ बदमाश ! तू तो मेरे पैर को ही मोड़ता है । इसका
मजा यह ले और अब अपनी गलती को ठीक कर ले । केटे !
अपना चित्त प्रसन्न कर लो । पानी है कुछ यहाँ ? ए, सुना ।

[एक सेवक पानी लेकर आता है ।]

मेरा ट्रॉयलस कुत्ता कहाँ है ? ए ! जाओ यहाँ से और मेरे चचेरे
भाई फर्डिनैंड को भेज देना इधर । ऐसा आदमी है केटे ! जिसको
एक बार तो तुम चूम लोगी और उससे जानकारी हासिल करना
चाहोगी । मेरे सलीपर कहाँ हैं ? क्या मुझे कुछ पानी मिलेगा ?
आओ केटे ! अपने हाथ-पैर धो लो और चित्त को प्रसन्न कर लो ।
अपने पूरे हृदय से इस स्थान से प्रेम करो । ए कमीने आवारा की
औलाद, बदमाश कहीं के, क्या तू पानी नहीं डालेगा ?

केटे : बस अब शान्त रहिये । जो कुछ यह कुसूर हुआ वह बिना चाहे
ही हुआ है ।

पैट्रू शियो : बिलकुल आवारा औरत की औलाद है, लकड़ी तोड़ने

के हथौड़े जैसा सिर है, और कानों पर ठाटा चढ़ा हुआ है धूर्त के ।

आओ केटे बैठ जाओ, मुझे मालूम है, तुम्हें भूख लग रही है ।
प्यारी केटे ! अब तुम इसके लिये धन्यवाद दोगी या फिर मैं ही दूँ ? यह क्या है, गोश्त ?

पहला सेवक : जी हाँ !

पेट्रू शियो : कौन लाया था इसे ?

पहला सेवक : मैं ।

पेट्रू शियो : यह तो जला हुआ है और इसी तरह सभी गोश्त जला हुआ होगा । कैसे कुत्तों से पाला पड़ा है । वह बदमाश बावर्ची कहाँ है ? बदमाशो ! तुम्हारी इतनी हिम्मत कैसे हुई कि बावर्चीखाने में से लाकर इस तरह वह चीज मेरे सामने रख दी जिससे मुझे नफरत है ? ले जाओ इन सभी तश्तरी और प्यालों को उठाकर, लापरवाह गधे, बदमाश, बदतमीज, गुलाम कहीं के !

क्या तू मेरी तरफ गुर्रा रहा है ? अब मैं तुझे सीधा करूँगा ।

केटे : नहीं, नहीं प्राणनाथ ! इतने क्रुद्ध मत होइये । अगर आपकी तबियत ठीक होती तो गोश्त तो अच्छा था ।

पेट्रू शियो : मैं कहता हूँ केटे ! वह पूरी तरह जला हुआ और सूखा था और ऐसे गोश्त को तो छूने तक के लिये डाक्टर ने मुझसे मना कर दिया था क्योंकि इससे मेरे अन्दर आवेश एक-दम बढ़ जाता है और फिर बड़ा गुस्सा आने लगता है इसलिये अब तो अच्छा यही है कि हम दोनों ही उपवास करें क्योंकि वैसे भी हम दोनों का मिजाज गरम है, फिर इस जले हुए गोश्त

के खाने से तो पता नहीं क्या हो। अब धैर्य रखो, कल यह गलती ठीक कर ली जायेगी, इस रात को हम दोनों साथ रखने के लिये ही उपवास करें। आओ, मैं तुम्हें तुम्हारे कमरे में ले चलता हूँ।

[प्रस्थान]

[कई सेवकों का प्रवेश]

नैथनियल : पीटर ! क्या तुमने कभी ऐसा देखा ?

पीटर : वह उसी की चाल से उस औरत को मारता है।

[कर्टिस का प्रवेश]

ग्रूमियो : कहाँ है वह ?

कर्टिस : अपनी पत्नी के कमरे में है और उसको कामनिरोध की शिक्षा दे रहा है, और उस पर बुरी तरह से बिगड़ रहा है, पुकार-पुकारकर उसे डाँट रहा है जिससे वह बेचारी औरत ऐसी परेशानी में पड़ गई है कि न तो उसे यह सुध है कि कहाँ बैठूँ, क्या देखूँ, क्या बोलूँ, बिलकुल उसकी हालत तो वैसी ही हो गई है जैसे किसी ऐसे मनुष्य की होती है जो स्वप्न में से सहसा उठकर आता है। अरे दूर चले जाओ, भागो, देखो वह इधर ही आ रहा है।

[प्रस्थान]

[पेट्रूशियो का प्रवेश]

पेट्रूशियो : इस तरह नम्रता से मैंने अपना शासन जमाया है और मुझे आशा है कि मेरी योजना सफल हो जायेगी। मेरी बाज़ बहुत भूखी है इस समय, और जब तक वह भुके नहीं तब तक उसको भर पेट खाने को नहीं देना चाहिये क्योंकि तब तो वह अपने शिकार की तरफ देखेगी ही नहीं। एक दूसरा रास्ता और है,

मैं अभी अपने नौकर को भेजकर उसको बुलवा लेता हूँ और फिर उसको रातभर जागता हुआ रखूँगा, जैसे हम इन चीलों को रखते हैं जो अपने पंख फड़फड़ाती हैं, उनको मारती हैं और हमारी मर्जी के मुताबिक नहीं करतीं। वह आज गोश्त नहीं खायेगी और न और कोई खायेगा। पिछली रात वह सो नहीं पाई थी तो आज रात को भी वह नहीं सोयेगी जैसे गोश्त के साथ मैंने खराबी निकाल दी है वैसे ही बिस्तरे के साथ भी कोई न कोई निकालूँगा और इधर तो मैं तकिये को फेंकूँगा और उधर गद्दे को। फिर चादरों को और गिलाफों को और इस हल्ले-गुल्ले के बीच मेरा इरादा है कि यह सब कुछ करने में दिखे यही कि यह उसी की खातिर किया जा रहा है और परिणाम यह हो कि पूरी रात भर वह जागती रहेगी। अगर उसकी पलकें झपने लगीं तो मैं जोर से पुकारने और बड़बड़ाने लगूँगा और उसी शोरगुल से वह नहीं सो पायेगी। यह तरीका है औरत को अपनी अच्छाई की ज़्यादती से मारने का और इसी से मैं उसकी कुटिलता और कर्कशता को मिटा दूँगा। अब वह आदमी बोले जो एक कुलटा और कर्कशा को और भी अच्छे तरीके से काबू में कर सकता है, बड़ी मेहरबानी होगी।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[ट्रेनियो तथा हौटेंशियो का प्रवेश]

ट्रेनियो : मित्र लीसियो ! क्या यह सम्भव है कि बियांका ल्यूसैंशियो को छोड़कर किसी दूसरे की ओर आकर्षित है। मैं कहता हूँ श्रीमान् ! वह मुझको भी झूठे वायदे करके धोखे में रखती है।

हौटेंशियो : श्रीमान् ! जो कुछ मैंने कहा है उस पर विश्वास दिलाने के लिये मैं कहता हूँ, जरा यहाँ खड़े हो जाइये और उसके पढ़ाने का ढंग देखिये ।

[बियांका और ल्यूसेंशियो का प्रवेश]

ल्यूसेंशियो : अच्छा श्रीमती ! क्या जो कुछ भी आपने पढ़ा है, उससे आपको फायदा हुआ है ?

बियांका : श्रीमान् ! पहले तो आप मुझे यह निश्चित रूप से बताइये कि आप क्या पढ़ते हैं ?

ल्यूसेंशियो : मैं 'प्रेम करने की कला' पढ़ता हूँ और तुम्हें पढ़ाता हूँ ।

बियांका : श्रीमान् ! अपनी कला में आप पारंगत सिद्ध हों । अपनी कला के अधिकारी ।

ल्यूसेंशियो : और तुम प्रिये ! मेरे हृदय की स्वामिनी बन जाओ ।

हौटेंशियो : तेजी के साथ आगे बढ़ने वाले ही शादी कर लेते हैं, अब आप बताइये । आप ही तो बड़ी सौगन्ध खाया करते थे कि आपकी प्रिया बियांका ल्यूसेंशियो को छोड़कर दुनियाँ में किसी और से प्रेम करती ही नहीं है ।

[प्रस्थान]

ट्रेनियो : ओह घृणित और झूठे प्रेम ! ओ अस्थिर चित्त वाली स्त्री जाति ! लीसियो ! मैं आपसे कहता हूँ, यह बड़ा ही आश्चर्यजनक है ।

हौटेंशियो : बस, अब आप अपनी भूल को सुधार लीजिये । मैं लीसियो नहीं हूँ और जैसा दीख रहा हूँ वैसा संगीतज्ञ भी नहीं हूँ । मैं तो वह हूँ जो अब एक ऐसे प्राणी के लिये जो एक अच्छे आदमी को छोड़कर एक ऐसे नीचे दर्जे के बदमाश को देवता

समझे हुए है, अपने इस बदले हुए वेश में रहने से नफरत करता हूँ ।

आपको बताता हूँ श्रीमान्, मेरा नाम हौटेंशियो है ।

ट्रेनियो : श्रीमान् हौटेंशियो ! मैं प्रायः बियांका के प्रति आपके हार्दिक प्रेम की बात सुनता आया हूँ और अब चूँकि मेरी आँखों ने उसकी चरित्र-हीनता को देखा है, तो मैं आपके साथ हूँ, अगर आपका यही विचार हो चुका है तो अब इस बियांका और उसके सारे प्रेम का सदा के लिये परित्याग कर देना चाहिये ।

हौटेंशियो : देखिये, वे किस तरह एक दूसरे से प्यार कर रहे हैं श्रीमान् ल्यूसेशियो ! यह तो मेरा हाथ है और इसे उठाकर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब कभी भी उससे प्यार नहीं करूँगा और उसको, उस सारे प्रेम के जो मैंने अभी तक उसके प्रति दिखाया है, सर्वथा अयोग्य समझकर सदा के लिये छोड़ दूँगा ।

ट्रेनियो : और मैं भी सच्ची सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि चाहे वह कितनी भी प्रार्थना करे, मैं उसके साथ कभी भी शादी नहीं करूँगा । अरे, शैतान खाये उसे, देखो तो कैसे आवेश में आकर वह उससे प्यार कर रही है ।

हौटेंशियो : काश उसको छोड़कर सारी दुनिया मेरे लिये इसी तरह उसको छोड़ने की प्रतिज्ञा कर ले जिससे मैं अपनी प्रतिज्ञा का निश्चयपूर्वक पालन कर सकूँ । तीन दिन बीतने से पहले मेरी शादी एक मालदार विधवा से हो जायगी जो मुझे बहुत समय से चाहती थी और इतना ही जितना मैंने इस घृणित सिरचढ़ी बदसूरत औरत को चाहा था । अच्छा, विदा श्रीमान् ल्यूसेशियो । स्त्रियों का सुन्दर रूप अब मेरे प्रेम को नहीं जीत पायेगा बल्कि उनकी कोमलता और सहृदयता के प्रति ही मैं आकर्षित हो

पाऊँगा, अच्छा अब आज्ञा दो ! जो भी प्रतिज्ञा मैंने की है, उसका दृढ़ता से पालन करूँगा ।

[प्रस्थान]

ट्रेनियो : श्रीमती बियांका ! एक प्रेमी की प्रिया में जो सौन्दर्य होता है, भगवान् तुम्हें वही दे । प्रिये ! मैं पीछे से तुम्हारे पास आ गया हूँ और हौटेंशियो के सामने मैंने तुम्हें छोड़ने की प्रतिज्ञा कर ली है ।

बियांका : तुम हँसी करते हो ट्रेनियो ! लेकिन क्या तुम दोनों ने ही मुझे छोड़ दिया है ?

ट्रेनियो : हाँ, हम दोनों ने ही यही सौगन्ध खा ली है ।

ल्यूसेंशियो : तब तो हम उस लीसियो से छुट्टी पा गये ।

ट्रेनियो : लेकिन सच मानिये, वह एक बड़ी अच्छी विधवा से शादी करने जा रहा है और वह शादी अभी एक दिन में ही हो जायेगी ।

बियांका : परमात्मा उसको सुखी रखे ।

ट्रेनियो : हाँ, और वह उसको अपनी पालतू बना लेगा ।

बियांका : वह ऐसा ही कहता है ट्रेनियो ।

ट्रेनियो : सच, वह उस स्कूल में गया है जहाँ औरतों को पालतू बनाना सिखाया जाता है ।

बियांका : कैसा स्कूल ? क्या ऐसी भी कोई जगह है ?

ट्रेनियो : हाँ श्रीमती ! पैट्रू शियो वहाँ अध्यापक हैं; जो कितनी ही ऐसी तरकीबें सिखाता है जिनसे एक कुटिला और कर्कशा स्त्री को भी वश में किया जा सकता है और साथ ही उसकी बड़-बड़ाती जीभ पर जादू करना भी वह सिखाता है ।

[बाँइंडेलो का प्रवेश]

बाँइंडेलो : स्वामी ! स्वामी ! मैंने इतनी देर तक देखा कि मैं तो

थक कर चूर हो गया लेकिन आखिरकार मुझे एक प्राचीन देव-दूत पहाड़ी के नीचे आता दिखाई दिया, वह हमारा काम बना देगा ।

ट्रेनियो : वह क्या है बाँइंडैलो ?

बाँइंडैलो : एक व्यापारी है स्वामी ! या कोई ढोंगी पंडित है । पता नहीं क्या है, लेकिन ठीक तरह के कपड़े पहने हुए है और शक्ल-सूरत और वेशभूषा से बिल्कुल एक बाप जैसा ही लगता है ।

ल्यूसेंशियो : लेकिन ट्रेनियो ! उससे कैसे काम लिया जाय ?

ट्रेनियो : अगर वह शीघ्रता से बात पर विश्वास करने वाला हुआ तो वह मेरी बात पर विश्वास कर लेगा । मैं उसको सहर्ष विसेंशियो बनने के लिये तैयार कर लूँगा और उससे बैप्टिस्टा मिनोला को पूरा आश्वासन दिलवा दूँगा । बस, मेरे प्रति अपना प्रेम बनाये रखिये और अब मुझे अकेला छोड़ दीजिये ।

[एक ढोंगी ज्ञानी का प्रवेश]

ज्ञानी : परमात्मा आपकी रक्षा करे श्रीमान् !

ट्रेनियो : आपको भी परमात्मा सुखी रखे श्रीमान् ! स्वागत है आपका । आपको अभी और दूर तक यात्रा करनी है या अपनी यात्रा के छोर पर आप आ पहुँचे हैं ?

ज्ञानी : एक या दो हफ्ते के लिये तो श्रीमान् अब अपनी यात्रा के छोर पर ही हूँ लेकिन फिर इसके बाद आगे जाने का इरादा है । रोम तक जाऊँगा । फिर इसी तरह अगर भगवान् ने ज़िन्दगी दी तो आगे ट्रिपोली तक जाऊँगा ।

ट्रेनियो : किस देश के वासी हैं आप ?

ज्ञानी : मेंटुआ का ।

ट्रेनियो : मेंटुआ के हैं श्रीमान् ! और भगवान् बचाये अपने जीवन की

तनिक भी चिन्ता न करते हुए पैडुआ आये हैं ।

ज्ञानी : मेरा जीवन श्रीमान् ? इसके लिये मैं कैसे भगवान् से प्रार्थना करूँ ? क्योंकि बड़ी कठिनाई का जीवन है मेरा ।

ट्रेनियो : मैटुआ के किसी आदमी का पैडुआ में आना उसकी मृत्यु को उसके साथ लाना है, क्या आप इसका कारण नहीं जानते ? आपके जहाज वेनिस में ठहराये जाते हैं । हमारे और आपके ड्यूकों के बीच कोई आपसी भगड़ा हो गया था, उसी कारण हमारे ड्यूक ने खुले रूप से यह आज्ञा प्रसारित करवा दी है । बड़े आश्चर्य की बात है ! आप नये-नये ही यहाँ आये हैं, नहीं तो आप स्वयं ही इसकी घोषणा को सुन लेते ।

ज्ञानी : हाय ! यह तो मेरे लिये और भी बुरा है क्योंकि मैं फ्लोरेंस से कुछ रकम के बिल लाया हूँ जिन्हें मुझे यहाँ देना है ।

ट्रेनियो : तो श्रीमान् ! वैसे शराफत के नाते इतना तो मैं आपके लिये कर सकता हूँ और यह मैं आपको सलाह दूँगा । पहले तो आप मुझे यह बताइये कि क्या आप कभी पीसा गए हैं ?

ज्ञानी : जी हाँ, पीसा तो मैं प्रायः जाता रहता हूँ । वही पीसा जिसमें गम्भीर प्रवृत्ति के लोग रहते हैं ।

ट्रेनियो : उनमें से क्या आप एक विसैंशियो नाम के व्यक्ति को जानते हैं ?

ज्ञानी : मैं उन्हें जानता तो नहीं लेकिन उनका नाम जरूर सुना है मैंने । बहुत धनी व्यापारी हैं ।

ट्रेनियो : वे मेरे पिता हैं और सच कहता हूँ श्रीमान् ! उनकी शकल से आपकी शकल बहुत कुछ मिलती-जुलती है ।

बाँड्डेलो : जैसे कि एक सेव से एक ऑयस्टर मछली की शकल मिलती-जुलती है ।

ट्रेनियो : इस आपत्ति से मैं आपकी जान बचाऊँगा, इतना काम मैं उनकी खातिर आपके लिए कर सकता हूँ और आप इसको अपना दुर्भाग्य मत मानिये कि आप श्रीमान् विसैंशियों से मिलते-जुलते हैं। उनका नाम और स्थान आपको अपना नाम और स्थान छिपाकर ग्रहण करना होगा और मेरे घर पर आपके ठहरने का प्रबन्ध होगा। यह ध्यान रखना कि इसका पूरी तरह अभिनय-सा आपको करना पड़ेगा, समझ गए आप श्रीमान् ? इस तरह ही जब तक आपका काम इस शहर में पूरा न हो जाय, आप ठहरिये। शराफत के नाते मैंने आपके सामने यह प्रस्ताव रखा है, यदि आप चाहें तो इसको स्वीकार कर लीजिये।

ज्ञानी : ओह श्रीमान् ! अवश्य। मैं तो इसके लिए सदा आपको अपने जीवन का संरक्षक समझूँगा।

ट्रेनियो : अच्छा तो फिर इस सारे काम को ठीक करने के लिए मेरे साथ चलिये। यह बात वैसे चलते हुए मैं आपको बताये देता हूँ कि यहाँ हर एक दिन मेरे पिता की प्रतीक्षा की जा रही है क्योंकि बैप्टिस्टा को पुत्री और मेरे बीच जो शादी होने वाली है, उसमें दहेज देने का आश्वासन पिता ही दे सकते हैं। इस परिस्थिति के बीच मैं आपसे कहूँगा कि मेरे साथ चलिये और कपड़े बदलकर अपना दूसरा वेश धारण कर लीजिये।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[कैथरिना और ग्रूमियो का प्रवेश]

ग्रूमियो : नहीं, नहीं, सच मेरी जान चली जाय; लेकिन मैं इतना साहस नहीं कर सकता।

केटे : जिननी ज्यादा मेरी परेशानी बढ़ती है उतना ही अधिक उसका उन्माद बढ़ता जाता है । क्या वह मुझे इस तरह भूखा मारने के लिए लाया था ? भिखारी भी जब मेरे पिता के दरवाजे पर आकर बिनती करते हैं तो उनको उसी समय भोख मिल जाती है और अगर नहीं तो फिर दूसरी जगह वे पा जाते हैं; लेकिन मैं, जिसने न तो कभी बिनती की किसीसे और न इसकी कभी आवश्यकता समझी, अब गोشت के लिए भूखी हूँ । और रात में न सो पाने के कारण सिर में चक्कर आ रहा है । सौगन्ध खा-खाकर मुझे जागते रखा गया और जोर से चिल्ला-चिल्लाकर आवाजों से मेरा पेट भरा गया और फिर इनके अलावा सबसे ज्यादा गुस्सा तो मुझे इस बात पर आ रहा है कि वह यह सब कुछ सच्चे प्रेम के नाम पर कर रहा है और कहता है कि अगर मैं सोई या मैंने कुछ खाया तो या तो कोई घातक रोग पकड़ लेगा या फिर फौरन दम निकल जायेगा । मैं जाती हूँ और अपने लिए कुछ खाना लाती हूँ । यह मैं चिन्ता नहीं करती कि क्या हो लेकिन अच्छा खाना होना चाहिये ।

ग्रूमियो : बकरे की टाँग के बारे में आपका क्या खयाल है ?

केटे : बहुत अच्छी, सच उसे ही ला दो मुझे ।

ग्रूमियो : लेकिन मुझे डर है कि वह बहुत ही गरम गोشت होता है । एक मोटी भेड़ का गोشت जो बहुत अच्छे ढंग से पकाया गया हो, उसके बारे में क्या खयाल है ?

केटे : मुझे बहुत पसन्द है । अच्छे ग्रूमियो ! ला दो उसे मुझको ।

ग्रूमियो : मैं नहीं कह सकता । मेरे खयाल से वह गरम होता है । गोشت और सरसों के बारे में आपका क्या खयाल है ?

केटे : एक तश्तरी ला दो । वह तो मैं खाना बहुत पसन्द करती हूँ ।

ग्रूमियो : लेकिन सरसों कुछ ज्यादा गरम होती है ।

केटे : अच्छा तो गोश्त ही सही, सरसों रहने दो ।

ग्रूमियो : न, मैं आपको नहीं दूंगा । आप सरसों ज़रूर लेंगी नहीं तो गोश्त नहीं मिलेगा आपको ।

केटे : तो फिर दोनों या एक ही, जिस किसी को तुम चाहो ।

ग्रूमियो : तो फिर गोश्त नहीं, सिर्फ सरसों ।

केटे : जा चला जा बदमाश, धोखेबाज़, भूटे ! चला जा यहाँ से ।

[उसको पीटती है]

तू गोश्त का नाम लेकर ही मेरा पेट भरना चाहता है । तुझ पर और तेरे साथ और सभी के ऊपर मुझे खेद है कि तुम मेरी परेशानी में अपनी जीत समझते हो । चला जा यहाँ से, मैं कहती हूँ ।

[पेट्रूशियो और हौटेंशियो वा गोश्त लिये हुए प्रवेश]

पेट्रू शियो : मेरी केटे कैसी है ? क्या बहुत ज्यादा तकलीफ है ?

हौटेंशियो : श्रीमती ! क्या हाल-चाल है ?

केटे : बहुत खराब हैं, हृद है ।

पेट्रू शियो : अपने दुःख को छोड़कर फिर से प्रसन्न हो जाओ केटे !

अपने चेहरे पर प्रसन्नता लाओ । प्रिये ! देखा, कितना मेहनती हूँ मैं कि खुद ही बनाकर मैं तुम्हारे पास इस गोश्त को लाया हूँ । प्यारी केटे ! मुझे पूरा विश्वास है कि इसके लिए तो तुम मुझे अवश्य धन्यवाद दोगी । क्या, एक भी शब्द नहीं ? अच्छा तो तुम को यह पसन्द नहीं आया और मेरी सारी मेहनत का कोई नतीजा नहीं निकला । सुनो, यह तश्तरी उठाकर ले जाओ ।

केटे : नहीं, नहीं, कृपा करके रहने दीजिये यहीं ।

पैट्रू शियो : छोटे-से छोटा काम भी किया जाता है उसके लिये भी धन्यवाद मिलता है, इसी तरह तुम्हारे गोश्त के हाथ लगाने से पहले मुझे भी मिलना चाहिये था ।

केटे : मैं आपको धन्यवाद देती हूँ ।

हौटेंशियो : श्रीमान् पैट्रू शियो ! बुरी बात है, अब तो आप ही दोषी हैं । आइये श्रीमती केटे ! मैं आपके साथ रहूँगा ।

पैट्रू शियो : हौटेंशियो ! अगर तुम मुझे चाहते हो तो इस सारे गोश्त को खा जाओ । तुम्हारा हृदय नम्र है इसलिये इतनी भलाई तो करो । केटे तो अलग खायेगी । अच्छा तो अब प्रिये ! हम तुम्हारे पिता के घर चलेंगे और इस अवसर को जितनी भी धूम-धाम से मनाया जाये मनाओ ! रेशमी कोट, टोपी, सोने की अँगूठियाँ, गुलूबन्द, दस्ताने और कपड़े को फैलाने वाली कोई चीज़ और स्कार्फ, पंखे आदि से सम्पन्न दूनी बहादुरी से । फिर ऐम्बर के कंगन, माला और यह सभी तरह की धूर्त्तता । अरे क्या तुमने खाना खा लिया है ? दर्जी अपने चमकीले कपड़ों से तुम्हारे शरीर को सजाने के लिए तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा है ।

[दर्जी का प्रवेश]

आओ दर्जी ! हमें इन जेवरों को देखने दो ।

[बिसाती का प्रवेश]

गाउन को सामने देखो । कहो, क्या समाचार है ?

बिसाती : यह टोपी है जिसके लिए आपने कहा था ।

पैट्रू शियो : यह तो किसी 'बेसिन' पर रखकर मोड़ी गई है, तभी मखमली तश्तरी बन गई । हटाओ दूर इसे, बुरी और भद्दी है यह गन्दी । यह कोकिल नाम का जीव है या वालनर पेड़ का

कोई खोखा है या कोई खिलौना, या चालाकी का खेल या बच्चे की टोपी। ले जाओ इसको। मुझे तो इससे बड़ी दो।

केटे : मुझे इससे बड़ी नहीं चाहिये। आजकल के फैशन में यही ठीक है और सभी शरीफ औरतें इसी तरह की टोपी पहनती हैं।

पैट्रूशियो : जब तुम शरीफ हो जाओगी तो तुम भी एक इसी तरह की टोपी पहन लोगी लेकिन उससे पहले नहीं।

हौटेंशियो : वह जल्दी नहीं हो सकता।

केटे : श्रीमान् ! मुझे विश्वास है, आप मुझे कुछ बोलने की अनुमति देंगे और बोलूंगी मैं अवश्य। मैं कोई दूध पीती बच्ची नहीं हूँ। आपसे अच्छे आदमियों ने मुझे अपनी बात कहने की पूरी आजादी दी है फिर अगर आप नहीं सुन सकते मेरी बात तो अपने कान बन्द कर लीजिये। मैं अपने मुँह से अपने हृदय का क्रोध अवश्य उगलूंगी, नहीं तो यदि यह सब कुछ अन्दर दबा रहा तो मेरा हृदय फट जायेगा। इसके बजाय तो जो मैं चाहूँगी खुलकर बोलूंगी।

पैट्रूशियो : तुम ठीक कहती हो। यह बहुत ही बुरी टोपी है, बिल्कुल बेहूदी चीज, किसी काम की नहीं। तुमको यह पसन्द नहीं आई, इसने तुम्हारे प्रति मेरे प्रेम को बढा दिया है।

केटे : तुम मुझसे प्रेम करो या न करो लेकिन टोपी मुझे पसन्द है और इसे मैं जरूर लूंगी। नहीं तो मैं किसी और को कभी नहीं लूंगी।

[बिसाती का प्रस्थान]

पैट्रूशियो : अरे हाँ, तुम्हारा गाउन लाना। यहाँ आओ दर्जी, देखो तो इसे। भगवान् रहम करे, यह क्या फैन्सी ड्रैस शो का कपड़ा बना डाला है। यह क्या है ? एक बाँह ? यह तो एक बड़ी

भारी तोप के बराबर है। क्या, ऊपर और नीचे इस तरह कटी हुई जैसे किसी सेब को काटा जाता है ? यहाँ कटा हुआ है फिर दोनों हिस्सों को मिलाकर रख दिया गया है। यह कटनी-छटनी तो बिलकुल नाई की दुकान में होती है वैसी है। बताओ दर्जी ! यह क्या चीज बनाई है तुमने ?

हौटेंशियो : वह न तो इस टोपी को पसन्द करती है और न इस गाउन को।

दर्जी : लेकिन आपने ही तो श्रीमान् ! कहा था कि मैं इसको वक्त और फैशन के मुताबिक बनाऊँ।

पेट्रू शियो : हाँ हाँ, यही कहा था मैंने, लेकिन अगर तुम्हें याद हो तो मैंने तुमसे यह नहीं कहा था कि वक्त को देखकर तुम इसको बिगाड़ कर ले आओ। जाओ।

मैं इसे नहीं लूँगा। जाओ, अच्छे से अच्छा बनाकर लाओ इसे।

केटे : मैंने तो इससे अच्छा, खूबसूरत और हर तरफ से तारीफ के काबिल ऐसा कोई दूसरा गाउन देखा नहीं। मुझे लगता है तुम मुझे एक कठपुतली बनाना चाहते हो।

पेट्रू शियो : बिलकुल ठीक, वह तुम्हें एक कठपुतली ही बनाना चाहता है।

दर्जी : उनका कहना है कि आप उनको एक कठपुतली बनाना चाहते हैं।

पेट्रू शियो : ओ इतनी धृष्टता ! झूठ बोलता है तू। तू तागे, उंगली के ढकने, गज, तीन चौथाई, आधा गज, चौथाई गज, नाखून ! तू कलीले, छोटे अंडे, घास पर रहने वाले कीड़े ! तूने एक तागे की गिट्टक के बल पर मेरे अपने घर में इतनी धृष्टता दिखाने का साहस किया है ? भाग जा कमीने, नीच, नहीं तो मैं तुझे तेरे

ही गज से ऐसा ठीक कर दूंगा कि तू जिन्दगी भर अपनी इस बेकार बेमतलब की बातें करने की आदत पर सोचेगा। मैं कहता हूँ, मैं कि तूने उसके गाउन को बिगाड़कर रख दिया है।

दर्जी : श्रीमान्, आप भ्रम में है। गाउन तो ठीक वैसा बना है जैसा आपने बनाने को कहा था। ग्रूमियो ने मुझे पहले ही बता दिया था कि यह ऐसा बनना चाहिये और फिर इसके बनाने का हुक्म दिया था।

ग्रूमियो : मैंने उसको कोई हुक्म नहीं दिया था। मैंने तो सामान दिया था।

दर्जी : लेकिन यह किस तरह बने, इसके बारे में आपकी क्या इच्छा थी।

ग्रूमियो : सुई और तागे से बने, यही तो।

दर्जी : क्या आपने इसको काटने के लिये नहीं कहा था ?

ग्रूमियो : लेकिन तुमने तो पूरी तरह सामना किया है।

दर्जी : जी हाँ।

ग्रूमियो : मेरा सामना मत करना। बहुतां का सामना किया होगा लेकिन मेरा मत करना। मैं तुमसे कहे देता हूँ कि तू इस तरह मेरा सामना करके मेरा अपमान नहीं कर पायेगा। मैंने तेरे मालिक से गाउन काटने के लिये जरूर कहा था लेकिन इसको टुकड़े-टुकड़े करने के लिये नहीं कहा था। तू बिलकुल भूठा है।

दर्जी : अच्छा तो इसकी सच्चाई जाँचने के लिये यह पढ़िये जिस फ़ैशन

१. Faced : इस शब्द के दो अर्थ हैं (१) ऊपर की तरफ बहुत सजावट कर डालना। (२) सामना करना। ग्रूमियो इसका प्रयोग दूसरे अर्थ में करता है और दर्जी पहले अर्थ में समझकर 'जी हाँ' कह जाता है, इससे ग्रूमियो नाराज़ होकर आगे की बात कहने लग जाता है।

के बारे में ये कह आये थे, वह सब लिखा है इस कागज में ।

पैट्रू शियो : पढ़ो इसको ।

इस कागज की तो यह भूठ बोलता है । अगर इसने यह कहा है कि मैंने ऐसा कहा था ।

दर्जी : पहली बात तो यह है, कि एक ढोला गाउन होना चाहिये ।

ग्रूमियो : स्वामी ! अगर ढीले गाउन के लिये कभी कहा हो तो मुझे उसके छोरों में सी दीजिये और मटमैले तागे की गेंद से मुझे तब तक मारिये जब तक मे जान से न मार जाऊँ । मैंने गाउन के लिये कहा था ।

पैट्रू शियो : आगे कहो ।

दर्जी : ऊपर वाली पट्टी जो कंधे पर आती है, वह छोटी ।

ग्रूमियो : हाँ, इसको मानता हूँ ।

दर्जी : लम्बी और चौड़ी बाँहें ।

ग्रूमियो : मैंने तो सिर्फ दो बाँहों के लिये कहा था ।

दर्जी : काफ़ी लम्बी-चौड़ी कटी हुई बाँहें ।

पैट्रू शियो : बस यही तो बदमाशी है ।

ग्रूमियो : मेरे ऊपर भूठ इलज़ाम लगाता है श्रीमान् ।

बिलकुल भूठ इलज़ाम । मैंने तो सिर्फ इससे यही कहा था कि बाहों को काटकर सी देना और वह मैं साबित करूँगा चाहे तूने अपनी छिगली में सिलाई की एक टोपी लगा रखी है ।

दर्जी : जो भी मैं कह रहा हूँ, वह सब सच है । मैं तुम्हें ऐसी जगह ले चलता हूँ जहाँ तुम उसकी सचाई जान जाओगे ।

ग्रूमियो : मैं सीधा तेरे साथ चल सकता हूँ । उठा अपने बिल को और मुझे अपना यह नापने का गज दे और फिर जो कुछ करना हो कर ।

हौटैशियो : परमात्मा भला करे ग्रूमियो ! फिर यह तुम्हारे खिलाफ एक लफ़्ज़ भी नहीं बोलेगा ।

पैट्रू सियो : थोड़े में बात यह है कि यह गाउन मेरे लिये नहीं है ।

ग्रूमियो : बिलकुल ठीक कहते हैं श्रीमान् आप । यह तो स्वामिनी के लिये बना है ।

पैट्रू सियो : ले जाओ इसे, तुम्हारा मालिक इसको अपने काम में ले लेगा ।

ग्रूमियो : बदमाश ! मेरी स्वामिनी के इस गाउन को अपने स्वामी के पास ले जा । वह इसको अपने काम में ले लेगा ।

पैट्रू सियो : लेकिन इसमें तुम्हारी क्या अक्लमंदी रही !

ग्रूमियो : श्रीमान् ! आप जितना सोचते हैं, उससे कहीं गहरी अक्लमंदी है—मेरी स्वामिनी का गाउन ले जाकर अपने स्वामी को दे देना । वह इसको अपने काम में ले लेगा । ओ ! लानत है ! लानत है ।

पैट्रू सियो : हौटैशियो ! इस दर्जी को इसका पूरा भुगतान कर देना । बस इतना ही करना—लो, इसे लेकर चलते बनो । बस एक भी लफ़्ज़ मुँह से नहीं निकलना चाहिये ।

हौटैशियो : दर्जी ! मैं कल तुम्हें तुम्हारे गाउन की कीमत दूंगा । उनकी इन आवेशपूर्ण बातों का बुरा न मानना । बस चले जाओ और अपने मालिक से मेरी तारीफ़ करना ।

[दर्जी का प्रस्थान]

पैट्रू सियो : मेरी केटे ! आओ, हम तुम्हारे पिता के घर अपने इन्हीं खराब कपड़ों को पहनकर चलें । हमारे कपड़े खराब होंगे तो क्या हमारे बटुए तो रकम से भरे हुए हैं क्योंकि तुम तो जानती हो, टिमाग व्री तो द्रोता है जो शरीर को सन्दर बनाता है । जिस

तरह घिरे हुए काले बादलों के बीच सूर्य निकलकर अपना गौरव बिखेरता है इसी प्रकार इस मैली-कुचैली पोशाक के भीतर भी गौरव और सम्मान पलता है। चमकीले परों वाली 'जे' चिड़िया क्या पपीहे से अधिक कीमती और अच्छी होती है क्योंकि उसके पर खूबसूरत होते हैं ? फिर क्या एक साँप एक ईल मछली से अच्छा होता है क्योंकि उसकी रंगीन चमकीली खाल आँखों को अच्छी लगती है ?

नहीं मेरी अच्छी केटे ! इस मैली-कुचैली पोशाक से तुम भी किसी तरह बुरी नहीं लगती हो। अगर तुम्हें इसमें शरम आती है तो इस सारी शरम को मेरे सिर पर डाल दो इसलिये अब खुश हो जाओ। अब हम यहाँ से तुम्हारे पिता के घर दावत खाने और मजे उड़ाने चलेंगे। जाओ मेरे आदमियों को बुला लो और सीधे ही हम वहाँ के लिये रवाना हो जायेंगे। घोड़ों को भी 'लॉग लेन' (लम्बी गली) के छोर पर ले आना। वहीं से हम घोड़ों पर सवार होंगे। वहाँ तक हम पैदल चलेंगे। देखना मेरे खयाल से तो अब करीब सात बज गये होंगे और खाने के वक्त तक तो हम वहाँ पहुँच ही जायेंगे।

केटे : लेकिन श्रीमान् ! अब तो करीब दो बजे हैं, मैं सच कहती हूँ और खाने का वक्त तो हमारे वहाँ पहुँचने से पहिले ही हो जायेगा।

पैट्रूशियो : घोड़े तक पहुँचने से पहले सात बज जायेंगे। अब देख लो, जो कुछ मैं बोलता हूँ या करता हूँ, या करने की सोचता हूँ, तुम फिर भी मुझे बीच में टोककर सवाल करने लग जाती हो।

श्रीमान् ! रहने दो। मैं आज नहीं जाऊँगा और जाऊँगा तब जब

उससे पहले वही बज चुकेगा जो मैंने कहा है ।

हौटेंशियो : तो फिर यह शूरवीर तो सूरज पर भी अपनी हुकूमत चलाने लगा ।

[प्रस्थान]

दृश्य ४

[ट्रेनियो के साथ विंसेशियो की वेशभूषा बनाये ज्ञानी का प्रवेश]

ट्रेनियो : श्रीमान् ! यही घर है । अब जैसा मैं कहूँ वैसे ही बने रहिये ।

ज्ञानी : और क्या, नहीं तो फिर मैं परेशानी में नहीं पड़ जाऊँगा । शायद बैप्टिस्टा को मेरी उस वक्त की याद आ जाये जब बीस साल पहले हम जेनोआ में साथ-साथ ही पैग्रेसस में रहते थे ।

ट्रेनियो : यह ठीक है और यह ध्यान रखना कि जिस प्रकार एक पिता को गम्भीर रहना चाहिये उसी प्रकार आप भी हर तरह अपनी गम्भीरता बनाये रखिये ।

[बाँइंडेलो का प्रवेश]

ज्ञानी : मैं आपको इसका विश्वास दिलाता हूँ लेकिन अरे यह तो आपका सेवक आ रहा है । अच्छा होता, अगर यह पढ़ा-लिखा होता ।

ट्रेनियो : आप इसके लिये मत डरिये । बाँइंडेलो ! मैं कहता हूँ, अब अच्छी तरह अपना काम करो । इनको पूरी तरह से विंसेशियो समझ लो ।

बाँइंडेलो : हाँ, हाँ, मेरी तरफ से मत डरिये ।

ट्रेनियो : लेकिन क्या तुमने बैप्टिस्टा के पास इसकी सूचना पहुँचा दी है ?

बाँइंडेलो : मैंने उनसे कह दिया था कि आपके पिता वेनिस में हैं और आज आप उनके पैडुआ आने का इन्तज़ार कर रहे हैं ।

ट्रेनियो : तुम तो बड़े अच्छे बहादुर आदमी हो । लो यह पियो । बैप्टिस्टा

आ रहे हैं। अपने आपको तैयार कर लीजिये श्रीमान्।

[बैप्टिस्टा और ल्यूसेंसियो का प्रवेश। ज्ञानी के पैरों में जूते हैं और सिर खुला हुआ है]

श्रीमान् बैप्टिस्टा ! आप अच्छे मिल गये। ये हैं जिनके बारे में मैंने आपसे कहा था। पिता ! कृपा करके अब मेरी बात का समर्थन कर दीजिये और जो मेरा पैतृक अधिकार है, आश्वासन देकर आप मुझे मेरी बियाँका को दे दीजिये।

ज्ञानी : बस बेटा ! श्रीमान् ! मैं पैडुआ में कुछ अपने ऋणों को चुकाने के लिये आया था, तभी मेरे पुत्र ल्यूसेंसियो ने मुझे बताया कि वह आपकी पुत्री से प्रेम करता है। इस सम्बन्ध में जो भी आपका विचार मुझे ज्ञात हुआ है और जो प्रेम मेरे पुत्र के हृदय में आपकी पुत्री के लिये है, उसके लिये मैं नहीं चाहता कि मेरे पुत्र को अधिक दिनों तक अपनी इच्छा-पूर्ति के लिये प्रतीक्षा करनी पड़े। इसलिये मैं पिता के नाते आपको आश्वासन दिलाता हूँ कि इस सम्बन्ध में मुझे प्रसन्नता है और अगर आप चाहें तो मैं किसी लिखित समझौते के लिये भी तैयार हूँ जिसमें मैं लिखित रूप से आपको आपकी पुत्री से मेरे पुत्र के विवाह के विषय में आश्वासन दिला दूंगा। लेकिन ऐसा मैं चाहता नहीं क्योंकि श्रीमान् ! मैंने आपके बारे में बहुत अच्छी तरह सुना है फिर मैं लिखना-पढ़ना आपके साथ नहीं करना चाहता।

बैप्टिस्टा : श्रीमान् ! जो कुछ मैं कहूँ, उसके लिये मुझे क्षमा करिये। आपकी सचाई और सफ़ाई देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। यह सच है कि आपके पुत्र ल्यूसेंसियो मेरी पुत्री से प्रेम करते हैं। या मेरी पुत्री इनसे प्रेम करती है या दोनों अपनी भावनाओं और हृदय को धोखा देते हैं, इसीलिये अगर आप इतना ही कह

दें कि आप इस विवाह के अवसर पर मेरी पुत्री को अच्छा दहेज देंगे तो श्रीमान् विवाह पक्का हो गया और सारी चीजें पक्की हो गई। मैं सहर्ष अपनी पुत्री का विवाह आपके पुत्र के साथ कर दूंगा।

ट्रेनियो : मैं आपको धन्यवाद देता हूँ श्रीमान् ! लेकिन यह बताइये कि यह समझौता लिखित रूप में कहाँ होगा और कहाँ हमारे विवाह की बात पक्की होगी ?

बैटिस्टा : मेरे घर में तो नहीं ल्यूसेंसियो। क्योंकि तुम जानते हो, घड़ों के भी कान होते हैं और फिर उस बूढ़े ग्रेमियो के अलावा जो भी सुन रहा है। यहाँ और भी बहुत से नौकर हैं, इससे अवश्य हमारे काम में बाधा आ सकती है।

ट्रेनियो : तो फिर आपको पसन्द हो तो मेरे घर पर रखिये। वहीं मेरे पिता ठहरे हुए हैं और आज रात में ही हम चुपचाप सारा काम कर लेंगे। अपना कोई नौकर भेजकर अपनी पुत्री को यहाँ बुला लीजिये। मेरा नौकर जाकर अर्जीनवीस को बुला लायेगा अभी। सबसे बुरी बात तो यह है कि इतना कम समय मेरे पास बचा है कि घर पर आपके लिये बहुत अच्छी तरह की दावत की तैयारी नहीं हो सकेगी।

बैटिस्टा : नहीं, नहीं, ठीक है।

केम्बियो ! जल्दी से घर जाकर बियांका को यहाँ ले आओ और अगर तुम कुछ कहो तो यही कहना कि ल्यूसेंसियो के पिता पेंडुआ आ पहुँचे हैं। अब तो वह ल्यूसेंसियो की पत्नी बन जायेगी।

ल्यूसेंसियो : मैं देवताओं से इसकी अपने पूरे दिल से प्रार्थना करता हूँ।

[प्रस्थान]

ट्रेनियो : बस अब देवताओं से प्रार्थना करते हुए ही मत अटके रहो, जाओ यहाँ से ।

श्रीमान् बैप्टिस्टा ! मैं आगे-आगे रास्ता बताता चलूँगा । एक तश्तरी तो आपको बहुत ही पसन्द आयेगी । आइये, पीसा में और भी अच्छी मिलेगी ।

बैप्टिस्टा : मैं आपके पीछे-पीछे चलता हूँ ।

[ट्रेनियो, ज्ञानी तथा बैप्टिस्टा का प्रस्थान]

बाँइंडेलो : कोम्बियो ।

ल्यूसैशियो : क्या कहते हो तुम बाँइंडेलो ?

बाँइंडेलो : क्या तुमने मेरे स्वामी का आँख मिचकाना और तुम्हारे ऊपर हँसना देखा ?

ल्यूसैशियो : लेकिन बाँइंडेलो ! उससे क्या ?

बाँइंडेलो : कुछ भी नहीं लेकिन वे मुझे यहाँ पीछे इसीलिये छोड़ गये हैं कि मैं उनके इन इशारों का मतलब निकालूँ ।

ल्यूसैशियो : हाँ हाँ, बताओ ।

बाँइंडेलो : अच्छा तो सुनो—बैप्टिस्टा तो भूठे बेटे के भूठे बाप से बातें करने में लगा हुआ है, इसलिये, उससे तो कोई खतरा नहीं है ।

ल्यूसैशियो : उससे क्या ?

बाँइंडेलो : उसको पुत्री को तो खाने के लिये तुम ही बुलाकर लाओगे ।

ल्यूसैशियो : तब ।

बाँइंडेलो : सेन्ट लेक चर्च पर वह बूढ़ा पादरी हर वक्त तुम्हारे हुकम के नीचे है ही ।

ल्यूसैशियो : तो फिर इस सबसे क्या बनेगा ?

बाँइंडेलो : इसके अलावा मैं कुछ नहीं कह सकता कि जब तक वे उस

समझाते के मामले में लगे हुए हैं उस बीच तुम अपने प्रति उसका आश्वासन ले लो। क्या ? यही कि उस पर एकमात्र तुम्हारा ही अधिकार होगा। पादरी को गिराधर ले जाना और उसके साथ कुछ सच्चे गवाह और क्लर्क को ले जाना। अगर जो तुम चाहते हो, वह यह बात नहीं है तो फिर मुझे तुमसे कुछ नहीं कहना। सिर्फ इतना ही कहूँगा कि फिर बियांका से सदा के लिये विदा माँग लेना।

ल्यूसेंसियो : सुनो बाँइंडेलो !

बाँइंडेलो : मैं नहीं ठहर सकता। मैं एक ऐसी औरत को जानता हूँ जिसने दोपहर के बाद उस वक्त शादी की जब वह बाग में खरगोश को खिलाने के लिये हरी घास लेने गई थी। इसी तरह तुम कर सकते हो। बस विदा मेरे स्वामी ! मेरे दूसरे स्वामी ने मुझे सेन्ट लेक से पादरी को लाने के लिये भेजा है और तुम अपने साथ वह लाओ जिसकी तुमको आज्ञा मिली है।

[प्रस्थान]

ल्यूसेंसियो : अगर वह इस तरह मान गई तो मैं अवश्य ऐसा ही करूँगा। अगर वह इसको पसन्द करेगी तो फिर शंका किस बात की है। होना है वह हो, मैं बिना रोकटोक के सीधे उसके पास जाऊँगा ! अगर कैम्बियो उसके बिना गया तो अच्छा नहीं होगा।

[प्रस्थान]

दृश्य ५

[पेट्रूशियो, कटे, तथा हौटेंशियो का प्रवेश]

पेट्रूशियो : चलो भगवान् के नाम पर फिर एक बार अपने पिता के

घर चलें। अरे वाह ! चाँद किस अनुपम सुन्दरता के साथ चमक रहा है।

केटे : चाँद ? सूरज है। इस समय चाँदनी नहीं खिल रही है।

पेट्रू शियो : मैं कहता हूँ, यह चाँद है जो इतनी सुन्दरता के साथ चमक रहा है।

केटे : मैं जानती हूँ, यह सूरज है जो इतना तेज चमक रहा है।

पेट्रू शियो : अच्छा तो अब मैं अपनी माँ के पुत्र या मेरी अपनी सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि चाँद, तारा और तुम्हारे पिता के यहाँ जाने से पहले जो कुछ भी मैं कहूँगा वही होगा। जाओ। हमारे घोड़ों को वापिस ले आओ। हमेशा बीच में टोकना, टोककर सवालात पूछना, फिर टोकना इसके अलावा और कोई काम ही नहीं।

हौटेंशियो : जैसा ये कहें वैसा ही कहो। नहीं तो हम कभी भी नहीं जा पायेंगे।

केटे : कृपा करके आगे तो चलिये, देखिये हम कितने आगे आ चुके हैं। ठीक है यह चाँद है, या आप कहें तो सूरज है और जो कुछ भी आप कहेंगे वही है। अगर आप इससे आगे इसे एक मौमबत्ती कहें तो, मैं सौगन्ध खाकर कहती हूँ, मैं भी इसे वही कहूँगी।

पेट्रू शियो : मैं तो कहता हूँ, यह चाँद है।

केटे : मैं जानती हूँ, यह चाँद है।

पेट्रू शियो : अच्छा तो फिर तुम इतना भूठ बोलतो हो। देखती नहीं हैं, यह तो दिव्य सूर्य है।

केटे : तो फिर परमात्मा को धन्यवाद है, यह दिव्य सूर्य हो है। लेकिन जब आप कहेंगे कि यह सूर्य नहीं है तब यह सूर्य नहीं होगा। जैसे ही आपका दिमाग बदल गया; वैसे ही चाँद बदल गया। आप

इसका जो भी नाम रखेंगे, चाहे वही जो यह है, कैथरिना उसी को मान लेगी ।

हौर्टेशियो : पैट्रू शियो ! अब अपने ठीक रास्ते पर चलिए । मैदान जीत लिया ।

पैट्रू शियो : अच्छा तो आगे बढ़ो, आगे बढ़ो । इस तरह से गेंद लुढ़कनी चाहिये, लेकिन दुर्भाग्यवश भुके हुए तख्ते के विपरीत नहीं । अरे चुप रहना, ये कौन लोग आ रहे हैं यहाँ ?

[विसेंशियो का प्रवेश]

अहा, श्रीमती ! नमस्ते ! कहाँ चलीं ? प्रिये केटे ! तुम्हीं बताओ और सच-सच बताना कि क्या तुमने कभी इनसे अधिक सुन्दर स्त्री को देखा है ? इनके गालों पर तो रक्तिम और श्वेत आभाओं का मानो संघर्ष चल रहा है । बताओ तो आकाश में ऐसे कौन-से सुन्दर सितारे खिलते हैं, जैसी इनकी आँखें हैं जो इनकी दिव्य मुख-मुद्रा को शोभायमान करती हैं ।

सुन्दरी ! एक बार फिर मेरी नमस्ते स्वीकार करिये ।

प्रिये केटे ! इनकी सुन्दरता के लिए इनको अपने गले से तो लगा लो ।

हौर्टेशियो : यह तो एक आदमी को औरत बनाकर इस तरह उसे पागल कर डालेगा ।

केटे : प्रिये, सुन्दरी, मधुर स्वभाव वाली कुमारी कन्या ! तुम किधर जा रही हो ? कहाँ है तुम्हारा घर ? सच, ऐसी सुन्दरी पुत्री को जन्म देने वाले माता-पिता कितने सुखी होंगे और उनसे भी अधिक सुखी तो वह आदमी होगा, जो तुम्हें अपनी पत्नी के रूप में पाने का सौभाग्यशाली होगा ।

पैट्रू शियो : क्यों केटे ! क्या हुआ है तुम को ? मेरे खयाल से तुम पागल

तो नहीं हो गई हो ? यह तो बहुत बड़्ढा आदमी है जिसके चेहरे और शरीर पर झुर्रियाँ पड़ गई हैं। जैसा तुम कह रही हो, यह कोई कन्या नहीं है।

कटे : ओ ! वृद्ध पिता ! क्षमा करिये। सूरज की रोशनी में मेरी आँखों में ऐसी चकाचौंध पैदा हो गई है कि अब जो कुछ दिखती है, हरियाली ही दिखती है। क्षमा करना मेरे इस दृष्टि-भ्रम के लिए। अब मैं देख रही हूँ कि आप तो एक वृद्ध पिता हैं। क्षमा करना मेरी इस भूल के लिए।

पेट्रू शियो : क्षमा कर दीजिये वृद्ध श्रीमान् ! और हमें कृपया यह भी बतना दीजिये कि आप किधर जा रहे हैं। अगर आप हमारे साथ रहे तो सच हमें इसके लिए बड़ी प्रसन्नता होगी।

विसेंशियो : श्रीमान् और आप से भी कहता हूँ श्रीमती, जिन्होंने मिलते ही अपने विचित्र ढंग से मुझे आश्चर्य में डाल दिया, कि मेरा नाम विसेंशियो है। पीसा मेरा निवास-स्थान है और अब मैं अपने उस पुत्र से मिलने जिससे बिछुड़े हुए मुझे बहुत दिन हो गए हैं, पैडुआ को जा रहा हूँ।

पेट्रू शियो : क्या नाम है उसका ?

विसेंशियो : ल्यूसेशियो, श्रीमान् !

पेट्रू शियो : बड़े अच्छे मिले और फिर आपके पुत्र के बारे में जानकर तो और भी अधिक प्रसन्नता हुई। अब आपकी आयु की दृष्टि से भी और सामाजिक नियम की दृष्टि से भी मैं आपको अपना पिता कह सकता हूँ क्योंकि आपके पुत्र ने मेरी पत्नी की बहिन से विवाह किया है। आश्चर्य मत करिये और न किसी प्रकार से दुःखी होइये। बड़े सम्मानित परिवार की लड़की है और फिर उसका देहेज भी बहुत है, श्रेष्ठ कुल में जन्मी है, इस सबके

अलावा इतनी गुणवती है कि वह किसी भी श्रेष्ठ पुरुष की पत्नी होने योग्य है । आओ वृद्ध विसेशियो ! हम आपस में गले मिल लें और आपके उस श्रेष्ठ पुत्र की ओर चलें, जो आपके आगमन से अत्यंत प्रसन्न होगा ।

विसेशियो : लेकिन क्या यह सारी बात सच है ? या मज़ाकिया मुसाफिरो की तरह आपका यह कोई मज़ाक है, जैसे आपकी शायद यह आदत हो कि जिससे भी मिलें उसी से कुछ न कुछ मज़ाक करने लग जायें ?

हौटेशियो : नहीं पिता ! मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, यह सब सच है ।

पैटू शियो : आइये, हमारे साथ चलिये और स्वयं इसकी सचाई को देख लीजिये । हमारे पहले मज़ाक ने आपको यह संदेह करने की ओर प्रेरित किया है ।

[प्रस्थान]

हौटेशियो : अच्छा पैटू शियो ! इस चीज़ ने अब मुझ में हिम्मत बँधा दी है । अगर मेरी विधवा भी इसी तरह कर्कशा निकली तो फिर तुमने हौटेशियो को भी बुरी तरह बिगड़ना सिखा दिया है ।

[प्रस्थान]

पाँचवाँ अंक

दृश्य १

[बाँइंडेलो, ल्यूसेंशियो और बियांका का प्रवेश । ग्रेमियो पहले से ही बाहर है]

बाँइंडेलो : शीघ्रता करिये श्रीमान् ! पादरी तैयार बैठा है ।

ल्यूसेंशियो : मैं बस उड़ता हूँ यहाँ से बाँइंडेलो ! लेकिन शायद तुम्हारी वहाँ कोई जरूरत पड़े, इसलिए तुम चले जाओ ।

[ल्यूसेंशियो तथा बियांका का प्रस्थान]

बाँइंडेलो : नहीं ! मैं तुम्हारे पीछे गिर्जाघर अवश्य जाऊँगा और फिर जितनी जल्दी हो सकेगा उतनी जल्दी मैं अपने स्वामी के पास लौटकर आऊँगा ।

[प्रस्थान]

ग्रेमियो : मुझे आश्चर्य होता है, केम्बियो अभी तक नहीं आया है ।

[पेट्रू शियो, केटे, विसेंशियो तथा सेवकों का प्रवेश]

पेट्रू शियो : श्रीमान् ! यह ल्यूसेंशियो के घर का दरवाजा है । मेरे पिता के सभी रीछ बाज़ार के अधिक निकट हैं इसलिए मैं आपसे जाने की आज्ञा चाहता हूँ ।

विसेंशियो : नहीं, नहीं; जाने से पहले थोड़ा पी तो जाइये । मेरे विचार से मैं यहाँ आपका स्वागत कर पाऊँगा । ऐसा लगता है कि कुछ खुशी का शोरगुल इधर ही बढ़ता चला आ रहा ।

[दरवाजा खटखटाना]

ग्रेमियो : वे अन्दर किसी काम में लगे हुए हैं । जोर से खटखटाइये ।

[ज्ञानी खिड़की से बाहर देखता है]

ज्ञानी : कौन है जो इस तरह दरवाजे को खटखटा रहा है जैसे मानो इसको तोड़ ही डालेगा ?

विसेंशियो : क्या ल्यूसेंशियो अन्दर हैं ?

ज्ञानी : अन्दर हूँ श्रीमान् ! लेकिन उनसे कोई बात नहीं कर सकता ।

विसेंशियो : लेकिन क्या उस समय भी नहीं जब कोई उसकी प्रसन्नता के लिए एक सौ या दो सौ पाउण्ड लाया हो ?

ज्ञानी : अपने इन एक सौ पाउण्ड्स को अपने पास ही रखिये । जब तक मैं जीवित हूँ उसके लिए किसी की भी आवश्यकता नहीं है ।

पैट्रू शियो : मैंने कहा नहीं था आपसे कि आपके पुत्र को पैंडुआ में लोग बहुत प्यार करते हैं ? सुनिये श्रीमान् ! यह सब मज़ाक और बेकार की बातें छोड़कर श्रीमान् ल्यूसेंशियो से कह दीजिये कि उनके पिता पीसा से आये हैं और दरवाजे पर खड़े उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

ज्ञानी : तुम भूठ बोलते हो । उसके पिता तो पैंडुआ से आये हैं और यहीं खिड़की से बाहर देख रहे हैं ।

विसेंशियो : क्या आप उसके पिता हैं ?

ज्ञानी : जी हाँ, अगर मैं उसकी माता की बात पर विश्वास करूँ तो वह यही कहती है ।

पैट्रू शियो : यह क्या है श्रीमान् ? यह तो आपकी पूरी धूर्तता है कि आपने किसी दूसरे आदमी का नाम अपने नाम की जगह रख लिया है ।

ज्ञानी : पकड़ लो इस बदमाश को । मुझे पूरा विश्वास है, यह मेरी शक्ल-सूरत बनाकर इस शहर में किसी आदमी को ठगने के लिए आया है ।

[बॉइडेलो का प्रवेश]

बॉइडेलो : मैंने उनको गिरजाघर में साथ-साथ देखा है। परमात्मा उनकी यात्रा सफल करे। लेकिन यहाँ कौन है ? मेरे वृद्ध स्वामी विसैंशियो ? अब हमारे सारे किये कराये पर पानी फिरा और सारा खेल खत्म हुआ।

विसैंशियो : इधर आओ, ओ फाँसी के तख्ते पर बैठो चिड़िया !

बॉइडेलो : मैं हो सकता हूँ श्रीमान् ! मुझे आशा है।

विसैंशियो : इधर आ बदमाश, धूर्त ! क्या तू मुझे भूल गया ?

बॉइडेलो : आपको भूल गया, नहीं श्रीमान् ! मैं आपको नहीं भूल सकता क्योंकि मैंने अपने पूरे जीवन भर आपको कभी देखा ही नहीं।

विसैंशियो : तूने ओ बदमाश चालाक कमीने। क्या तूने अपने स्वामी के पिता विसैंशियो को कभी नहीं देखा ?

बॉइडेलो : क्या मेरे वृद्ध सम्माननीय पुराने स्वामी ? हाँ, हाँ अवश्य, देखिये वे खिड़की से बाहर देख रहे हैं।

विसैंशियो : क्या निस्संदेह ऐसा ही है ?

[वह बॉइडेलो को पीटता है।]

बॉइडेलो : बचाओ, बचाओ, मदद करो। यह देखो, यह पागल मेरी हत्या कर डालेगा।

[प्रस्थान]

ज्ञानी : बचाओ बेटा ! श्रीमान् बैप्टिस्टा ! बचाइये।

[खिड़की में से चला जाता है।]

पैट्रू शियो : केटे ! आओ अलग हटकर खड़े हो जायें और इस भगड़े का अन्त देखें।

[ज्ञानी का सेवकों तथा बैप्टिस्टा और ट्रेनियो के साथ प्रवेश]

ट्रेनियो : श्रीमान् ! आप कौन हैं, जो मेरे सेवक को इस तरह मारते हैं ?

विसेंशियो : मैं क्या हूँ श्रीमान् ! अच्छा तो आप ही क्या हैं ? ओह अमर देवताओ ! बड़ा पूरा बदमाश है । रेशमी डबलैट है, मखमली मौजे हैं, लाल कलोक है और एक ऊँचा टोप । ओह ! सच, मैं तो लुट गया, मैं तो लुट गया । मैं तो घर पर एक अच्छा गृहस्थी बनकर रहता हूँ लेकिन मेरा बेटा और मेरा सेवक दोनों ही सबको यूनिवर्सिटी में खर्च कर डालते हैं !

ट्रेनियो : क्या हुआ ? बात क्या है ?

बैप्टिस्टा : क्या वह आदमी पागल है ?

ट्रेनियो : श्रीमान् ! आपके कपड़ों को देखकर तो लगता है कि आप कोई बहुत ही गम्भीर और पुरानी तरह के आदमी हैं लेकिन आपकी बातें सिद्ध करती हैं कि आप एक पागल आदमी हैं । क्यों श्रीमान् ! अगर मैं मोती और सोना पहनूँ तो आपको इससे क्या मतलब । मैं अपने अच्छे पिता को धन्यवाद देता हूँ । मैंने इसको निबाह लिया ।

विसेंशियो : तुम्हारा पिता । ओह बदमाश ! वह तो बर्गेनो में पाल बनाने वाला है ।

बैप्टिस्टा : आप गलत कहते हैं श्रीमान् ! बिल्कुल गलत । अच्छा बताइये, आप इनका नाम क्या जानते हैं ?

विसेंशियो : इसका नाम, जैसे कि मैं जानता ही नहीं हूँ । जब यह तीन साल का था तभी से मैंने इसको स्वयं पाला है । ट्रेनियो है इसका नाम ।

ज्ञानी : भाग जा, भाग जा पागल गधे ! उसका नाम तो ल्यूसेंशियो

है और वह मरा पुत्र और मेरी सारी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी है।

विसेंशियो : ल्यूसेंशियो । ओह, इसने अपने स्वामी की हत्या कर दी मालूम होती है । मैं ड्यूक के नाम पर तुमसे कहता हूँ, इसको पकड़ लो । हाय मेरे बेटे ! मेरे बेटे ! बता मुझे बदमाश ! मेरा बेटा ल्यूसेंशियो कहाँ है ?

ट्रेनियो : एक अधिकारी को बुलाना । इस पागल धूर्त को जेल ले जाओ । पिता बैटिस्टा ! आप देखिये कि वह यहाँ जल्दी से आ जाये ।

विसेंशियो : मुझे जेल ले जाने को ?

ग्रेमियो : ठहरो अधिकारी ! ये जेल नहीं जायेंगे ।

बैटिस्टा : बोलिये मत श्रीमान् ग्रेमियो ! मैं कहता हूँ, यह जेल जायेगा ।

ग्रेमियो : श्रीमान् बैटिस्टा ! सावधानी से काम करिये जिससे आप इस मामले में धोखा न खा जायें । मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि यही सच्चे विसेंशियो हैं ।

ज्ञानी : शपथ खाइये, अगर आप में साहस है तो ।

ग्रेमियो : मैं शपथ खाने का साहस नहीं रखता ।

ट्रेनियो : तब तो आप और भी अच्छी तरह यह कहिये कि मैं ल्यूसेंशियो नहीं हूँ ।

ग्रेमियो : नहीं । मैं जानता हूँ कि आप ही ल्यूसेंशियो ह ।

[बाँइंडेलो, ल्यूसेंशियो तथा बिपांका का प्रवेश]

बैटिस्टा : ले जाओ इस बेवकूफ को जेल ।

विसेंशियो : ओह, धूर्त बदमाश कमीने । इस तरह अपरिचित व्यक्तियों के साथ दुर्व्यवहार किया जा सकता है ?

बाँइंडेलो : ओह, हम तो बरबाद हो गए । उधर वह देखो । वही आ

गया है। उसको झूठा साबित करो, नहीं तो फिर हमारा सभी का पामा पलट जायेगा।

[बॉइडेलो का प्रस्थान। साथ में ट्रेनियो और जानी भी जितनी शीघ्रता से हो सकता है जाते हैं।]

ल्यूसेंशियो : (घुटनों के बल झुककर) क्षमा करिये मेरे अच्छे पिता।

विसेंशियो : क्या मेरा बेटा अभी जीवित है ?

बियांका : क्षमा करिये पूज्य पिता !

बैण्टिस्टा : तुमने यह नाराज करने का काम क्यों किया है ? ल्यूसेंशियो कहाँ हैं ?

ल्यूसेंशियो : वास्तविक विसेंशियो का वास्तविक पुत्र ल्यूसेंशियो यही है जिसने आपकी पुत्री से विवाह कर लिया है जबकि बनावटी रूप बनाने वालों ने आपकी आँखों को धोखा दिया।

ग्रेमियो : यह तो हम सभी को धोखा देने के लिए एक षड्यन्त्र रचा गया था जिसका एक गवाह है।

विसेंशियो : वह बदमाश ट्रेनियो कहाँ है जिसने इतनी धृष्टता दिखाकर मेरा सामना किया था ?

बैण्टिस्टा : कहिये, क्या यह मेरा केम्बियो नहीं है ?

बियांका : केम्बियो का ल्यूसेंशियो में रूप परिवर्तन हो गया है।

ल्यूसेंशियो : प्रेम ही इन सभी आश्चर्यजनक घटनाओं का निर्माता है। बियांका के प्रेम ने मुझे ट्रेनियो से अपना रूप बदलने के लिए प्रेरित किया और उसने इस शहर में मेरा रूप धारण किया और अन्त में मैं अपने परम सुख के गंतव्य पर जिसकी मुझे कामना थी आ पहुँचा हूँ। जो कुछ भी ट्रेनियो ने किया, उसके लिए मैंने ही उसको बाध्य किया था, इसलिए अच्छे पिता ! मेरे लिए उसको क्षमा कर दीजिये।

विसेंशियो : मैं उस बदमाश की नाक तो तोड़ूंगा जो मुझे जेल भेज रहा था ।

बैण्टिस्टा : लेकिन सुनिये श्रीमान् ! क्या आपने बिना मुझसे पूछे ही मेरी पुत्री से विवाह कर लिया है ?

विसेंशियो : डरिये नहीं बैण्टिस्टा ! हम आपको संतुष्ट कर देंगे । जाइये । लेकिन मैं इस धूर्तता का बदला चुकाने के लिए अन्दर जाऊंगा ।

[प्रस्थान]

बैण्टिस्टा : और मैं इस धूर्तता की गहराई का पता लगाने ।

[प्रस्थान]

ल्यूसेंशियो : बियांका ! डरो मत । तुम्हारे पिता तुम्हारे ऊपर क्रुद्ध नहीं होंगे ।

[ल्यूसेंशियो तथा बियांका का प्रस्थान]

ग्रेमियो : मेरी रोटी तो अधपकी है लेकिन मैं दूसरों के बीच अन्दर जाऊंगा । सिर्फ दावत के हिस्से के अलावा और किसी बात की आशा नहीं रखूंगा ।

[प्रस्थान]

केटे : प्राणनाथ ! इस भगड़े का अन्त देखने के लिए हम भी इनके पीछे चलें ।

पैट्रू शियो : पहले मुझको प्यार करो केटे, फिर हम जरूर चलेंगे ।

केटे : क्या गली के बीच में ?

पैट्रू शियो : क्या तुम मुझी से शरमिन्दा हो रही हो ?

केटे : नहीं तो, परमात्मा न करे, लेकिन आपका चुम्बन लेने में मुझे शरम लगती है ।

पैट्रू शियो : अच्छा तो फिर चलो घर चलें । आओ चलो लड़के ।

केटे : मैं आपको जरूर एक चुम्बन दूंगी, प्राणनाथ ! ठहर जाइये ।

पैट्रू शियो : क्या यह ठीक नहीं है ? आओ मेरी अच्छी प्यारी केटे ।

कभी नहीं से तो अच्छा एक बार है, लेकिन इतनी देर बाद कभी नहीं ।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[बैण्टिस्टा, विसैशियो, ग्रेमियो, जानां, ल्यूसैशियो और बियांका, पैट्रू शियो और कैथरिना, होटैशियो और विधवा, बॉइंडेलो तथा ग्रूमियो का प्रवेश । कुछ सेवक ट्रेनियो के साथ दावत के बाद का हल्का-सा खाने का सामान ला रहे हैं ।]

ल्यूसैशियो : यद्यपि समय तो बहुत लगा लेकिन आखिरकार बेसुरे तार एक स्वर में मिल ही गए और जो संघर्ष चल रहा था उसका भी अन्त हो चुका है । अब तो वह समय है जबकि हमें अपनी चालाकियों तथा उन खतरों पर जो अब समाप्त हो चुके हैं, हँसना चाहिये । मेरी प्रिया बियांका ने मेरे पिता का स्वागत किया है, उसी प्रकार मैं भी उसी सहृदयता के साथ तुम्हारा स्वागत करता हूँ, भाई पैट्रू शियो और बहिन कैथरिना ! तुम्हारा भी तुम्हारी प्यारी विधवा के साथ स्वागत है होटैशियो । आओ, जो सबसे अधिक श्रेष्ठ है, उसके साथ बैठकर दावत खाओ, स्वागत है तुम्हारा । हमारी इतनी बड़ी खुशी के बाद दावत तैयार है, शायद सभी को इस समय भूख भी खूब लग रही है । आओ अब खाने और बातें करने दोनों कामों के लिए बैठें ।

पैट्रू शियो : नहीं सिर्फ बैठने और खाने के अलावा और कुछ नहीं ।

बैण्टिस्टा : पेंडुआ की देन है यह सहृदयता बेटा पैट्रू शियो ।

पेट्रू शियो : पैंडुआ की कुछ देन नहीं है, सिवाय उसके जो सहृदय है ।

हौटेंशियो : हम दोनों के लिए, काश यह बात ठीक होती ।

पेट्रू शियो : ओ सच कहता हूँ, हौटेंशियो तो अपनी विधवा से डरता है ।^१

विधवा : मैं उससे बिलकुल नहीं डरती ।

पेट्रू शियो : तुम तो बहुत अक्लमंद हो लेकिन फिर भी तुम मेरी बात का गलन मतलब लगाती हो । मेरा मतलब था कि हौटेंशियो तुमसे डरता है ।

विधवा : जिसके सिर में चक्कर आता है वह सारी दुनिया को ही घूमता हुआ देखने लगता है ।

पेट्रू शियो : बड़ा सीधा जवाब दिया ।

कटे : श्रीमती ! यह आपने कैसे कह दिया ?

विधवा : यही मैं आपसे अर्थ धारण करती हूँ ।

पेट्रू शियो : क्या ? गर्भ धारण करती हूँ ? मुझसे ?^२ अरे हौटेंशियो कैसे पसन्द करेगा इसको ?

हौटेंशियो : मेरी विधवा का तो कहना है कि इसी तरह का अर्थ वह आपसे धारण करती है ।

पेट्रू शियो : खूब ठीक किया । चूम लो इसी के लिए उसको, प्यारी विधवा ।

१. Afeard : इस शब्द के दो अर्थ हैं—डराना और डरना । पेट्रू शियो तो इसका प्रयोग दूसरे अर्थ में करता है और विधवा पहले अर्थ को पकड़कर एक साथ आवेश में आकर उत्तर देती है ।

२. Conceive : इस शब्द के दो अर्थ हैं—(१) अर्थ धारण करना (२) गर्भवती करना या होना । विधवा पहले अर्थ में इस शब्द का प्रयोग करती है लेकिन पेट्रू शियो दूसरे अर्थ में लेकर विधवा का मजाक बना देता है । फिर हौटेंशियो उसको ठीक करता है ।

केटे : जिसके सिर में चक्कर आता है वह सारी दुनिया को घूमता हुआ देखने लगता है। कृपया बताइये तो, क्या मतलब है इसका ?

विधवा : तुम्हारे पति को एक कर्कशा ने परेशान किया था, अपने उसी दुःख से वे मेरे पति के दुःख को नापते हैं। अब मालूम हो गया तुम्हें इसका मतलब ?

केटे : बड़ी नीच बात है।

विधवा : ठीक है, मेरा तुम्हीं से ही मतलब था।

केटे : मैं तुम्हारा सम्मान करती हुई, निस्संदेह नीच हूँ।

पैट्रू शियो : हाँ केटे ! उसको हरा दो।

हौटैशियो : हाँ मेरी विधवा ! हरा देना उसको।

पैट्रू शियो : सौ यार्क की शर्त है। मेरी केटे उसको नीचे पटक देगी।

हौटैशियो : वही तो मेरा काम है।

पैट्रू शियो : अच्छा बड़े अफसर की तरह बोले। लो पियो।

[हौटैशियो को शराब देता है।]

बैण्टिस्टा : ग्रेमियो ! तुम्हें ये वाक्चतुर लोग कैसे लगते हैं ?

ग्रेमियो : सच मानिये श्रीमान् ! अच्छे सिर टकराते हैं ये एक दूसरे से।

बियांका : सिर लेकिन वाक्चातुर्य से उतावले लोग तो यही कहते कि तुम्हारा सिर और उससे टकराने का मतलब तो सिर और सींग हैं।

विसेंशियो : क्या इस सबसे दुल्हन की नींद टूट गई है ?

१. Mean : इस शब्द के दो अर्थ हैं—(१) नीच (२) मतलब होना। केटे इसका प्रयोग पहले अर्थ में करती है और विधवा दूसरे अर्थ में समझती है, इस तरह शब्द-चातुर्य का खेल-सा इस दृश्य के भीतर चलता है।

बियांका : लेकिन मुझे डराया नहीं है इस सबने, इसलिए मैं फिर सोऊँगी ।

पैट्रू शियो : नहीं, नहीं; अब आप नहीं सोयेंगी जब आपने शुरू ही कर दिया है तो । मैं आपकी ओर निशाना करके कहता हूँ कि एक दो अच्छे मजाक छिड़ जायें ।

बियांका : क्या मैं आपकी चिड़िया हूँ ? अच्छा तो मैं अपनी साड़ी बदल लेती हूँ और फिर आप अपनी कमान खींचकर मेरा पीछा कर लीजिये । आप सभी का स्वागत है । बस—

[बियांका, कंथरिना और विधवा का प्रस्थान]

पैट्रू शियो : श्रीमान् ट्रेनियो ! इसने तो मुझे सामने आने से पहले ही रोक लिया है । यह वही तो चिड़िया थी जिसकी तरफ आपने निशाना लगाया था और उसको पकड़ नहीं पाये थे, इसलिए मैं उन सबके स्वास्थ्य और सुख की शुभ कामना करता हूँ जो निशाना चूक गए हैं ।

ट्रेनियो : श्रीमान् ! ल्यूसेशियो ने तो मुझे अपने कुत्ते की तरह अलग हटा दिया जो भागता तो स्वयं है लेकिन शिकार करता है अपने मालिक के लिए ।

पैट्रू शियो : बड़ी अच्छी उपमा है, लेकिन है बेवकूफी की ।

ट्रेनियो : यह अच्छा हुआ श्रीमान् ! कि आपने स्वयं के लिए शिकार किया । यह सोचा जाता है कि आपकी हरिणी ने आपको उन शिकारी कुत्तों की आवाज सुनकर ही पकड़ लिया है ।

बैटिस्टा : पैट्रू शियो ! देखा, ट्रेनियो ने चोट कर दी है तुम पर अब ।

ल्यूसेशियो : ट्रेनियो ! उस करारे मजाक के लिए मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ ।

हौटेंशियो : मान लो अब तो । क्या उसने तुम पर चोट नहीं की है ?

पेट्रूशियो : मैं मानता हूँ, इसने थोड़ी चोट कर दी है और जैसे यह मजाक मुझसे दूर गया तो सच आप दोनों को तो इसने घायल कर दिया ।

पिटिस्टा : अच्छा बेटा पेट्रूशियो ! अब यह सब छोड़कर गम्भीरता से रहो । मेरे विचार से तुम्हारे पास तो सबसे विचित्र कर्कशा स्त्री है ।

पेट्रूशियो : जी नहीं । मैं इसको नहीं मानता । इसका पूरा विश्वास दिलाने के लिए मैं एक प्रस्ताव रखता हूँ—हममें से प्रत्येक अपनी-अपनी पत्नी को यहाँ बुलाये । जिसकी पत्नी सबसे अधिक आज्ञाकारिणी होगी और बुलाने के साथ ही सबसे पहले आकर उपस्थित हो जायेगी, उसको वही इनाम दिया जायेगा जो कुछ हम निश्चित कर दें ।

हौर्टेशियो : सुनिये, वह इनाम क्या होगा ?

न्यूसेंशियो : बीस क्राउन्स ।

पेट्रूशियो : बीस क्राउन्स । मैं अपने बाज या कुत्ते पर तो इतने की शर्त लगा भी लेता लेकिन पत्नी के ऊपर तो बीस गुनी रकम की शर्त लगा सकता हूँ ।

न्यूसेंशियो : अच्छा तो एक सौ क्राउन्स ।

हौर्टेशियो : ठीक है ।

पेट्रूशियो : ठीक है, यह मुकाबिला होगा ।

हौर्टेशियो : शुरू कौन करेगा ?

न्यूसेंशियो : वह तो मैं करूँगा । बाँइंडेलो ! जाओ, अपनी स्वामिनी से यहाँ आने के लिए कह दो ।

बाँइंडेलो ! जो आज्ञा ।

बैटिस्टा : बेटा ! मैं तुम्हारा आधा भागीदार हूँगा । बियांका अवश्य आ रही है ।

ल्यूसेंशियो : मैं कोई आधों का हिसाब नहीं रखूँगा । अपने आप ही मैं इसको बरदाश्त करूँगा ।

[बाँइंडेलो का प्रवेश]

क्यों, क्या समाचार है ?

बाँइंडेलो : श्रीमान् ! मेरी स्वामिनी ने आपके पास संदेश भिजवाया है कि वे इस समय व्यस्त हैं, अतः नहीं आ सकेंगी ।

पेट्रू शियो : क्या ? क्या वह व्यस्त है और नहीं आ सकेगी ? क्या यह उत्तर है ?

प्रेमियो : हाँ, और अच्छा उत्तर है । परमात्मा को धन्यवाद दीजिये श्रीमान् ! कि आपकी पत्नी ने आपके पास इससे खराब उत्तर नहीं भिजवाया ।

पेट्रू शियो : मैं तो इससे अच्छे की ही आशा करता हूँ ।

होर्टेंशियो : बाँइंडेलो ! जाओ और मेरी पत्नी से मेरी ओर से यहाँ आने के लिए प्रार्थना करना ।

[बाँइंडेलो का प्रस्थान]

पेट्रू शियो : अच्छा, उससे प्रार्थना की जायेगी तब वह यहाँ आने की आवश्यकता अनुभव करेगी ?

होर्टेंशियो : मुझे डर है श्रीमान् ! खैर आप करिये जो कुछ कर सकते हैं ।

[बाँइंडेलो का प्रवेश]

आपकी पत्नी तो प्रार्थना को भी नहीं मानेंगी । अच्छा, मेरी पत्नी कहाँ है ?

बाँइंडेलो : वे कहती हैं कि वे इस समय किसी अच्छे मजाक में लगी

हुई हैं, इसलिए नहीं आ सकेगी। आपको ही उन्होंने अपने पास बुलाया है।

पैट्रूशियो : इससे भी बुरा और क्या हो सकता है ? वह नहीं आयेगी।

ओह, कमीनी ! मैं बरदाश्त नहीं कर सकता इस बात को।

ग्रूमियो ! अपनी स्वामिनो के पास जाकर कहना कि मेरी आज्ञा है कि वह यहाँ मेरे पास आ जाये।

[ग्रूमियो का प्रस्थान]

हौटेंशियो : मैं जानता हूँ, वह क्या उत्तर देगी।

पैट्रूशियो : क्या ?

हौटेंशियो : वह नहीं आयेगी।

पैट्रूशियो : तो मेरा और भी अधिक दुर्भाग्य होगा। अरे, बस हो गया अन्त इस सबका।

[कैथरिना का प्रवेश]

बैण्टिस्टा : पवित्र मेरी की सौगन्ध ! अब तो कैथरिना आई है।

केटे : कहिये श्रीमान् ! क्या आज्ञा है ? आपने मुझे कैसे बुलाया है ?

पैट्रूशियो : तुम्हारी बहिन और हौटेंशियो की पत्नी वे दोनों कहाँ हैं ?

केटे : वे अपने कमरे में आग के पास बैठी बातें कर रही हैं।

पैट्रूशियो : जाओ बुलाकर ले आओ उन्हें यहाँ। अगर वे मना करें तो उन्हें पीटते हुए घसीटकर अपने पतियों के पास ले आना। बस अब शीघ्र जाओ यहाँ से और उनको सीधी पकड़कर यहाँ ले आओ।

[कैथरिना का प्रस्थान]

ल्यूसेंसियो : अगर आप किसी आश्चर्य की ही बातें करें तो सच आश्चर्य तो यहाँ है।

हौटेंशियो : हाँ, बिलकुल। मुझे तो आश्चर्य होता है कि यह किस

भविष्य की ओर संकेत करता है ।

पैट्रूशियो : यह शान्ति और प्रेम-पूर्ण जीवन की ओर संकेत करता है—
ऐसे शासन की ओर जिसमें प्रमुख और आयु में बड़े व्यक्ति को
उचित सम्मान प्राप्त होगा और छोटे को प्यार और सुख
मिलेगा ।

बैप्टिस्टा : अच्छा तो श्रेष्ठ पैट्रूशियो ! सफलता तुम्हारी है । तुम ही
इनाम के अधिकारी हो और जो उनकी हानि हुई है उसको पूरा
करने के लिए मैं अपनी दूसरी पुत्री के दहेज के रूप में बीस
हजार क्राउन्स और देता हूँ क्योंकि वह तो पहले से पूरी तरह
बदल गई है ।

पैट्रूशियो : मैं और भी अच्छी तरह से अपना इनाम जीतूंगा और
उसके नये गुणों तथा आज्ञा-पालन के और भी अच्छे प्रमाण
दूंगा ।

[केटे, बियांका तथा विधवा का प्रवेश]

देखिये, वह आ रही है और आपकी धृष्ट पत्नियों को अपने
स्त्रियोचित स्वभाव से बन्दी बना कर ला रही है ।

कैथरिना ! वह तुम्हारी टोपी तुम्हें अच्छी नहीं लगती है,
फैंक दो उसे और पैर से कुचल दो ।

विधवा : ओ परमात्मा ! जब तक मैं किसी ऐसी बेवकूफी की जगह
पर न आ जाऊँ तब तक तो मुझे कभी भी ऐसा मौका न देना
जिसके लिए मेरे दिल से आह निकले ।

बियांका : क्या तुम इसको बेवकूफी का फर्ज कहती हो ?

ल्यूसेशियो : मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा भी फर्ज उतना ही बेवकूफी
का होता । सुन्दरी बियांका ! तुम्हारे फर्ज की अक्लमंदी ने खाने
के वक्त से अब तक एक सौ क्राउन्स का नुकसान पहुँचा दिया है ।

बियांका : और भी बड़े बेवकूफ हो तुम जो मेरा फर्ज तय करते हो ।

पैट्रू शियो : कैथरिना ! मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि इन जिद्दी किस्म की औरतों को यह बता दो कि अपने पति और स्वामियों के प्रति उनका क्या फर्ज है ?

विधवा : चलो, चलो, आप तो मजाक करते हैं । हमें इसको सुनने की आवश्यकता नहीं ।

पैट्रू शियो : अच्छा, हाँ मैं कहता हूँ । पहले उसी से शुरूआत हो ।

विधवा : वह शुरूआत नहीं करेगी ।

पैट्रू शियो : मैं कहता हूँ वह करेगी और पहले उसी से शुरूआत करो ।

केटे : सबसे पहले तो उस क्रोध और कठोरता को निकाल दो जिससे तुम्हारी भौंहें बल खाया करती हैं और अपने स्वामी, शासक, और सम्राट् रूप पति के हृदय को आघात पहुँचाने के लिए कभी भी अपनी आखाँ में क्रोधावेश या उपहास लेकर उनकी ओर मत देखा करो । जैसे पाला गिरकर चरागाहों को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार यह क्रोधावेश और कठोरता तुम्हारे सौन्दर्य को नष्ट कर देती है । जिस प्रकार चक्करदार हवाएँ चलकर सुन्दर कलियों को गिरा देती हैं उसी प्रकार इससे तुम्हारा अच्छा नाम मिट जाता है । किसी भी दृष्टि में ऐसा करना अच्छा नहीं है । उत्तेजित स्त्री तो एक ऐसे सोते के समान होती है जिसका पानी शान्ति से नहीं बहता और जिसमें कीचड़ हो जाती है, उसका सारा सौन्दर्य नष्ट हो जाता है, बल्कि वह बहुत भद्दा और गन्दा लगने लगता है । उस पर अगर कोई प्यासा आदमी भी आता है तो वह भी उसकी एक भी बूंद छूना या उसका पानी पीना पसन्द नहीं करता ।

तुम्हारे पति तुम्हारे स्वामी हैं, तुम्हारे जीवन हैं और तुम्हारे

पालनकर्ता हैं, सभी प्रकार से तुम्हारे एकमात्र स्वामी हैं। वही तो तुम्हारे भरणपोषण की चिन्ता करते हैं। धरती और समुद्र दोनों जगहों पर तुम्हारे लिए कठोर परिश्रम करते हैं। रात तूफानों के बीच निकल जाती है तो दिनभर ठंड में रहते हैं जबकि तुम घर पर अच्छी तरह आराम से रहती हो। फिर इतना सब करते हुए भी तुम्हारे पति मांगते क्या हैं तुमसे ? यही तो, कि तुम उनसे प्रेम करो; उनको आज्ञा का पालन करो और सदा मधुर दृष्टि से उनकी तरफ देखो। इतने बड़े ऋण के लिए यह तो बहुत ही कम है जो वे तुमसे मांगते हैं। जो फर्ज एक प्रजा-जन का अपने राजा के प्रति होता है, वही एक स्त्री का अपने पति के प्रति होता है। जब वह कर्कशा, घृष्ट, कठोर और कुलटा हो जाती है और अपने पति की आज्ञा का पालन नहीं करती तो वह अपने प्रिय स्वामी के प्रति विश्वासघात और घृणित विद्रोह करती है। मुझे कहते हुए लज्जा आती है कि स्त्रियाँ इतनी भोली और सीधी होती हैं कि जहाँ शान्ति के लिए उन्हें झुकना चाहिये वहाँ वे झगड़ा खड़ा कर देंगी। सदा सेवा करना, आज्ञा पालन करना और पति को प्रेम करना ही उनका फर्ज है, लेकिन वे इसे छोड़कर स्वयं शासन करने की लालसा करती हैं। हमारे शरीर कोमल और नाजुक होते हैं, इसी कारण हम आपत्ति भेलकर कठिन परिश्रम नहीं कर सकतीं, लेकिन यह क्यों है ? जिससे कि हमारे हृदय की भावनाओं का हमारी बाह्य शारीरिक स्थिति से तादात्म्य स्थापित हो सके। सुनो ओ उत्तेजित स्वभाव की उत्पाती स्त्रियो ! मेरा भी दिमाग किसी वक्त इतना ही चढ़ा हुआ था जितना अब तुम्हारा है। दिल भी इतना ही मजबूत था और बात बनाना भी मुझे ज्यादा आता था, बात पर बात

कहती थी मैं । कोई मेरी तरफ गुराती था तो उल्टे उसकी तरफ गुराती थी मैं, लेकिन अब मैं देखती हूँ कि हमारे ये बच्चे तो केवल तिनके थे । हम तो अबला हैं, हमारी निस्सहाय अवस्था की तुलना तो किसी से भी नहीं की जा सकती । हम बनती बहुत हैं लेकिन वास्तव में कुछ नहीं हैं । इसीलिए मैं कहती हूँ कि अपना घमंड कम कर दो क्योंकि इससे कोई लाभ नहीं है और अब अपने पति के चरणों पर अपने हाथों को रख दो और कहो —हे स्वामी ! आज्ञा दीजिये, इन हाथों से हम जितनी सेवा आपकी कर सकती हैं, करेंगी ।

पेट्रूशियो : वाह ! क्या खूब औरत है । आओ केटे ! आकर मुझे चूम लो ।

ल्यूसेंसियो : अपने रास्ते चलो अब तो पेट्रूशियो ! अब तो वह तुम्हारे वश में है ।

विसेंसियो : यह तो उस समय अच्छा उपदेश है जब बच्चे इसको सीखने के लिए उत्सुक हों ।

ल्यूसेंसियो : लेकिन जब स्त्रियाँ कर्कशा हों तो उनके लिए बड़ा बुरा और कटु उपदेश है ।

पेट्रूशियो : आओ केटे ! चलो सोने चलें । हम तीनों की तो शादी हो चुकी है लेकिन तुम दोनों इस दौड़ में पिछड़ गए । यद्यपि तुमने सफेद की तरफ निशाना लगाया था लेकिन मैंने ही शर्त जीती और विजयी होने के नाते मैं भगवान् से तुम्हारे लिए

१. White : इसके दो अर्थ हैं । पहला तो है वह केन्द्र बिन्दु जिसकी ओर निशाना लगाया जाता है, दूसरे अर्थ में यह बियांका के लिए प्रयुक्त हुआ है । पेट्रूशियो सफेद कहकर बियांका की ओर संकेत करता है ।

प्रार्थना करता हूँ कि वह तुम्हें सुखपूर्ण रात्रि प्रदान करे ।

[पेट्रूशियो तथा केटे का प्रस्थान]

हौटेंशियो : अब तो अपने रास्ते चलो, तुमने एक कर्कशा और कुटिला तक को तो अपने वश में कर लिया है ।

ल्यूसेंशियो : बड़ा आश्चर्य है कि उसको इस तरह वश में कर लिया गया ।

[प्रस्थान]

